RNI-MPHIN/2005/14721
Malwa Div./244/2020-21
Desp. Date - 02 May 2020

अंक – 11 (मासिक) वर्ष – 15 मई 2020 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

नहीं होती जिंदगी लॉकडाउन

हारेगा कोरोना – जीतेगा भारत

युवा संगठन बना समाजबंधुओं का संकटमोचक

परमार्थ को नमन...
युवा संगठन द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प

बहुप्रतिक्षित
श्री माहेश्वरी मेलापक 2020
वैवाहिक डायरेक्ट्री प्रकाशित

Visit us
@ www.srimaheshwaritimes.com

देखें प्रति मंगलवार
SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

RR KĀBEL

MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME

DO THE
AKALMAND
THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका
श्री माहेश्वरी टाईम्स
RNI-MPHIN/2005/14721
अंक-11 मई 2020 वर्ष-15

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)

अतिथि सम्पादक
जयकिशन झंवर, बैंगलोर

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

- श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- PNB A/c. No. : 0459002100043471
  IFSC- PUNB0045900
- ICICI A/c. No. : 030005001198
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

विनम्र अनुरोध

वर्तमान में सम्पूर्ण देश ही नहीं बल्कि विश्व कोरोना की महामारी से जूझ रहा है। इससे बचाव के लिये सभी लॉकडाऊन का पालन करते हुऐ घर की चारदीवारी में रहने के लिये विवश हैं। श्री माहेश्वरी टाईम्स हमेशा ही समय पर आपको प्राप्त होती रही है, लेकिन इस बार 'मई अंक' परिस्थितिजन्य समस्याओं के कारण देर से प्रकाशित हो पाया, इसके लिये हमें खेद है। परिस्थितिवश व पाठकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इसका प्रकाशन प्रिंटेड रूप की बजाय 'ई- मैग्जिन' के रूप में ही हो रहा है। श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार अपने सम्मानीय पाठकों से इसमें होने वाली असुविधा के लिये क्षमा प्रार्थी है। साथ ही विनम्र अनुरोध है कि आप वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सहयोग प्रदान करेंगे।

विचार क्रान्ति

धर्म से बड़ा जीवन है

महाभारत के शांतिपर्व की कथा है कि त्रेता और द्वापर युग के सन्धिकाल में लगातार 12 वर्षों तक वर्षा न होने से अकाल पड़ गया। इंद्र ने वर्षा बन्द कर दी जिसने प्रलयकाल-सा उपस्थित कर दिया। तब बृहस्पति वक्री हो गए और चन्द्रमा विकृत होकर दक्षिण मार्ग पर चला गया। न कुंहासा था, न बादल रहे और न ही नदियों में जल शेष बचा। सरोवर, कूप, झरने सब श्रीहीन हो गए।

हालत यह हुई कि देवालय, मठ-मन्दिर आदि संस्थाएं उठ गई। बच्चे, बूढ़े, जवान अनेक जन मर गए। पशुओं की प्रजातियां नष्ट हो गई और भूखे लोग एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। यहाँ तक कि भूख से पीड़ित लोग एक-दूसरे को खाने पर आमादा हो चले।

आपद्धर्म पर्व की कथा कहती है ऐसे माहौल में एक दिन महर्षि विश्वामित्र प्राणियों का वध करने वाले हिंसक चांडालों की बस्ती में पहुँचे। महर्षि ने देखा कि बस्ती में कुत्तों को काटने वाले हथियार धरे थे और सूअरों व गधों की हड्डियां पड़ी हुई थी। महर्षि ने उस बस्ती में भीख मांगी लेकिन अन्न, फल, मूल तो क्या माँस तक न मिल सका। तब उन्होंने आपत्तिकाल में प्राणरक्षा के लिए एक चांडाल के घर से कुत्ते के माँस का एक टुकड़ा चुरा लिया। इस चेष्टा के दौरान संयोगवश झोपड़ी में सोया चांडाल जाग उठा और साक्षात महर्षि को अभक्ष्य वस्तु की चोरी करते देख स्तब्ध और दुःखी हो उठा। जब चांडाल ने महर्षि से इस कुकर्म का कारण पूछा तो विश्वामित्र ने कहा, 'भाई! मेरे प्राण शिथिल हो रहे हैं। मैं जानता हूँ कि यह अधर्म है मगर जीवन की रक्षा के लिए अब मेरे पास इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं रह गया है।'

चांडाल ने महर्षि के पैर पकड़ लिए और ऐसा निन्दित कर्म न करने की बार-बार प्रार्थना की। तब महर्षि विश्वामित्र ने अद्भुत वचन कहा। बोले-

येन येन विशेषेण कर्मणा येन केनचित्।
अभ्युज्जीवेत् साद्यमानः समर्थो धर्ममाचरेत्।।

अर्थात जो भूखों मर रहा हो, वह जिस जिस उपाय से अथवा जिस किसी भी कर्म से सम्भव हो, अपने जीवन की रक्षा करे। क्योंकि जीवन की रक्षा हो गई तो वह समर्थ होकर पुनः अपने मूल धर्म का आचरण कर सकता है।

कथा कहती है अंततः थक-हार कर चांडाल ने महर्षि को माँस ले जाने का अनुमोदन कर दिया। महर्षि ने उसे पकाया और ग्रहण करते उसके पहले ही जीवन रक्षा के उनके संकल्प से प्रभावित होकर इंद्र ने वर्षा की और अकाल की वह विभीषिका समाप्त हो गई। अपनी तप शक्ति से कुछ दिन महर्षि बगैर अभक्ष्य का भक्षण किये निराहार रहे और मात्र कुछ ही दिनों में संसार फिर पूर्ववत हराभरा हो गया।

साधो! सार यह है कि हर स्थिति में जीवन, धर्म से बहुत बड़ा है। धर्म जीवित व्यक्तियों द्वारा ही सुरक्षित रह सकता है। अतः हर हाल में धर्म से अधिक जीवन रक्षा को महत्व देना ही श्रेष्ठ जनों का लक्षण है।

-विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

जिन्दगी लॉकडाउन नहीं हो सकती

एक वायरस ने पूरे विश्व को बांध दिया, लाचार कर दिया। महाशक्तियां घुटने टेकने पर मजबूर हो गई। यह कैसे हुआ, क्यों हुआ, किसने किया, कौन दोषी और किसकी दोस्ती- दुश्मनी? यह सारे सवाल एक तरफ हैं और जिंदगी दूसरी तरफ। आर्थिक महाशक्ति टाटा कहते हैं, 2020 केवल जिंदगी बचाने के लिए है। नफा-नुकसान का न सोचें, जिंदगी बचाने में जुटे रहें। कल कारखाने बंद हैं, आवागमन बंद है, मंदिर-मस्जिद, चर्च बंद हैं। पर क्या जिंदगी को लॉकडाउन किया जा सकता है? जिंदगी के लिए समर्थ घरों में कैद हैं और असमर्थ जद्दोजहद में जुटे हैं। लाखों मजदूर सड़कों, रेल पटरियों पर भूखे-प्यासे अपने घर-गांव की ओर बढ़ रहे हैं, क्योंकि वे जहां थे, वहां उन्हें अब जिंदगी की आस नहीं रही। घरों में लोग जिंदा है लेकिन जिंदादिली नहीं रही। घर के बाहर निकले तो मौत पंजा पसारे बैठी है। न परिवार में एक दूसरे पर विश्वास किया जा सकता है और न पड़ोस और मोहल्ले के लोगों के बीच। अरबों की दौलत किसी काम नहीं आ रही। जिंदगी का यह ठहराव अब विभिषिका की तरह लगने लगा है। कल क्या होगा? कल की दुनियां कैसी होगी? यह अनुमान लगाना मुश्किल हो गया है। न सरकार के पास कोई जवाब है और न ही विज्ञान के पास कोई रास्ता।

ऐसे हालातों में वे स्तुत्य हैं, जो अपनी जिंदगी को खतरे में डाल कर दूसरों की जिंदगी बचाने में जुटे हैं। पुलिस, प्रशासन, स्वास्थ्य और अन्य विभागों के अधिकारी और कर्मचारी कोरोना से फाइट में आगे आकर अपनी सेवा दे रहे हैं। इस युद्ध में कई योद्धाओं ने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनका हौंसला और समर्पण निश्चित ही सैल्युट के लिए हमें प्रेरित करता है। इस कड़ी में वे लोग भी किसी योद्धा से कम नहीं जो उन लोगों की मदद करने का प्रयास कर रहे हैं, जिनके पास जिंदगी बचाने का कोई साधन ही नहीं है। जिनके लिए एक वक्त की रोटी मुहाल हो गई है, ऐसे लोगों तक भोजन, दवा पहुंचाने वाले समाजसेवियों को भी श्री माहेश्वरी टाइम्स सैल्यूट करता है। हालातों ने यह साबित कर दिया है कि भले हर तरफ मौत का तांडव है लेकिन जिंदगी की रवानगी को रोका नहीं जा सकता। जिंदगी लॉकडाउन नहीं हो सकती। जीने की जद्दोजहद हर स्तर पर होगी। इस जद्दोजहद की मुश्किलों को कम भी किया जा सकता है और इसका एक ही रास्ता है- वसुधैव कुटुंबकम्। हमारी संस्कृति का यह भाव आज पूरे विश्व में परिलक्षित हो रहा है। इस विपदा से निपटने के लिए एक तरफ जहां विश्व एकजुट हो रहा है, वहीं जिंदगी जीने के लिए सारे भेद और फासले मिटाए जा रहे हैं। बीच में चाहे सोशल डिस्टेंसिंग हैं लेकिन लेकिन लोग दिल से पास आए हैं। एक घर में रह कर भी मोबाइल की दुनियां में खोए रहने वाले परिजन फिर एक साथ बुनियाद और रामायण देख रहे हैं। जिन पड़ोसियों के बीच हफ्तों में बात होती थी वे रोज बॉलकनी से बतिया कर तनाव के बौझ से मन हल्का कर रहे हैं। वीडियो कॉलिंग पर रिश्तेदारी ज्यादा मधुर हो रही है। प्रदूषण और कोलाहल में जीने वाले रोज छत पर टहल कर साफ हवा और वातावरण की शांति को महसूस कर रहे हैं। घरों में चिड़िया और गिलहरी फिर बिंदास आने लगी है। मुझे तो लगता है, कोरोना नहीं था तब हम सब अपने बनाए लॉकडाउन में जिंदगी बिता रहे थे....।

यहां यह बात कहना भी जरूरी है कि मुश्किलों के इस दौर में अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष राजकुमार काल्या की पहल देश विदेश में सराही जा रही है। युवा संगठन ने देश के 3600 से ज्यादा ऐसे माहेश्वरी परिवारों को आर्थिक मदद पहुंचाई है, जिन्हे इसकी सख्त जरूरत थी। प्रत्येक के बैंक खाते में 1500 रुपए जमा कराए गए हैं। हालाकि ऐसी पहल महासभा से होने की उम्मीद की जा रही थी, जिसके पास असीमित संसाधन और अधिकार हैं। युवा संगठन की पहल को पूरा समाज सराह रहा है। इस पहल को देखते हुए स्थानीय स्तर पर भी समाज संगठनों ने समाजबंधुओं की मदद का सिलसिला शुरू कर दिया है। स्थानीय स्तर पर यदि किसी समाजबंधु को कोई परेशानी है, तो उसका निदान स्थानीय स्तर पर संगठन द्वारा किया जा रहा है।

इस संकट की घड़ी में हमारे बीच श्री माहेश्वरी टाईम्स के संरक्षक बाबूजी श्री बनवारी लाल जाजू नहीं रहे, आप महासभा के उप सभापति, 'माहेश्वरी' बोर्ड अध्यक्ष और अन्य कई पदों को सुशोभित कर चुके हैं। बाबूजी श्री जाजू जी का व्यक्तित्व और कृतित्व हमारे लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत रहेगा। उन्होंने जीवन भर समाज को आगे बढ़ाने में जो योगदान दिया वह अविस्मरणीय है। इसी कड़ी में वरिष्ठ समाजसेवी श्री लालचंद जी सोमानी (अहमदाबाद) एवं अ.भा. माहेश्वरी सेवासदन के उपाध्यक्ष श्री अमृतलाल मूंदड़ा जी भी हमारे बीच नहीं रहे। समाजसेवा के माध्यम से उन्होंने हमेशा प्रेरित किया। इसके लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। तीनों विभूतियों को श्री माहेश्वरी टाइम्स की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

कोरोना महामारी के लाकडाउन के चलते श्री माहेश्वरी टाईम्स का इस माह भी ई-कॉपी का प्रकाशन किया जा रहा है। हम हमारे सभी सुधी पाठकों को हुई इस असुविधा के लिए खेद है। सभी पाठकों से आग्रह है ई-कॉपी को स्वीकार करें। आपका सहयोग मिलेगा। धन्यवाद।

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

समाज में एक प्रबुद्ध चिंतक और सामाजिक समस्याओं पर मुखरता से अपनी लेखनी चलाने वाले बैंगलोर निवासी श्री जयकिशन झंवर की पहचान निःस्वार्थ समाजसेवी के रूप में है। श्री झंवर का जन्म 20 मार्च 1954 में कोलकाता के प्रतिष्ठित देशनोक (बीकानेर) के मूलनिवासी झंवर परिवार में स्व. श्री शिवरतन झंवर के यहां हुआ था। पिता को व्यावसायिक हानि होने के कारण श्री झंवर का बचपन अत्यंत आर्थिक अभावों में गुजरा, फिर भी तमाम संघर्षों के बावजूद बी.कॉम. ऑनर्स तक शिक्षा ग्रहण की। फिर वे प्रतिष्ठित कम्पनी 'हिन्द मोटर्स' में लम्बे समय तक महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत रहे। नौकरी से निवृत्त होने के बाद श्री झंवर का निवास बैंगलोर हो गया है। यहाँ वे धर्मपत्नी श्रीकांता के साथ अपने पुत्रों के पास निवासरत है। अब आपका जीवन पूर्णतः समाज को समर्पित हो चुका है। इसके अंतर्गत श्री झंवर इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी को वाईस पेट्रोन सेंट जोन्स एंबुलेंस एसोसिएशन को ऑनरेरी काउंसलर व कोलाकाता पुलिस में ट्रॉफिक वार्डन रहे। सिटीजन वोलंटरी फोर्स, एसोसिएशन ऑफ वोलंटरी ब्लड़ डोनर्स पश्चिम बंगाल तथा मानव अधिकार व ग्राहक अधिकार आदि से सम्बद्ध रहे। संस्थापक सदस्य के रूप में श्री गवरजा माता गांगुली लेन व श्रमजीवी मारवाड़ी संघ से सम्बद्ध रहे। श्री माहेश्वरी सभा-कोलकता, श्री माहेश्वरी सभा-बैंगलोर, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, माहेश्वर सेवा समिति, माहेश्वरी पुस्तकालय व माहेश्वरी न्यायालय से आजीवन सदस्य आदि के रूप में सम्बद्ध होकर अपनी सेवा देते रहे हैं।

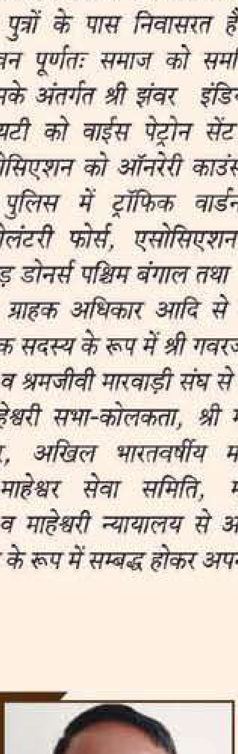

एक सबक भी है, 'कोरोना'

वर्तमान में न सिर्फ हमारा देश अपितु सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी की इस विनाशकारी पीढ़ा से गुजर रहा है। लाखों की संख्या में लोग इससे असमय काल के आगोश में समा गये हैं। यही कारण है कि सम्पूर्ण विश्व एकजूट होकर इससे निपटने में जुटा है। हर कोई यही आशा करता है कि निश्चय ही शीघ्र ही इस महामारी का कोई टीका और दवा निर्मित हो जाऐगा। कोरोना का आना एक ओर सबकी चिंता बढ़ा रहा है तो वहीं दूसरी ओर कुछ सबक भी सीखा रहा है। इसने इंसान के सारे गर्व और अहंकार की सीमाएं उजागर कर दी। इंसान बेबस होकर आध्यात्म के सामने नतमस्तक हो गया है। आज इंसान को इस विकट स्थिति से लड़ने की जो ताकत मिल रही है, वो सब वहीं से मिल रही है। इस छोटे से वायरस ने इंसान को उसकी हैसियत बहुत अच्छे से समझा दी। वाकई में देखा जाऐ तो यह महामारी हमारे लिये एक सबक बनकर भी आ रही है।

इसके सामने धन का अहंकार भी किसी काम का नहीं। वो लोग जिनकी जेब मे पैसा था, और जिनके लिये बाजार खुले थे, उनको लगता था कि उनको दुनिया में किसी और की क्या जरूरत है? लेकिन कोरोना ने बता दिया कि बाजार कभी भी बंद हो सकते हैं। उस समय धन हो तो भी किसी काम का नहीं है। आज फिक्र किसी ब्रांड की नहीं, फिक्र केवल जान बचाने की है। जो लोग अपनी लाखों-करोड़ों की गाड़ियों में बैठ कर इठलाते घूमते थे, वो गाड़ियां बेकार खड़ीं है। उनमे बैठ कर घर से निकलने में भी डर लगता है, फिक्र है तो केवल जान की। रिश्तों व पद का अहंकार भी नहीं टिका। इस दुनियां में लोग जिन रिश्तों के चलते दम्भ भरकर समाज मे गर्व से बतियाते थे, आज अगर वो ही रिश्तेदार घर आ जाए तो डर जाएंगे और घर को सैनिटाइज करने लगेंगे। रिश्ते एक दूसरे के सामने आने में डरने लगे हैं। इसी तरह जो लोग अपने छोटे या मोटे पद को लेकर पूरे जोश और अहंकार में गर्वीली चाल चलते थे। उनको लगता था कि उनकी इज़ाज़त के बिना पत्ता भी नही हिल सकता। उनके चेहरों पर भी छोटे से इस ना दिखाई देने वाले 'वायरस' का खौफ साफ साफ नज़र आ रहा है और चेहरा मास्क के पीछे छिपाने के बाद भी डर बाहर झलक रहा है।आज चाहे कोई कितना भी बड़ा बाहुबली, गैंगस्टर, पहलवान हो या बॉडी बिल्डर, इस वायरस से लड़ने या इसको चुनौती देने की औकात किसी की नहीं है। बचाव ही उपाय है, इसलिए घरों में अपनी पूरी ताकत सहित छिपे बैठे है।

वो विज्ञान जो अंतरिक्ष की गहराई को नाप कर लाखों मील दूर मंगल ग्रह पर मानव बस्ती बसाने को तैयार है, उसके पास इस मामूली वायरस का कोई जवाब नहीं है। वो विज्ञान जो लाखों साल बाद होने वाली खगोलीय घटनाओं की सटीक जानकारी दे सकता है, वो इस वायरस की जानकारी नहीं दे पाया। नासा हो या इसरो सब के सब इसके सामने हैं, बेबस। दुनिया के विकसित देश जो अपने मेडिकल और तकनीकी विकास पर मूँछे मरोड़ कर पूरी दुनिया में चौधराहट करते थे, घुटने टेक कर इस वायरस के आगे हाथ जोड़े खड़े हैं। सब विकास फैल हो गया है। सारी तकनीक का निचोड़ ये निकला कि अपने अपने घर में छुप जाओ, इलाज तो कोई है नहीं। इन सब में अगर कुछ नहीं बदला तो वो है, इंसान और भगवान का सम्बंध। इंसान बेबस होकर अंततः उन्हीं के सामने नतमस्तक हुआ है और लड़ने की जो ताकत मिल रही है, वो सब वहीं से मिल रही है।

वर्तमान के इस दौर में भारत के पास अपनी स्वर्णिम संस्कृति है, जिसके कोई ने कोई सूत्र में अवश्य ही इस महामारी जैसे कई वायरसों का भी समाधान छुपा होगा। अतः वर्तमान दौर में यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी संस्कृति की गौरव पताका भी सम्पूर्ण विश्व में फहराने का प्रयास करें। याद रखें ईश्वर पर विश्वास रखें, कर्म करते जाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। इस महामारी के कारण चल रहे लॉकडाऊन में जो समाजजन जरूरतमंद लोगों की मदद तन-मन-धन से कर रहे है, उन्हें नमन करते हुए मैं अपने आपके माहेश्वरी होने पर गर्व महसूस करता हूँ।

जयकिशन झंवर
अतिथि सम्पादक

श्री आशापुरा माताजी

श्री आशापुरा माताजी (आशापूर्णा) माहेश्वरी समाज की चांडक, तापड़िया, मोहता, भंडारी, भैया, मल एवं टावरी खांप की कुलदेवी हैं।

आशापुरा माताजी भव्य मंदिर पोकरण नगर से तीन किलोमीटर पश्चिम में पोकरण बायपास सड़क पर जिला जैसलमेर से तीन किलोमीटर दूर स्थित है। इसके इतिहास के बारे बताते हुए पुजारी श्री पुखराज बिस्सा ने बताया श्री माताजी गुजरात प्रांत के कच्छ-भुज क्षेत्र से पोकरण आई। बताते हैं बिस्सा कुल के महापुरुष श्री लुणमानजी बिस्सा माताजी के परम भक्त थे। वे अपनी योग साधना से नित्य माताजी के दर्शन करने के पश्चात भोजन ग्रहण करते थे। उनकी वृद्धावस्था होने पर उन्होंने माताजी से प्रार्थना की कि अब नित्य आना संभव नहीं है। अतः मेरा संकल्प अधूरा रह जाएगा। माताजी ने भक्त की पीड़ा समझकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर मांगने को कहा। बिस्साजी ने भाव-विभोर होकर कहा आप मेरे साथ मेरे गांव चलें। माताजी ने चलने का वचन दिया और बदले में एक वचन भी लिया कि आगे-आगे आप चलें मैं पीछे आ रही हूं जहाँ भी पीछे मुड़कर देख लोगे वहां से आगे नहीं चलूंगी। बिस्साजी आश्वस्त होकर माताजी को लेकर रवाना हुए। पोकरण के पास आते-आते उनको माताजी की पायल की झनकार सुनाई देना बंद हो गई तो उनका धैर्य जवाब दे गया उनको लगा माताजी शायद पीछे नहीं आ रही है और उन्होंने पीछे मुड़कर देख लिया। बस माताजी ने बिस्साजी से कहा मेरा स्थान यहीं रहेगा। (अगर भौगोलिक स्थिति पर गौर करें तो लगता है यहां धैर्य टूट सकता है।) मंदिर में अखंड ज्योत लंबे समय से जल रही है। यहां की व्यवस्था दान पेटी से प्राप्त राशि से होती है। मंदिर में आवास व्यवस्था के लिए बीस कमरे उपलब्ध हैं। सारी व्यवस्था बिस्तर बर्तन के साथ उपलब्ध है। इसी के साथ बीकानेर के लोगों द्वारा एक बड़ी धर्मशाला का निर्माण हुआ है जिसमें लगभग 50 कमरे हैं, जहां पर सभी सुविधा उपलब्ध है। दर्शनार्थियों के लिये शुद्ध सात्विक भोजन की सुविधा न्यूनतम दर पर है।

विशेष आयोजन

मंदिर में पूजन प्रतिदिन प्रातः 6 बजे एवं आरती प्रातः 8 बजे होती है। प्रातः की आरती का समय निश्चित है लेकिन सायंकाल की आरती सूर्यास्त के अनुसार होती है। सालभर में दोनों नवरात्रि पर दुर्गापाठ, हवन एवं भंडारा होता है जिसमें आसपास के लोगों यहां आते हैं।

कैसे पहुंचें आशापुरा माताजी

पोकरण शहर राजस्थान के जोधपुर से सड़क मार्ग से 170 किलोमीटर, जैसलमेर से 100 किमी, रामदेवरा से 20 किमी दूरी पर स्थित है। यहां से माताजी का मंदिर पोकरण शहर से बायपास सड़क पर स्थित है। आशापुर माता मंदिर आशापुरा गोमठ-जैसलमेर रेलवे लाइन से तीन किलोमीटर दूर स्थित है। मंदिर परिसर में टेलीफोन लगा हुआ है जिसका नंबर 02994-241147 है।

युवा संगठन समाजजनों का बना 'संकटमोचक'

कोरोना महामारी के कारण जारी लॉकडाऊन ने आर्थिक रूप से पिछड़ें हुए परिवारों को दिया सहारा

कोरोना महामारी के कारण देश में चल रहे लॉकडाऊन को लगभग 2 माह होने आये हैं। इन स्थितियों ने सभी काम-धंधे बंद होने से गरीब वर्ग के सामने अपने परिवार का पेट भरने का भी संकट खड़ा हो गया है। शासन ऐसे लोगों के लिये अपने स्तर पर योजनाएें चला रहा है, लेकिन फिर भी कई जरूरतमंद इन सुविधाओं से वंचित हैं और भारी परेशानी का सामना कर रहे हैं। ऐसे माहेश्वरी समाजजनों की मदद के लिये समाज का राष्ट्रीय संगठन अ. भा. माहेश्वरी युवा संगठन मदद के लिये आगे आया है। युवा संगठन समाज के सहयोग से 3600 से अधिक परिवारों को 1500 रूपये की सहायता प्रदान की है।

■ शंकर सोनी, भीलवाड़ा

कोरोना महामारी न सिर्फ हमारे देश अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिये एक बहुत बड़ी विपदा बन गई है। इसका वर्तमान में कोई अधिकृत उपचार न होने से इससे बचाव ही एकमात्र रास्ता बचा है। इसके लिये विश्व के अधिकांश देश लोगों की जीवन रक्षा के लिये भारी आर्थिक हानि होने के बावजूद अपने यहाँ लॉकडाऊन किये हुऐ हैं। इन देशों में हमारे देश में इस महामारी का संक्रमण तुलनात्मक रूप से कम होने के बावजूद जनहित में पूरे देश में सम्पूर्ण लॉकडाऊन किया गया है। विकसित देश भी आर्थिक नुकसान से बचने के लिये जनता के जीवन को दाव पर लगाकर सम्पूर्ण लॉकडाऊन से बचते रहे हैं, ऐसे में भारत जैसे विकासशील देश का यह प्रयास अपने - आपमें सम्पूर्ण विश्व के लिये सराहनीय बन चुका है। इसी का परिणाम है कि चाहे भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ी हो, लेकिन भारत में अभी भी यह महामारी नियंत्रण में ही है।

संकट में फंसे कई माहेश्वरी परिवार

वर्तमान में चल रहे इस राष्ट्रव्यापी लॉकडाऊन ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के सामने तो भीषण चुनौती ही खड़ी कर दी है। सभी प्रकार के काम - धंधे बंद होने से न सिर्फ उनका आर्थिक स्थिति कमजोर हुई है, बल्कि उनके सामने तो परिवार का पैट भरने की भी अत्यंत विकट चुनौती खड़ी हो गई है। सरकार इस स्थिति में समाज के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिये राहत योजनाऐं चलाकर उन्हें आर्थिक तथा खाद्यान्न व राशन आदि की सहायता प्रदान कर रही है। हमारा माहेश्वरी समाज एक गरिमामय समाज है। अतः कई समाजजन अपने स्वाभिमान के कारण इस प्रकार का लाभ लेने में हिचकिचाते हैं। इसी प्रकार कई समाजजन सिर्फ तात्कालिक रूप से ही अपने काम-धंधे के बंद होने से इस आर्थिक संकट में आये हैं। ऐसे लोग इस लॉकडाऊन में भारी परेशानी का सामना कर रहे हैं। उनके लिये भी चुनौती आर्थिक स्थिति को सम्भालना तो दूर अपने परिवार की उदरपूर्ति भी एक चुनौती बन गई। पीएम केयर फंड व अन्य ऐसे फंड में आर्थिक योगदान देने वाले तो कई थे, लेकिन ये बिल्कुल बेसहारा हो चुके थे।

युवा संगठन ने समझी इन जरूरतमंदों की परेशानी

युवा संगठन राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या व राष्ट्रीय महामंत्री आशीष जाखोटिया इस विपदा की घड़ी में हर संभव सहयोग करने हेतु तत्पर रहे हैं। संपूर्ण भारतवर्ष में अनेक स्थानों पर युवा संगठन एवं समाज बंधुओं द्वारा जरूरतमंदों की हर संभव सहायता की जा रही है। अतः अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन ने न सिर्फ समझा अपितु पूरी संवेदना के साथ महसूस भी किया। संगठन ने देखा कि माहेश्वरी समाज के अनेक परिवार इस लोकडाउन की स्थिति में काफी प्रभावित हुए हैं और वित्तीय संकट का सामना कर रहे हैं, तो ऐसे माहेश्वरी परिवारों की आर्थिक सहायता करने का राष्ट्रीय युवा संगठन ने बीड़ा उठा लिया। इसके लिये युवा संगठन ने समाज के सहयोग से एक राहत कोष का गठन किया और इसके माध्यम से ऐसे जरूरत मंद परिवारों को 1500 रूपये प्रति परिवार आर्थिक सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया गया। जैसे ही यह योजना तैयार हुई, इसे समाज ने भी भरपूर सहयोग प्रदान किया। इसका नतीजा यह है कि अभी तक 4000 से अधिक जरूरतमंद माहेश्वरी परिवारों ने इसके लिये आवेदन किया है और इनमें से 3600 से अधिक परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान कर राशि उनके बैंक खाते में संगठन द्वारा जमा की जा चुकी है और शेष आवेदकों की सहायता राशि भी शीघ्र ही जमा कर दी जाऐगी।

ऐसे प्रदान की गई सहायता

युवा संगठन द्वारा संचालित इस सहायता में ऐसे जरूरतमंद परिवारों के स्वाभिमान की रक्षा के लिये इनका नाम गुप्त रखा गया है और सहायता राशि सीधे उनके बैंक खाते में ही जमा की गई। यह सहायता एक परिवार में केवल एक को ही दी गई तथा शर्त रखी गई आवेदक के परिवार में कोई सरकारी सेवा में कार्यरत नहीं हो। जरूरतमंद परिवारों ने अपने आवेदन के साथ अपना आधार कार्ड की कॉपी व बैंक खाते का विवरण या कैंसल चेक की कॉपी प्रेषित की। आवेदक द्वारा दिये गये बैंक खाता में ही खाद्य सामग्री हेतु 1500 रुपए की राशि जमा कराई गई।

अन्य संगठनों के लिये भी बना प्रेरणा

अ. भा. माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा लॉकडाऊन के दौरान जरुरतमंदों के लिये जो यह सहायता योजना संचालित की जा रही है, इसकी सर्वत्र सराहना हो रही है। इसकी उपयोगिता और इसके महत्व को देखते हुए देश कई प्रदेश तथा जिला संगठनों ने भी अपने स्तर पर ऐसी ही योजना तैया कर जरूरतमंद समाजजनों के लिये सहायता भी प्रारम्भ कर दी है। इतना ही नहीं इसे जिसने भी जाना वह सराहे बिना न रह सका, जिसका नतीजा यह है कि इसकी सफलता को देखते हुए विभिन्न वैश्य व अन्य सामाजिक संगठनों ने भी इसी प्रकार की योजना तैयार की है।

'धन्यवाद सुपरस्टार-2020' के बाद हुआ 'मां तुझे प्रणाम'

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन एवं युवा संगठन ने किया ऑनलाईन रूप से संयुक्त आयोजन

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन एवं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा लॉकडाऊन अवधि में संयुक्त रूप से ऑनलाईन आयोजन जनजागृति के अन्तर्गत किये। इसके अन्तर्गत 'धन्यवाद सुपरस्टार-2020' से कोरोना योद्धाओं का आभार व्यक्त किया गया, तो 'मां तुझे प्रणाम' के अन्तर्गत 'मदर्स डे' पर स्नेह की प्रतिमूर्ति माँ को नमन किया गया।

इसमें कोरोना योद्धाओं कोरोना महामारी की आपदा की घड़ी में सरकार, पुलिस, प्रशासन, डॉक्टर, नर्स, सरकारी कर्मचारी, स्वयंसेवी संगठन, संस्थाओ एवं कोरोना योद्धाओं इत्यादि द्वारा विपरीत परिस्थितियों में भी अपने जीवन को जोखिम में डालकर प्राणी मात्र की रक्षा एवं जीवन के लिए निरंतर सराहनीय प्रयास किया जा रहा है। साथ ही विभिन्न दानदाताओं द्वारा प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं स्वयंसेवी संगठनों इत्यादि को सहयोग दिया जा रहा है। ऐसे देश भक्तों को समाज द्वारा धन्यवाद एवं शुभकामनाएं देकर इनका मनोबल और हौसला बढ़ाने के लिये 'धन्यवाद सुपरस्टार-2020' तथा 'मदर्स डे' पर 'माँ तूझे सलाम' का कार्यक्रम का राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माााहेश्वरी व राजकुमार काल्या तथा राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ व आशीष जाखोटिया के नैतृत्व में आयोजन किया गया।

कोरोना योद्धाओं के लिये गाये गीत

'धन्यवाद सुपरस्टार-2020' का आयोजन दोनों संगठनों द्वारा प्रभारी प्रमुख मंजू कोठारी व राष्ट्रीय प्रभारी

पर्व एवं सांस्कृतिक समिति- महिला संगठन पुष्पा सोमानी एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री एवं प्रभारी-युवा संगठन राजेश मंत्री के संयोजन में किया गया। इसमें समबंधित Facebook पेज Join कर लिंक पर देशभक्ति से ओतप्रोत या इन महानुभावों को धन्यवाद देते हुए या प्रकृति की इस आपदा की परिस्थिति पर या कोरोना पर इत्यादि सम्बंधित विषयों में से किसी एक या एक से अधिक विषयों को को समाविष्ट करते हुए अपने स्वयं द्वारा बनाए गए बोल को किसी भी हिंदी गाने के ट्रैक पर गाना गाते हुए का अधिकतम 3 मिनट का वीडियो अपना नाम, पता व मोबाइल नंबर लिखकर 5 मई 2020 तक भिजवाना था। इसमें 5000 से अधिक समाजजनों द्वारा वीडियो पोस्ट की गई। चयनित प्रतिभाओं की घोषणा महेश नवमी 31 मई 2020 को की जाएेगी। चयनित प्रतिभाओं को अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा गठित ट्रस्ट 'श्री बसन्तीलाल मनोरमा देवी काल्या अ.भा. माहेश्वरी युवा फाउंडेशन' द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अन्तर्गत प्रथम 11 हजार, द्वितीय 7100, तृतीय पुरस्कार 5100, चतुर्थ पुरस्कार-2100 तथा पंचम से दशम पुरस्कार-1100 रूपये प्रत्येक प्रदान किया जाऐगा। फेसबुक पर सबसे अधिक लाईक प्राप्त करने वाले गाने के प्रतिभागी को विशेष पुरस्कार-5100 रूपये से पुरस्कृत किया जाऐगा।

4 हजार से अधिक ने किया मां को प्रणाम

'मदर्स डे' पर आयोजित इस कार्यक्रम 'मां तुझे प्रणाम' का संयोजन राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री (पश्चिमांचल) एवं प्रभारी : सुरेंद्र रान्दड़ ने किया। इसमें 4000 से अधिक समाजजनों द्वारा इसमें सहभागिता की गई। इसके अन्तर्गत सम्बंधित फेसबुक पेज को Join कर अधिकतम 25 शब्दों में 'मां के प्रति अपनी मन की बात' अपने नाम, पता व शहर के नाम के साथ लिखकर 10 मई रात्रि 12:00 बजे तक पोस्ट करनी थी। 17 मई तक अधिकतम 'like' प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों (प्रथम तीन) को प्रोत्साहन हेतु युवा संगठन के ट्रस्ट 'श्री बसन्तीलाल मनोरमा देवी काल्या अ.भा. माहेश्वरी युवा फाउंडेशन' द्वारा क्रमशः प्रथम 5100, द्वितीय 3100 व तृतीय 2100 रूपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। साथ ही बेस्ट तीन कोटेशन को भी अलग से पुरस्कृत किया जाएगा।

गरीबों के मसीहा पुरूषोत्तम सोमाणी

निजामाबाद। कोरोना वायरस महामारी की इस संकट की घड़ी मेंलॉकडाउन के दौरान कोई भी व्यक्ति खाली पेट न सोए इस बात को ध्यान में रखते हुए निजामाबाद शहर के प्रमुख समाजसेवी पुरूषोत्तम सोमाणी आगे आए हैं।

मानव सेवा ही माधव सेवा के अनुरूप सोमाणी बीते 29 मार्च से शहर के गरीब जरूरतमंद लोगों की भूख मिटाने के लक्ष्य से जिस किसी भी व्यक्ति के पास सरकारी राशन कार्ड नहीं है और जिसे कोई सहायता नहीं मिल रही, ऐसे स्थानीय मजदूर व प्रवासी मजदूरों में 5 किलो चावल बैग का वितरण (सोमाणी के प्रतिष्ठान पर) कर रहे हैं। इसी प्रकार निजामाबादवासियों के राजनीतिक पार्टियों के पार्षदों व मेयर नीतू किरण द्वारा अपने-अपने डिवीजनों में 5 किलो चावल के बैगों का वितरण करवा रहे हैं। पुरूषोत्तम सोमाणी ने अधिक जानकारी देते हुए बताया कि अपनी शक्ति के अनुसार जितना हो सके, उतना संकट की घड़ी में जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए सदा आगे रहना मानव जाति का परम कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा कि ऐसे कठिन दौर में अपने आसपास रहने वाले सभी जरूरतमंदों की भूख मिट सके इस पर ध्यान देना अतिआवश्यक है। उन्होंने बताया कि जब किसी भी गरीब परिवार में कोई बीमार हो जाता है, तो दवाओं का खर्च उठा पाना आम व्यक्ति के बस का रोग नहीं होता और इससे पीड़ित तिल-तिलकर दम तोड़ देता है। उन्होंने दवाओं पर खुली लूट के खिलाफ एक ऐसा जन अभियान चलाया, जिसके सामने सरकार को भी झुकना पड़ा और यह बात उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक पहुंचायी। सोमाणी के प्रयत्नों से ही आज कैंसर की दवाईयों पर 90 प्रतिशत तक दाम कम हुए हैं। उनका दावा है कि 26 लाख इससे कैंसर से लाभान्वित हो रहे हैं। उनका अगला निशाना अन्य दवाओं के मूल्यों को भी नियंत्रित करने के लिए केंद्र सरकार पर दबाव बनाता है। आज राशन से ज्यादा दवाई का खर्च अधिक होने से गरीब मध्यम वर्ग परिवारों का जीवन मुश्किल हो गया है।

सोमाणी जनहित के मसीहा

पुरूषोत्तम सोमाणी जनहित के मुद्दों को लेकर न सिर्फ मुखर रहे, आवश्यकता पड़ने पर कई बार आंदोलन करने में भी कभी पीछे नहीं रहे। वर्ष 1999 में निजामाबाद चेंबर ऑफ कॉमर्स के संस्थापक अध्यक्ष के कार्यालय में नांदेड़ जिले के मुदखेड़ रेलवे स्टेशन से बोलाराम तक मीटरगेज से ब्रॉडगेज में परिवर्तन के मुद्दे को लेकर उनके नेतृत्व में बंद, रेल रोको आंदोलन तथा 8 दिवस आमरण भूख-हड़ताल का आयोजन किया गया। आंदोलन सफल हुआ और आखिरकार सरकार को गेज परिवर्तन करने हेतु 150 करोड़ की राशि योजना को स्वीकृति देनी ही पड़ी और मीटरगेट ब्रॉडगेज बनाने के साथ ही ब्रॉडगेज सोमाणी के नाम से आज भी प्रसिद्ध है।

पुण्यस्मरण में निशुल्क मोतियाबिंद शिविर संपन्न

उदयगिरी। स्व.अयोध्याबाई रामनारायण तोष्णीवाल इनके बारहवें पुण्यस्मरण पर तिथि 11 मार्च 2020 बुधवार के दिन जिंतुर स्थित संत गजानन महाराज मंदिर प्रांगण में मुफ्त मोतियाबिंद जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में राष्ट्रीय नेत्र यज्ञ (आरएनव्हाय) व्हीजन फाउंडेशन ऑफ इंडिया तथा उदयगिरी लायंस नेत्र रूग्णालय, उदगीर के संयोग से 140 नेत्ररूग्णों की जांच करके जिसमें से 77 नेत्ररूग्णों को मोतियाबिंद शल्यचिकित्सा हेतु पात्र ठहराया गया।

जिसमें से 47 रूग्णों को उदयगिरी भेजकरअन्य रूग्णों को दो दिन पश्चात भेजने की व्यवस्था की गई। रूग्णों के जाँच की जिम्मेदारी जिंतूर स्थित सामान्य रूग्णालय के नेत्र चिकित्सक डॉ. सरोदे साहब ने निभाई। यह कार्यक्रम भागवत कथा प्रवक्ते संदीपभाई शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के उदघाटक सामाजिक कार्यकर्ता एडवोकेट मनोज सारडा थे। व्यापारी महासंघ के अध्यक्ष रमेश दरगड, बालासाहेब बुधवंत, राम सोनी, सुभाषचंद्र शर्मा, एडवोकेट उमेश जोशी अतिथियों के रूप में उपस्थित थे। पिछले ग्यारह साल से ब्रिजगोपाल तोष्णीवाल जिंतूर शहर में स्व.अयोध्याबाई रामनारायण तोष्णीवाल चेरीटेबल ट्रस्ट के माध्यम से चला रहे हैं। अब तक 2600 नेत्ररूग्णों ने उसका लाभ उठाया है। मानव सेवा को ईश्वर सेवा समझकर और समाज के ऋण से उऋण होने हेतु ब्रिजगोपाल तोष्णीवाल यह यज्ञ चला रहे हैं। इस कार्यक्रम की यशस्वित के लिए संस्था सदस्य गोविंदप्रसाद तोष्णीवाल, सचिन तोष्णीवाल, पंकज तोष्णीवाल, रमण तोष्णीवाल, रमेश मूंदड़ा के साथ कनक पतसंस्था के व्यवस्थापक गजानन घुगे, राहुल घुगे, मस्के, तायडे ने भी विशेष परिश्रम किये।

मदद के लिये चलाई मुहिम

भीलवाड़ा। जिले के आगूचा ग्राम से राजेंद्र माहेश्वरी द्वारा व्हाट्सएप एवं सोशल मीडिया द्वारा इस विकट समय में जरूरतमंद लोगों की सेवा करने के उद्देश्य से अपील की गई। इसका प्रभाव यह रहा कि आगूचा ग्राम से लगभग सवा लाख रुपए से ज्यादा की आर्थिक मदद प्राप्त हुई इसमें अनेक ग्रामवासियो के साथ समाजजनो ने भी बढ़चढ़कर सहयोग किया। इनमें शंकरलाल माहेश्वरी, लवकुमार सोनी, स्नेहलता मुंदडा, सौम्या माहेश्वरी, कन्हैयालाल सोमानी, महेंद्र कुमार सोनी, अजय हैडा, रमेशचंद्र सोमानी, रितेश कालिया, रमेश सोनी सहित अनेक जनों ने सहयोग प्रदान किया। इससे पूर्व श्री माहेश्वरी मूक प्राणी सेवा व मानव सेवा के लिए भी अभियान चला चुके हैं।

बांटे हजारों भोजन पैकेट

जीरापुर। प्रतिष्ठित मूंदड़ा परिवार लॉकडाऊन की इस स्थिति में मानवता की सेवा में आगे आया। इसके अन्तर्गत दुर्गा कॉम्प्लेक्स के मालिक यतिराजदास मूंदड़ा जीरापुर जो कि समाजसेवी ओमपप्रकाश मूंदड़ा के अनुज है। अपने कर्मचारियों द्वारा 1 हजार पेकेट 20 दिन तक वितरित किए साथ ही वैंकटेश मंदिर में ओमप्रकाश मूंदड़ा द्वारा 1 से 2 किलो तक के 40 से 50 किलो चावल 20 दिन तक बांटे गए।

कोरोना से बचने के बताये उपाय

नालछा (धार)। धार जिले के आदिवासी ग्रामीण क्षेत्र में लोक सेवा केन्द्र ब्लॉक नालछा की संचालक रूपाली रवि माहेश्वरी द्वारा अपने केन्द्र पर इस महामारी से बचने के लिये आवश्यक उपाय ग्रामीणों को बताये गये। लोगों को फ्लेक्स के माध्यम से बचने की समझाईस दी, साथ ही कई जगह पर फ्लेक्स लगाकर जागरूकता उत्पन्न की गयी। केन्द्र के सभी कर्मचारियों को मास्क का उपयोग करने की समझाईश भी दी गई। साथ ही 22 मार्च को जनता कर्फ्यू में सहयोग करने की भी अपील की।

इंसान को इंसान धोखा नहीं देता है,
बल्कि वो उम्मीदें धोखा देती है
जो वो दूसरों से रखता है।

फागोत्सव का हुआ आयोजन

रायसेन (म.प्र.) माहेश्वरी महिला मंडल उदयपुरा जि.रायसेन म.प्र.द्वारा विगत 8 मार्च को फाग उत्सव तथा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इसमें ठाकुर जी की सुंदर झाँकी सज़ा कर फाग के गीत गाए गये और शीतल पेय वितरित किया गया। समाज की वरिष्ठ महिलाओं का शाल श्री फल भेंट कर सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर महिला मंडल की सदस्याओं के साथ ही समस्त पदाधिकारी उपस्थित थीं।

कभी-कभी एक लड़ाई हारकर आप
युद्ध जीतने का एक नया तरीका खोज लेते हैं।

डॉ. तापडिया को मध्यप्रदेश में डायमंड होमिओ अवार्ड

अमरावती। होम्योपैथी के प्रचार-प्रसार तथा उपचार के लिए अमरावती के द्वारा सम्मानित सुविख्यात होम्योतज्ञ डॉ.रामगोपाल तापडिया को मप्र के रेवा गांव में डायमंड होम्यो अवार्ड द्वारा सम्म्मानित किया गया। कुच्छ अती व्यस्तता के कारण वहां पर उपस्थित नहीं रह सका। फिर भी किरण सेवा संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अमी उत्कृष्ट होम्यो गौरव सेवा का पुरस्कार का प्रमाणपत्र एवं स्मृती चिन्ह सम्मान से भेजा यह बड़े गर्व प्रसन्नता की बात है। एक वक्ती को मिले पुरस्कार से हमारे साथ कार्य करने वाले को भी पुरस्कार प्राप्त हो सकते हैं। पुरस्कार मिलना चाहिए इसलिए मैंने काम नहीं किया। होम्योपैथीक चिकित्सा करना यह मेरा चिकित्सक बनने के बाद छंद है। हाल ही में महाराष्ट्र होम्योपैथी परिषद के सिफारस से महाराष्ट्र शासन द्वारा बंबई में विशेष कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. आयशा अली रजिस्टार मप्र होम्योपैथी कैंसिल डॉ.अभय मिश्रा संस्थाध्यक्ष एवं डॉ. जीपी पाटिल डायरेक्टर नेशनल कैंसिल इनके द्वारा अवार्ड भेजे गये।

माहेश्वरी समाज के चुनाव संपन्न

अमृतसर। प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के चुनाव अधिकारी की देखरेख में अमृतसर माहेश्वरी समाज के चुनाव निर्विरोध संपन्न हुए। इसमें अध्यक्ष पवन साहू, सहअध्यक्ष महेश झंवर, सचिव राजवर्धन बियानी, सहसचिव तनिष्क कोठारी व ललित बंग, कोषाध्यक्ष विमल साबू तथा संगठन मंत्री केदारदास बूब चुने गये। जानकारी राधेश्याम साबू ने दी।

तूफान में कश्तियाँ
और
अभिमान में हस्तियाँ डूब जाती हैं.

कलेक्टर की अपील पर डेढ़ सौ लोगों ने किया रक्तदान

माजलगांव। कलेक्टर की अपील पर स्थानीय माहेश्वरी तहसील सभा व व्यापारी महासंघ के विभिन्न 32 उप संगठनों और पत्रकार संगठन की ओर से 150 लोगों ने रक्तदान किया। कोरोना महामारी के चलते लॉक डाउन की घोषणा होने के बाद सभी लोग घरों में कैद है। सार्वजनिक कार्यक्रम पर पाबंदी लगने से रक्तदान शिविर के आयोजन नहीं हो रहे हैं। इस कारण रक्तपेढ़ी में रक्त की किल्लत महसूस हो रही है। आपात स्थिति में रक्त उपलब्ध हो, इसके लिए जिलाधिकारी ने रक्तदान करने की अपील की थी। तत्पश्चात चंद घंटों के भीतर 150 बैग रक्त संकलित हुआ है। शिविर में माहेश्वरी सभा के प्रतिनिधि विनोदकुमार जाजू, उमेश कुमार जेथलिया, प्रा कमलकिशोर लड्डा, व्यापारी महासंघ के प्रतिनिधि संजय इंदानी, गणेश लोहिया आदि का सराहनीय योगदान रहा। इस दौरान विधायक प्रकाश सोलंके, सभापति अशोक डक आदि विभिन्न संगठनों के प्रमुख मौजूद थे।

गणगौर पर्व पर कोरोना मुक्ति के लिए मनोकामना

संगमनेर। स्थानीय माहेश्वरी समाज की सभी महिलाओं ने गणगौर पर्व पर कोरोना मुक्ति के लिए मनोकामना की। उल्लेखनीय है कि गणगौर का व्रत सभी महिला के लिऐ अखंड सौभाग्य प्राप्ति का व्रत है। सौभाग्यवती महिलाएं अपने पति की लंबी उमर तथा खुशहाली हेतु और अविवाहित कन्याएं मनोवांछित जीवनसाथी पाने के लिऐ यह त्योहार बड़े ही धूमधाम से मनाती है। संगमनेर का गणगौर का जुलुस बहुत ही भव्य रहता है। लेकिन इस वर्ष कोरोना जैसे महामारी एवं संचार बंदी में सामाजिक दायित्व को स्वीकार करते हुए सभी महिलाओं ने गणगौर का पूजन अपने घर पर ही किया और अपने परिवार के साथ उत्सव मनाया। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी का समूल उन्मूलन हो और विश्व को बचाने की कामना भगवान शिव और पार्वती से समस्त महिलाओं ने घर-घर में की।

जबरदस्ती किश्त वसूली की शिकायत

इंदौर। खनिज निगम के पूर्व उपाध्यक्ष गोविन्द मालू नें एन बी एफ सी कम्पनियों द्वारा अपने कर्जदारों को वसूली के लिए परेशान करने की शिकायत केंद्र सरकार के वित्त मंत्रालय को की है। उन्होंने कहा कि यह आरबीआई और भारत सरकार के किश्त वसूली स्थगित किए जाने के आदेश का उल्लंघन है। श्री मालू ने कहा कि नान बैंकिंग फायनेंस कम्पनी के कई कर्जदारों जो नियमित भुगतान कर्ता रहे, लॉक डाउन के दौरान अपनी किश्त अदायगी में असमर्थ हैं। उन्हें कम्पनी के कर्मचारियों द्वारा फोन कर डराया धमकाया जा रहा है,और वसूली के लिए दबाव डाला जा रहा है। जो इस कोरोना आपात और संकटकालीन स्थिति में कतई उचित और न्यायसंगत नहीं है।

पाठशाला को खेलकूद सामग्री की भेंट

परकाल (वरंगल)। माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा सामाजिक सेवाओं को व्यापक तौर पर संपादित करने हेतु गठित माहेश्वरी महिला चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में वरंगल जिले के परकाल मंडल स्थित सरकारी जिला परिषद हाई स्कूल के विद्यार्थियों को चार कैरम बोर्ड, रिंग, थ्रोबॉल, चैस, स्किप्पिंग रोप आदि खेलकूद सामग्री भेंट की गई। माहेश्वरी महिला मंडल की मंत्री सरिता सोमाणी ने बताया कि इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष माधुरी लाहोटी आदि ने सम्बोधित करते हुए आशा व्यक्त की कि इससे इस पाठशाला के विद्यार्थियों को काफी मदद और प्रोत्साहन मिलेगा। इस अवसर पर परकाल जिला परिषद हाई स्कूल के अध्यापक और विद्यार्थी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में मीना लोया, नीतू बंग, सुमन मणियार, माधुरी डोडिया, जया लड्ड, सपना मालाणी, सविता सारडा, उषा बजाज, मंडल के पाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे।

'कोरोना' से जंग में समाज ने भी दिया बढ़ चढ़कर योगदान

न सिर्फ देश बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिये कोरोना महामारी एक भीषण विपदा बनकर सामने आयी है। इससे कई सम्पन्न देश पानी की तरह पैसा खर्च करके भी मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में हमारे देश भारत के लिये तो यह एक अत्यंत कठिन चुनौती ही थी। इस चुनौती की घड़ी में माहेश्वरी समाज ने भी देश व मानवता की सेवा में अपना योगदान देने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी।

सामूहिक रूप से दीप प्रज्जवलन

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की सभी सदस्याओं ने सपरिवार प्रधानमंत्री श्री मोदी के आह्वान पर गत 5 अप्रैल रविवार को रात्रि 9:00 बजे अत्यंत उत्साहपूर्वक घरों में दरवाजे पर बालकनी में खड़े होकर दीप प्रज्वलन, मोमबत्ती, टॉर्च, मोबाइल की फ्लैश लाइट आदि जलाकर प्रकाश की महाशक्ति से कोरोना के अंधकार को दूर करने का संकल्प लिया गया। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ ने बताया कि इस अद्भुत अलौकिक प्रकाश पर्व में सहभागिता करते हुए भारतीय संस्कृति के अनुरूप 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की भावना को सार्थक किया। इसके साथ सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए अपने सामूहिक प्रयासों से राष्ट्रीय एकता को चरितार्थ करते हुए महामारी के गंभीर संकट को हराने की मुहिम में सफलतापूर्वक योगदान दिया।

कोरोना में आर्थिक सहायता

भीलवाड़ा। कोराना महामारी के कारण समाज के अंतिम व्यक्ति को आर्थिक संकट का सामना नही करना पड़े व दैनिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके इस हेतु समाज के विभिन्न संगठनों द्वारा व्यवस्था की गई है। इसके अन्तर्गत भीलवाड़ा नगर में निवासरत पात्र परिवारों हेतु महेश मित्र मंडल शास्त्रीनगर द्वारा 2000 से 5000 रुपये की सहायता प्रति पात्र परिवार को दी गई। महेश मित्र मंडल शास्त्रीनगर के अध्यक्ष कंवरलाल पोरवाल एवं मंत्री सुशील मारोठिया ने बताया कि शहर के 51 परिवारों को 2 लाख से ज्यादा की सहायता प्रदान की गई।

इस कार्य के लिये प्रेरणा स्त्रोत पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राधेश्याम सोमानी, हरिनारायण मोदानी, शंकरलाल समदानी एवं बी.बी. गुप्ता रहे। इसी तरह महेश बचत एवं साख समिति द्वारा 5 हजार की सहायता पात्र परिवार एवं विधवा महिलाओं के लिए 5 हजार रुपए की आर्थिक सहायता की घोषणा की गई। दिनेश काबरा ने बताया कि 5 लाख की आर्थिक सहायता भी की जाएगी।

हाथ से तैयार किया जरूरतमंदों के लिये खाना

शाहपुरा (भीलवाड़ा)। जिले के शाहपुरा कस्बे से शहर से दिहाड़ी मजदूर पलायन करके अपने गावो की तरफ जा रहे थे। ऐसे लोगो के लिए खाने का प्रबंध शाहपुरा के गोविंद कुमार,अमृत,व रामचंद्र बिड़ला परिवार ने किया। महिलाओ ने घर पर अपने हाथों से पुड़िया व सब्जी बनाई तथा बच्चों ने खाने के पैकेट तैयार किए। बड़े सदस्यों ने बिजयनगर,केकड़ी,जहाजपुर व कोटड़ी मार्गो पर लगी चेक पोस्टो पर पुलिस की मदद से लगभग 650 से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किये।

कोरोना महामारी के दौर में जरूरतमंदों की मदद

भुसावल (जिला - जलगांव)। महाराष्ट्र प्रदेश सभा के नेतृत्व में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कोरोना महामारी के दौरान जरूरतमंदों को सहायता प्रदान की गई। भुसावल की समाजसेवी दक्षिणांचल बालसंस्कार किशोरी विकास सह प्रभारी संगीता बियाणी की ओर से 5 लाख रूपये की राशि का अन्न जरूरतमंदों को वितरित किया गया। औरंगाबाद में 26 हजार फुड पैकेट बनाकर जरूरतमंदों तक पहुंचाये गये। नासिक जिला सभा द्वारा 800 तेल पाऊच का वितरण किया गया। जलगांव जिला सभा द्वारा 750 परिवारों तक किराया सामान पहुंचाया गया। नासिक, बीड, परभणी मे रक्तदान के साथ ही दवाईयों का वितरण भी किया गया। सांगली, कोल्हापुर सिव्हिल हॉस्पीटल में भी सहयोग दिया गया। जालना, भाईदर, पुना, नासिक, नांदेड, धुलिया में भी आवश्यकतानुसार मदद की गई। सोलापुर जिला की बार्शी तहसील में एक लाख रूपये की धनराशि कॉर्पोरेशन में दी गई। साथ ही 100 क्विंटल गेहूं और 100 क्विंटल जुवार का वितरण किया गया। 3 लाख 51 हजार रूपये की सहयोग राशि पीएम केयर फंड हेतु राष्ट्रीय संगठन को भेजी गयी।

कोरोना त्रासदी में महिला संगठन मदद में आगे

कानपुर। सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से महायुद्ध ही कर रहा है। 135 करोड़ जनसंख्या वाले देश भारत के सामने कोरोना एक चुनौती है। डब्ल्यूएचओ (वर्ल्ड हेल्थ ऑरगेनाईजेशन) ने भी इसे महामारी घोषित कर दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने देशवासियों से मदद की अपील की। इसी को मद्देनजर रखते हुए अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष आशा माहेश्वरी एवं महामंत्री मंजू बांगड़ एवं समस्त पदाधिकारी गण ने यह निर्णय लिया कि हर प्रदेश से धनराशि एकत्रित कर प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा कराई जाएगी। इस श्रृंखला में राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती बांगड़ ने 11000 की सहयोग राशि दी। प्रदेश की अन्य सदस्याओं के सहयोग से लगभग 51000 रूपये की धनराशि एकत्रित की गई। यह कार्य ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति के अंतर्गत प्रभारी प्रेमा झंवर के नेतृत्व में किया गया। मध्य उत्तर प्रदेश द्वारा 51,000 रूपये की धन राशि प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा करवाई गई। कानपुर के उर्सला अस्पताल के डॉ. बी.के. सिंह के दिशा निर्देशन में 200 बोतल सेनिटाइजर, 6 किट एवं मास्क भेंट किये गये।

कोरोना से बचाव का रंगोली से दिया संदेश

संगमनेर। कोरोना विषाणू ने पूरे विश्व की नींद हराम कर दी है। ऐसे में कोरोना से बचाव का सर डी एम पेटिट विद्यालय के सेवानिवृत्त शिक्षक डी. बी. राठी (सर) अपनी रंगोली कला से समाज को संदेश दे रहे है। उनके द्वारा अलग अलग रंगोली से दिये संदेश को बहुतसे लोगोने सराहा है। उमर 80 साल फिर भी देश हित में कुछ करनेकीं चाह से वे रंगोली से संदेश देनेका कार्य वे कर रहे है। उल्लेखनीय है कि इतिहास संशोधन मंडल, संगमनेर के अनेक वर्षो से अध्यक्ष पद पर कार्यरत श्री राठी ने संगमनेर के इतिहास को लिखकर उसे अखबार में प्रकाशित करवाया। साथ ही संगमनेर में होनेवाले हर समाज के उत्सव को अपने कैमेरे में बंद करने का उन्हे बडा शौक है। उन सभी फोटो का महेश जेष्ठ नागरिक संघ के भी वे सक्रिय कार्यकर्ता है। उक्त जानकारी अजय जाजू ने दी।

व्यापारी एसोसिएशन ने दिया 1 हजार परिवारों को राशन

संगमनेर। स्थानीय व्यापारी एसोसिएशन की ओर से कोरोना महामारी के कारण बनी लॉकडाऊन की स्थिति में जरूरतमंद परिवारों को 15 दिन के राशन का वितरण किया गया। इसके अन्तर्गत 5 सदस्यीय परिवार के लिये इस 15 दिन के राशन मे 10 किलो आटा, 5 किलो चावल, 1 ली. तेल, 1 किलो मूंग दाल, 1 किलो तुअर दाल, हल्दी, मिर्च, नमक आदि सामग्री इसमें शामिल थी। एसोसिएशन अध्यक्ष नीलेश जाजू ने बताया कि संगमनेर शहर के करीब 1 हजार गरीब मजदूर परिवार तक यह सामग्री पहुंचायी गई। प्रांताधिकारी डॉ मंगरुळे, तहसीलदार अमोल निकम तथा नगरपालिका की नगराध्यक्षा दुर्गाताई तांबे, मुख्याधिकारी श्री बांगर व व्यापारी एसोसिएशन के पदाधिकारियों के करकमलो द्वारा इस कार्य का शुभारंभ किया गया। इस प्रोजेक्ट में असोसिएशन के समस्त सदस्यों ने आर्थिक सहयोग दिया। उपाध्यक्ष रमेश दिवटे, कोषाध्यक्ष जुगलकिशोर बाहेती, प्रकल्प सदस्य ओंकारनाथ भंडारी, श्रीगोपाळ पडतानी, शिरीष मुळे, प्रकाश कलंत्री, व्यवस्थापक अविनाश पुलाटे, सहायक सचिन पुलाटे, विनायक बुरा तथा नगरपालिका कर्मचारी आदि मान्यवर उपस्थित थे। लॉक डाऊन अवधि बढने के कारण अब 2 हजार 500 परिवारों को सहायता दी जायेगी।

कोरोना...तेरी खेर नहीं..

बीकानेर। संपूर्ण विश्व में तीव्र गति से फैल रही वैश्विक महामारी कोरोना का प्रभाव सभी आयु वर्ग के इंसानों को बहुत तेज गति से अपनी चपेट में ले रही हैं। ऐसी स्थित में इस महामारी के लिए अपनी स्वयं की सुरक्षा ही इससे बचाव उपाय मात्र है। समाज के प्रमुख व्यवसायी व बीकानेर माहेश्वरी समाज की पारिवारिक संस्था श्री प्रीतिक्लब के सचिव नारायणदास दम्माणी ने बताया कि जनजागृति के लिये उन्होंने अपने पोत्री 'इनाया' के प्रथम जन्मदिन पर उसे चिकित्सक के रूप में तैयार किया गया। जिसमें उसने अपनी डॉक्टरी वेशभूषा के माध्यम से वैश्विक महामारी कोरोना को चैलेंज किया गया है कि कोरोना - 'तेरी खेर नहीं' अर्थात् हम सब मिलकर इसको एक दिन अवश्य भगाने में सफल हो जाएंगे। यह नन्ही बालिका 'इनाया दम्माणी' राहुल दम्माणी- अंकिता की पुत्री है, जो मुम्बई निवासी है लेकिन लॉकडाउन से पूर्व बीकानेर में आ चुके थे।

कोरोना में की सहायता

जालौन (राज.)। समाजसेवी सुधीर डांगरा द्वारा अपने बड़े भाई सुशील डांगरा के साथ उप जिलाधिकारी जालौन सुनील शुक्ला एवं तहसीलदार जालौन बलराम गुप्ता को प्रधानमंत्री राहत कोष हेतु चेक एवं स्थानीय वितरण हेतु मटर दाल के वास्ते नगद राशि प्रदान की। इसके साथ ही इस विकट परिस्थिति में सेवा हेतु सभी पुलिसकर्मी, स्वास्थ्यकर्मी व सफाईकर्मियों का शुक्रिया अदा किया गया।

मानवता की सेवा में बढ़ाऐ हाथ

चित्तौड़। जिले के भिचोर कस्बे के मोहनलाल-अनिल कुमार सोमानी परिवार द्वारा कोरोना महामारी के कारण लॉकडाऊन से प्रभावित अनेक जरूरतमंद परिवारों को राशन सामग्री प्रदान की गई। इसके अन्तर्गत लगभग ८० जरूरतमंद परिवारों को 5 किलो आटा, 1 किलो चावल,1 किलो शक्कर, 1 किलो नमक, 1 किलो दाल, 500 ग्राम तेल, 200 ग्राम मिर्ची, 100 ग्राम धनिया, 100 ग्राम हल्दी की सहायता प्रदान की गई। इसके साथ ही सोमानी परिवार द्वारा अपने रेस्टोरेंट पर अपने घरों की ओर पलायन करने वाले हजारों लोगों को भोजन भी करवाया। चित्तौड़ जिले में आइसोलेशन वार्ड बनाने के लिए अपने रिसोर्ट में 16 बेड की व्यवस्था भी सोमानी परिवार द्वारा की गई।

आसावा ने बनाया कम खर्चे का सॅनिटायझेशन स्प्रे

संगमनेर। कोरोना महामारीके संकट पर पहला समाधान सॅनिटायझेशन है। इसके लिए कम से कम लागत से स्प्रे का निर्माण चणेगांव निवासी व महाराष्ट्र शासन से कृषिभूषण पुरस्कार से सन्मानित किसान, सामाजिक कार्यकर्ता तथा महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के संयुक्त मंत्री विठ्ठलदास आसावा ने किया है। इस बारेमे श्री आसावा ने बताया कि खेत में स्प्रे के लिए उपयोग में आनेवाले पंप को उपयोग में लाकर यह स्प्रे बनाया है। बिजली पर चार्ज करके बॅटरीसे चलाये जाने वाले पंप में 16 ली क्षमता का पंप उपयोग में लाया तो केवल रु. 2 हजार 500 तथा 20 ली के लिए रु 3 हजार 500 का खर्चा आता है, जो नोझल संख्या तथा पाईप की लंबाई के अनुसार बढ सकता है। इसे ऑटोमॅटिक बनाने के लिए अलग से रु 3 हजार का खर्चा होगा।

घर से दूर रहकर मानव सेवा

जयपुर। जहां महामारी के चलते देश व दुनिया के लोगों में अपने-अपने घर पहुंचने की होड़ लगी है। जिसके चलते पलायन भी एक बड़ी समस्या बनकर उभरी। ऐसे में बसौली थाना क्षेत्र के ग्राम ओवन के निवासी एक दंपत्ति ने घर से 200 किलोमीटर दूर जयपुर में रहकर इस महामारी के समय में अपने घर के लिए पलायन करने की जगह आसपास रहने वाले जरूरतमंद लोगों की सहायता करने का बीड़ा उठाया। कैलाश माहेश्वरी के पुत्र विक्रम व उनके पुत्रवधु सोनू बीते 10 दिन से अपने चिरपरिचितों के सहयोग से हर रोज करीब 400 भोजन के पैकेट बनाकर जरूरतमंदों को उनके क्षेत्र में जाकर उपलब्ध करवाने में जुटे हुए हैं।

मूंदड़ा परिवार ने दी खाद्य सामग्री

भीलवाड़ा। जिले के भादू गांव में रामनारायण, त्रिदेव, राकेश व जितेंद्र मुंदडा द्वारा कोरोना के संक्रमण के कारण असहाय व्यक्तियों पर जो मार पड़ी उन लोगों के लिए खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। इसमें 1 किलो नमक, 5 किलो आटा, 500 ग्राम दाल, 200 ग्राम मिर्च, 100 ग्राम हल्दी व 500 ग्राम तेल प्रदान किया गया।

मालपाणी परिवार ने दिया सवा करोड़ का योगदान

संगमनेर। मालपाणी उद्योग समूह ने कोरोना महामारी से लड़ाई के लिए 1 करोड 25 लाख रूपये का योगदान दिया है। शिक्षा, धार्मिक, सामाजिक कार्य हेतु संगमनेर शहर के साथ भारतभर के विविध संस्थाओं तथा जरूरतमंद परिवारों को आर्थिक सहयोग देनेवाला मालपाणी परिवार कोरोना के लढाई में भी पिछे नही। इसके अन्तर्गत प्रधानमंत्री कोष के लिए 50 लाख व मुख्यमंत्री कोष के लिए 50 लाख, ऐसे कुल रु 1 करोड़ रूपये के चेक मालपाणी उद्योग समूह के संचालक राजेश मालपाणी और मनीष मालपाणी के करकमलो द्वारा प्रांताधिकारी डॉ. शशिकांत मंगरुळे को सुपूर्द किए गए। इसके साथही जनकल्याण समिति को 11 लाख, संगमनेर सहायता निधि को 5 लाख, ग्रामीण रुग्णालय सुरक्षा साधन को 5 लाख, लायन्स क्लब सफायर की निःशुल्क भोजन सेवा हेतू 2 लाख, ग्रामीण रुग्णालय संगमनेर को 1 लाख तथा सॅनिटायजर हेतू 1 लाख रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।

स्वनिर्मित मास्क का वितरण

भीलवाड़ा। जिले के भोजरास ग्राम में भाजपा की कर्मठ कार्यकर्ता व समाजसेवी रेखा अजमेरा द्वारा स्वयं द्वारा निर्मित 1000 मास्क तैयार करके कोरोना महामारी के बचाव हेतु ग्रामीणों को वितरित किए गए। इस कार्य में पति अशोक अजमेरा सहित पुत्र व पुत्री का सहयोग भी प्राप्त हुआ।

पांच लाख रुपए का चेक सौंपा

रूपनगढ़। कंपनी स्काइज स्टोन प्रा.लि. ने पांच लाख रुपए का चेक प्रधानमंत्री सहायता कोष में जमा कराया। उपखण्ड अधिकारी भंवरलाल जनागल को स्काइज के निदेशक मुकेश कुमार मोदानी, राकेश मोदानी, राजेश मोदानी, अंकित मोदानी, अक्षय मोदानी ने यह चेक सौंपा।

पीएम केयर फण्ड में दी सहायता राशि

दुर्ग (छ.ग.)। विश्वव्यापी महामारी नोवेल कोरोना वायरस कोविड-19 के राहत फण्ड में दुर्ग जिला माहेश्वरी सभा के विभिन्न संगठनों ने भी अपनी सहयोग राशि दी । इसके अन्तर्गत श्री माहेश्वरी पंचायत दुर्ग ने 1,11,000 रुपये का चेक जिला प्रशासन के कोविड 19 राहत फण्ड में नगर निगम के माध्यम से दिया। वहीं माहेश्वरी सभा भिलाई ने 1,51,000 रुपये छ ग प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के माध्यम से प्रदान किया । श्री माहेश्वरी पंचायत साजा ने 31,000 रुपये की राशि स्थानीय एस डी एम को सौपी।

कौन बनेगा लॉक डाउन सुपरस्टार

जोधपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन की पर्व एवं सांस्कृतिक समिति की संयोजिका सुनीता हेड़ा और सह संयोजिका प्रेरणा राठी के संयोजन में 'कौन बनेगा लॉक डाउन ऑनलाइन सुपरस्टार' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अध्यक्ष शिवकन्या धूत तथा ऊषा बंग ने बताया कि प्रतियोगिता बहुत ही सफल रही। इसमें नृत्य, गायन, वादन की प्रतियोगिता आयु के मापदंड पर तीन समूह मे विभाजित की गयी। संयोजिका सुनीता हेड़ा ने बताया कि इस कार्यक्रम द्वारा माहेश्वरी मातृ शक्ति की प्रतिभा निखर कर सामने आई। वादन में स्वाति जैसलमेरिया और दिव्या लड्ढा तथा गायन में सोनाक्षी मुथा, नव्या सोडाणी, साक्षी राठी, अंकिता बंग, सीमा जाजू, दीपा खेतावत और अर्चना बिड़ला ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी। नृत्य कला में चारवी माहेश्वरी, रितिका माहेश्वरी, रिचा भूतड़ा, खुशी तापड़िया, हर्षिता माहेश्वरी और पूजा धूत विजेता रहीं।

मानवता की सेवा में दिया योगदान

हुरडा। भीलवाड़ा जिले के हुरडा ग्राम में स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा कोरोना महामारी की आपदा पर समस्त हुरडा तहसील क्षेत्र में निवासरत जरूरतमंद सभी परिवारों के लिए खाद्य सामग्री जिसमें आटा, दाल, चाय, शक्कर, तेल, बिस्किट, आलू व मसालों का वितरण महेश भवन हुरडा से किया गया। इसके साथ ही कुछ जरूरतमंद माहेश्वरी परिवारों को आर्थिक सहायता भी प्रदान की गई। अध्यक्ष राजेंद्र बजाज व नवीन कार्यकारिणी एवं समाजजनों द्वारा दी गई इस सेवा में फोटोग्राफी को पूर्ण रूप से प्रतिबंध किया गया। यह सेवा निरंतर चल रही है। क्षेत्र के अनेक प्रशासनिक व गणमान्यजनों ने भी इस सेवा का अवलोकन किया व हुरडा माहेश्वरी समाज की प्रशंसा की।

**अपनी तुलना दूसरों से मत करो,
हर फल का स्वाद अलग होता है!!**

वन्य जीवों के लिये की खाना पानी की व्यवस्था

सिरोही (राजस्थान)। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस की चेन तोड़ने के लिए देश भर में लॉकडाउन है इस मुहिम में सभी अपना योगदान दे रहे हैं। वर्तमान में यह जिला भीषण गर्मी एवं अकाल से भी ग्रस्त है, जिस कारण वन्य प्राणी पानी की तलाश में प्यास बुझाने के लिए आसपास ग्रामीण क्षेत्रों में क्षेत्रों में आने से दुर्घटना मे अपनी जान गवा बैठते हैं। ऐसी परिस्थिति में संस्था पीपल फॉर एनीमल द्वारा स्थानीय भामाशाहों के योगदान से प्रतिवर्षानुसार 3 महीनजब तक बारिश नहीं आए तब तक पानी के टैंकरों के माध्यम से वन्य क्षेत्रों में बने अवाड़ा, एनीकट एवं छोटे तालाबों में पेयजल सुविधा प्रदान की जाऐगी। उक्त जानकारी संस्था सचिव अमित दियोल ने दी।

मदद के लिये खोली तिजोरियाँ

भीलवाड़ा। विश्वव्यापी कोरोना संक्रमण के चलते केंद्र व राज्य सरकार द्वारा बनाए गए रिलीफ फंड एवं स्थानीय प्रशासन के फंड में माहेश्वरी समाज के भामाशाहों ने मुक्त हस्त से यथासंभव आर्थिक सहयोग दिया है। विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार इसमें 3100000 रुपये रतन लाल नौलखा (नितिन स्पिनर्स), 2500000 रुपये रामपाल सोनी (संगम इंडिया लिमिटेड), 2500000 रुपये लादूराम बांगड़ (कंचन इंडिया लिमिटेड), 1121000 रुपए राधाकिशन सोमानी (सेवलोन शुलझ प्राइवेट लिमिटेड), 501101 रुपए जगदीश प्रसाद सोमानी, 500000 रुपये शिव सोडानी, 500000 रुपये दुर्गेश बांगड, 400000 रुपये जे. सी. लढ़ा, 250000 रुपये नंदलाल ओमप्रकाश नराणीवाल (चारभुजा इस्पात), 150000 रुपये राजेंद्र पलोड, 111000, श्याम लाल डाड, 111000 रुपये चांदमल सोमानी, 105000 रुपये अशोक बाहेती, 101111 रुपये संजय कॉलोनी माहेश्वरी समाज संस्थान, 100000 रुपये बसंतीलाल राजकुमार कालिया, 100000 रुपये रतनलाल आदित्य मालीवाल, 100000 रुपये शंकर लाल रामपाल ईनाणी, 100000 रुपये अनिल नुवाल, 61000 रुपये विजय सिंह पथिक नगर माहेश्वरी समाज, 51000 कैलाश चंद्र कोठारी, 51000 रुपये कैलाश मुंदड़ा, 51000 रुपये जिला माहेश्वरी युवा संगठन, 51000 रुपए माहेश्वरी समाज शाहपुरा, 31000 रुपये कृष्णगोपाल तोषनीवाल, 21000 रुपये भेरूलाल काबरा, 11000 रुपये सत्यनारायण डाड, 21000 रुपये हरिनारायण मोदानी, 11000 रुपये सुशील मरोठिया, 11000 रुपये राजेश लड्ढा, 11000 रुपये सुनील सोडाणी, 11000 रुपये संजय हुरकट तथा 11000 रुपये का योगदान फतेह लाल जैथलिया आदि ने दिया है। 11000 रुपये से सहयोग राशि देने वाले तो अनगिनत समाजजन थे।

न्यूयॉर्क में बाघिन के कोरोना पॉजिटिव होने की घटना से सतर्क हो भारत

भीलवाड़ा। अमेरिका के न्यूयॉर्क के चिड़ियाघर में एक बाघिन को कोरोना इंफेक्शन पॉजिटिव पाए जाने की घटना चौंका देने वाली है, जिसे लेकर पीपल फॉर एनिमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने देश के प्रधानमंत्री एवं टाइगर प्रोजेक्ट के चेयरमैन नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर ईमेल से प्रेषित कर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि देश के 50 टाइगर रिजर्व में हजारों बाघों को खतरा हो सकता है, जिससे सतर्क होते हुए जंतुआलयों व चिड़ियाघरो में कार्यरत अधिकारियों, वनकर्मियों व चिकित्सकों का आवश्यक रूप से कोरोना टेस्ट हो, व नेगेटिव व्यक्ति ही बाघों को छुए। जाजू ने कहा कि पूर्व में कई देशों में वायरस के संक्रमण से अनेक बाघों व अन्य वन्यजीवों की मौत हो चुकी है। गौरतलब है कि भारत मे आज़ादी के समय 40 हजार बाघ थे जो हजारो करोड़ रुपया खर्च करने के बाद सरकारी आँकड़ो के अनुसार घटकर 2500 के लगभग रह गए है, इसलिए समय रहते पुख्ता इंतजाम किए जाए ताकि बाघों को बचाया जा सके। यह भी उल्लेखनीय है कि चीन बाघो के अंगों का सबसे बड़ा खरीददार देश है और कोरोना वायरस का केंद्र भी चीन ही है।

राशन सामग्री का किया वितरण

भीलवाड़ा। कोरोना संक्रमण के चलते आर्थिक रूप से कमजोर जरूरतमंद महेश्वरी परिवारों के सहयोग हेतु शास्त्रीनगर माहेश्वरी सभा द्वारा 10 से 15 दिन की खाद्य सामग्री वितरित की गई। इसमें आटा, चावल, दाल, तेल, नमक, शक्कर, चायपत्ती, आलू, प्याज, मसाले सहित डेटॉल साबुन के साथ किट बनाया गया। इस कार्य में संजय जागेटिया, राजेंद्र तोषनीवाल, प्रहलाद मंडोवरा, रमेश अजमेरा, सुनील बियानी, देवकरण तोतला, सुनील अजमेरा, रमेश बंग, कैलाश लड्ढा, शीतल सोढानी, मनोज जागेटिया, किशन पोरवाल,अखिलेश लाहोटी, पंकज चेचानी सहित अनेक समाजजनों ने सहयोग प्रदान किया।

राशन सामग्री की भेंट

भीलवाड़ा। इस जिले से संबंधित संस्था मेवाड़ माहेश्वरी मंडल मुंबई के पदाधिकारी राजकुमार जागेटिया, राजेश मुंदडा, लादूलाल सोनी आदि के सहयोग से भीलवाड़ा शहर के लगभग 400 जरूरतमंद परिवारों को 10 से 15 दिन तक की राशन सामग्री उपलब्ध करवाने हेतु सहयोग प्रदान किया गया। समाजसेवी अमित काबरा ने बताया कि इसमें आटा, दाल, मसाले व अचार के अलग-अलग पैकेट बनवा कर किट तैयार करके सेवा भारती एवं सुमंगल सेवा संस्थान के माध्यम से जरूरतमन्दों को वितरण किया गया।

राठी की अन्नपूर्णा सेवा अनवरत जारी

भीलवाडा। समाजसेवी गोपाल राठी द्वारा अपने पिताजी गौलोकवासी चंदनमल राठी के नाम से दी गई भूमि पर चंदन भवन के नाम से विख्यात श्री माहेश्वरी परमार्थ सेवा समिति पुष्कर में श्री राठी की अध्यक्षता में 22 साल से अन्नपूर्णा सेवा अनवरत चल रही है। कोरोना महामारी के इस संकट के समय भी विशेष सेवा में सुबह व शाम नियमित रूप से लगभग 700 पैकेट जरूरतमन्दों, संतो व असहाय व्यक्तियों को वितरण किये जा रहे है।

प्रतियोगिता के रूप में मनाया हनुमान जन्मोत्सव

संगमनेर। महामारी कोरोना के कारण वर्तमान में पूरे विश्व में लॉकडाऊन है। जिसके कारण घर से बाहर निकलना मुश्किल है, तो फिर प्रतियोगीता का आयोजन तो बहुत दूर की बात है। ऐसी स्थिति में प्रदेश सभा की बाल संस्कार समिति द्वारा लॉकडाऊन के निर्देशों का पालन करते हुए अनोखे ढंग से प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इसी के अन्तर्गत हनुमान जन्मोत्सव पर प्रदेश बाल संस्कार समिति ने अहमदनगर जिला माहेश्वरी सभा के संयुक्त तत्वावधान में हनुमानजी का जन्मोत्सव सपरिवार घर पर मनाने हेतु प्रतीयोगिता का आयोजन किया। जिले से 17 परिवार प्रत्याशी के रूप में इस प्रतियोगिता में शामिल हुए। महाराष्ट्र प्रदेश सभा बाल संस्कार समिति के अध्यक्ष गणेशलाल बाहेता व संयोजिका रेखा मुंदडा ने गीता परिवार के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी के मार्गदर्शन तथा प्रदेशाध्यक्ष श्रीकिसन भन्साली, महिलाध्यक्षा अनुसूया मालू तथा युवा प्रदेशाध्यक्ष हार्दिक सारडा के सहयोग से इस अनुठी प्रतियोगीता का आयोजन किया।

लॉकडाऊन में पीड़ित मानवता की सेवा

माहेश्वरी समाज कोरोना महामारी के कारण बनी लॉकडाऊन की स्थिति में जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाई। इसमें गिरीश मालपाणी, श्रीनिवास भंडारी, राहुल बाहेती, उमेश कासट ने लायन्स क्लब सफायर के माध्यम से हर रोज सुबह-शाम मिलाकर 1 हजार 200 टिफिन का तथा 200 परिवार को राशन का निःशुल्क वितरण किया गया। सीनियर महिला मंडल द्वारा घर मे काम करनेवाली महिलाओं को अनाज का वितरण किया गया। इसी प्रकार मालपाणी उद्योग समूह द्वारा नगद 5 लाख का सहयोग सी. एम. फंड में दिया गया। युवा महेश ने जरूरतमंद परिवारों को अनाज और मेडिसिन का वितरण किया। साथही समाज की ओरसे भी अन्नदान, अनाज तथा मेडिसिन का निःशुल्क वितरण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री सहायता कोष में दिये 51 लाख

जयपुर (राज.)। प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कोरोना महामारी से उत्पन्न हुई विकट स्थिति में राहत कार्यों के संचालन के लिये विभिन्न सामाजिक संगठनों से आर्थिक सहयोग की अपील की गई है। इसके अन्तर्गत माहेश्वरी समाज की शिक्षा समिति तथा समाज द्वारा संचालित विभिन्न स्कूलों के अध्यापकों द्वारा अपने एक दिन के वेतन सहित 51 लाख रूपये की सहायता राशि मुख्यमंत्री सहायता कोष में प्रदान की गई है। समाज अध्यक्ष प्रदीप बाहेती ने इस राशि का चेक मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को भेंट किया। इस अवसर पर शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष रमेशचंद्र सोमानी, महासचिव नटवरलाल अजमेरा व माहेश्वरी समाज के महामंत्री गोपाललाल मालपानी आदि उपस्थित थे।

मार्गदर्शन सहीं हो तो दिए का प्रकाश भी सूरज का काम कर जाता है...!!

मृतक संस्कार को बनाया महासेवा

संगमनेर। समाज के लिए भी कुछ करने के उद्देश्य से समाजसेवी अशोक भुतडा गत 40 वर्षों से 'मृतक संस्कार' का अनोखा कार्य कर रहे है। ऐसे कार्य की जिम्मेदारी सन 1985 तक समाजसेवी सोमनाथ कलंत्री ने निभा रहे थे। श्री भुतड़ा उन्हें सहयोग देते थे। सन् 1986 में श्री कलंत्री का स्वर्गवास होने के बाद 'मृतक संस्कार' कार्य की जिम्मेदारी अशोकजी ने उठाई। वे माहेश्वरी समाज के लिए तो कार्य करते ही है, इसके अलावा अन्य जाति-धर्म के परिवार के लिए भी यह सेवा कार्य करते है। ऐसी दुःखद घटना होने पर स्वयं का कितना भी जरुरी काम हो, वह पहले 'मृतक संस्कार' को प्राथमिकता देते है। एक बार अशोकजी की बेटी का कुंकूम समारोह था और उसी दिन एक मौत हुई। तो उन्होंने 'मृतक संस्कार' को प्राथमिकता दी, उसके बाद ही बेटी का कुंकूम समारोह आयोजित किया। श्री भुतड़ा को राज्य व संगमनेर की कई संस्थाओं द्वारा सन्मानित भी किया जा चुका है।

जो मिला उसमें ही खुश रहता हूँ..
मेरी उंगलियाँ सीखाती है, बराबर कोई नही है.!!

बेजुबानों के खाने-पानी की अपील

भीलवाड़ा। कोरोनावायरस के कारण लॉक डाउन कर्फ्यू के चलते परिंदों, गायों, कुत्तों व अन्य बेजुबानो को खाना पानी पूरा नहीं मिल पा रहा है। पीपुल फॉर एनिमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने बताया कि कोरोनावायरस महामारी के चलते सरकार व प्रशासन के बताएं अनुसार बहुसंख्या में लोग घरों में रह रहे हैं, ताकि कोरोना संक्रमण से बचा जा सके। जाजू ने प्रदेश के सभी लोगों से अपील करते हुए कहा कि जिस तरह कमजोर वर्ग को खाद्य सामग्री बांटने का अच्छा कार्य हो रहा है, उसी तरह नियमित रूप से गाय कुत्ते को पूर्ण मात्रा में रोटी व घास मुहैया कराएं व परिंदों को नियमित प्रतिदिन दाना पानी डालते हुए बेजुबानो की भूख प्यास शांत करे। जाजू ने स्वयंसेवी संगठनों व समाजसेवियो से भी आह्वान करते हुए बताया कि नगर पालिका, परिषद व निगम के काईन हाउस की स्थिति अधिक खराब है, ऐसे में गौशालाओं व काईन हाउस में भी रह रहे लावारिस गायों सहित जानवरों को भी पर्याप्त मात्रा में सुखी व गीली घास व पोस्टिक आहार मिल सके, ऐसी व्यवस्था कराएं।

सिर्फ बातों से कौन सिख पाया है साहब...
एक हादसा सबको जरूरी है सीखने के लिए.

कोरोना महामारी का दौर
महिला संगठन लॉकडाऊन में हुआ 'ऑनलाईन'

प्रतियोगिता से लेकर बैठक तक सबकुछ में सोश्यल डिस्टेंसिंग का पालन
प्रतियोगिताओं से लेकर बैठक तक सब आयोजन हुए ऑनलॉईन

अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की बाल एवम किशोरी विकास समिति द्वारा ऑनलाइन प्रतियोगिता 'मेरे राम मेरे हनुमान' का आयोजन पूरे भारतवर्ष में अति उत्साह के साथ हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी व महामंत्री मंजू बांगड़ के सान्निध्य में राष्ट्रीय समिति प्रभारी निर्मला मारू तथा समिति प्रमुख कविता पटवारी एवं उनकी टीम द्वारा बच्चों के संस्कार वर्धन हेतु इस ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन 2 अप्रैल राम नवमी से 8 अप्रैल हनुमान जन्मोत्सव तक किया गया। इसमें रामायण से सम्बन्धित प्रशनावली पूछी गयी। विभिन्न वर्गों से चयनित विजेताओं का एक फाइनल राउंड गूगल फार्म के माध्यम से लिया गया। इस प्रतियोगिता में नेपाल के साथ ही शिकागो और नाईजीरिया के परिवार के बच्चों ने भी भाग लिया। इसमें समिति की राष्ट्रीय प्रभारी निर्मला मारू, समिति प्रमुख सविता पटवारी सहित सभी अंचल प्रभारी का योगदान रहा। इस ऑनलाइन प्रतियोगिता के लिये रिकॉर्ड 5000 से अधिक बच्चों ने राष्ट्रीय रजिस्ट्रेशन करवाया था।

नेतल माहेश्वरी

श्रेया हेड़ा

छवि बाहेती

महिका करवा

ज्योति राठी

सिद्धि करनानी

प्रिषा मूंधडा

स्तुति काबरा

प्रजना मूंधड़ा

हनुमान जयंती पर 11 लाख 51 हजार हनुमान चालीसा पाठ

हनुमान जयंती के उपलक्ष में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 11 लाख 51 हजार हनुमान चालीसा के मंगल पाठ करवाये गये। राम मंदिर अयोध्या न्यास के कोषाध्यक्ष स्वामी श्री गोविंद देव गिरी जी के आशीर्वाद एवं प्रेरणा स्वरूप हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा संगठन की सदस्याओं का बच्चों व परिवारजनों के साथ हनुमान चालीसा पाठ के लिये आवाहन किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ ने बताया कि इस अभूतपूर्व सामूहिक प्रयास द्वारा प्रभु से प्रार्थना की गई कि इस गंभीर बीमारी से संपूर्ण विश्व को शीघ्र मुक्ति दिलाए।

महिला संगठन ने की ऑनलाईन बैठक

लॉक डाउन की इन विशेष परिस्थितियों में जब हम सब घर में सिमट कर रह गए अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी की पहल पर गत 9,10 अप्रैल को व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति की ऑनलाईन बैठक का आयोजन किया गया। समिति की राष्ट्रीय प्रभारी नम्रता बियानी के नेतृत्व में आयोजित इस बैठक में राष्ट्रीय पदाधिकारी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित राष्ट्रीय समिति प्रभारी, कार्यसमिति सदस्य, प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश सचिव आदि लगभग 100 सदस्याएं उपस्थित थीं। इसमें महामंत्री मंजू बांगड़ ने सबका स्वागत करते हुए संगठन विषयक महत्वपूर्ण जानकारी दी । विभिन्न समितियों के माध्यम से किए जा रहे कार्यों की व्याख्या एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिता के विषय में बताया ।17,18,19 जून को राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक चित्रकूट में प्रस्तावित है, परंतु भविष्य में स्थितियों को ध्यान में रखते हुए सम्यक निर्णय लिया जाएगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने द्वादश सत्र की भावी कार्य योजना पर प्रकाश डाला एवं दिशा निर्देश दिया। पीएम केयर फंड में स्वेच्छानुसार सहयोग राशि देने की अपील की करते हुए जिन प्रदेशों के माध्यम से सहयोग राशि प्राप्त हुई उनका धन्यवाद व्यक्त किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष कल्पना गगड़ानी ने वर्तमान परिस्थितियों में सकारात्मक सोच रखने का एक प्रेरणादायक उद्बोधन दिया।

जिसे गुण की पहचान नहीं है
उसकी प्रशंसा से डरो,
और जो गुणों का जानकार है
उसके मौन से डरो!

नगर मंत्री सहित किया रक्तदान

भीलवाड़ा (राज.)। कोरोना महामारी के चलते सभी हॉस्पिटल में रक्त की कमी होने की वजह से श्रीनगर माहेश्वरी सभा के आव्हान पर माहेश्वरी समाजजनों द्वारा महात्मा गांधी चिकित्सालय व रामस्नेही चिकित्सालय में नगरसभा मंत्री अतुल राठी के सान्निध्य में अलग अलग दिनों में पहुचकर अनेक यूनिट रक्तदान किया गया। इसमें दिनेश पटवारी, महेश जाजू, सुरेश बिरला, संजय जागेटिया, राजेंद्र तोषनीवाल, तरुण सोमानी, हरीश पोरवाल एवं जगदीश काष्ठ का विशेष सहयोग रहा। नगर मंत्री श्री राठी ने बताया कि इस पुनीत कार्य में लोकडॉउन के कारण किसी भी रक्तवीर को कोई परेशानी नही हो, इसके लिए घर से गाड़ी से लेने व छोड़ने की व्यवस्था की गई।

चेचानी ने किया आकस्मिक रक्तदान

भीलवाड़ा। जहां विश्व और देश कोरोना की महामारी के संक्रमण को रोकने में जुटा हुआ है वही पीड़ित मानवता की सेवा हेतु अनेक लोग आगे आ रहे हैं। कोई खाद्य सामग्री का वितरण कर रहा है,कोई आर्थिक मदद कर रहा है, कोई भोजन बना कर दे रहा है। ऐसे दौर में अस्पतालों में रक्त की कमी आ गई है। इस स्थिति को देखते हुए समाजसेवी मनीष चेचानी द्वारा इस विषम परिस्थिति में मरीजों के लिए आकस्मिक रक्तदान किया गया। श्री चेचानी द्वारा 78 वीं बार रक्तदान किया जा चुका है।

जरूरतमंद परिवारों की मदद

इन्दौर। श्रीमती सीता देवी जय नारायण जाजू एबी माहेश्वरी एजुकेशनल ट्रस्ट इंदौर द्वारा लगभग 85 जरूरतमंद परिवारों को 2000 रूपये प्रति परिवार की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इसमें सहायता राशि सीधे उन सभी के बैंक खाते में ट्रांसफर की गई। रविंद्र राठी ने बताया कि इसके साथ ही राष्ट्रीय युवा संगठन के अध्यक्ष व संगठन मंत्री के प्रयास से 1500 रुपये की आर्थिक राशि भी जरूरतमंद परिवारों प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही प्रदेश के सभी जिलों व स्थानीय संस्थाओ द्वारा समाज व सभी अन्य सदस्यों को भी राशन, भोजन पेकेट, चिकित्सा सामग्री, दवाऐं आदि सहायता स्वरुप प्रदान की जा रही हैं।

अक्सर वही दीये हाथ जलाते है
जिनको हम हवा से बचाते है

गणगौर पर प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

चित्तौड़गढ़। नगर माहेश्वरी महिला चित्तौड़ द्वारा गणगौर पर 'एक फोटो परिवार के साथ' ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। नगर अध्यक्ष जया तोषनीवाल व नगर सचिव सीमा काबरा ने बताया इसमें प्रथम पुरस्कार गीता डागा एवं द्वितीय पुरस्कार ओमलता राठी धमतरी, तृतीय पुरस्कार रीतू राठी व परिवार छिंदवाड़ा तथा शशि मोहता परिवार रायपुर को दिया गया। सांत्वना पुरस्कार वीणा खटोड व परिवार भीलवाडा, स्नेहलता सोमानी व परिवार तथा नेहा जगोटिया व परिवार चित्तौड़गढ़, रश्मि चांडक अहमदाबाद, अर्चना हेड़ा बेलगाम को प्रदान किया गया। विशिष्ट पुरुस्कार पांच वर्ष की यशस्वी व नविका रांदड तथा रचना व विजय राठी म्यारलेण्ड को प्रदान किया जाएगा। विजेताओं को ऑनलाइन ही पुरस्कार की राशि प्रदान की जाएगी।

कोरोना लॉकडाऊन में मानवता की सेवा

वारंगल। स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा गरीब एवं जरूरतमंद परिवार जिनके पास फिलहाल कोई रोजगार का साधन नहीं है उन परिवारों की पहचान कर उन्हें 1 महीने का राशन दिया जा रहा है। अब तक लगभग 40 परिवारों को यह सहयोग पहुंचाया जा चुका है। समाज के मंत्री नवलकिशोर मणियार ने बताया कि जब तक लॉकडाउन जारी रहेगा, तब तक समाज के सदस्य यह सहयोग उपलब्ध कराते रहेंगे। इसी तरह माहेश्वरी युवा संगठन ने भी लॉकडाउन आरंभ होने के बाद से लगभग 300 परिवारों में 1 सप्ताह का राशन वितरित किया। इसके अलावा अखिल भारतीय माहेश्वरी युवा संगठन के नेतृत्व में देशभर के माहेश्वरी गरीब परिवारों को 31 हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इन्हीं सेवा कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रगतिशील मारवाडी समाज द्वारा 27 मार्च से प्रतिदिन 2 हजार खाने के पैकेट स्थानीय महात्मा गांधी अस्पताल, सरकारी प्रसूति अस्पताल, हनमकोण्डा, चंदाकान्तय्या, मेमोरियल प्रसूति अस्पताल वरंगल एवं दिन रात कर्त्तव्य निर्वहन में जुटे पुलिसकर्मियों और अन्य जरूरतमंदों को वितरित किये जा रहे हैं। मारवाड़ी समाज फ्रेंडस ग्रुप भी प्रतिदिन प्रातः पुलिसकर्मियों और जरूरतमंदों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था कर रही है। प्रगतिशील मारवाडी समाज के अध्यक्ष वेणुगोपाल मूंदड़ा एवं माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष संपत कुमार लाहोटी ने समाज के समस्त सदस्यों से इसमें सहयोग करने का आग्रह किया है।

सुरमे की तरह पिसा है मुझे हालातों ने...
यूं ही नही चढ़े हम लोगों की निगाहों में.

विश्व कल्याण के लिये यज्ञ

इंदौर। संस्था आनंद गोष्ठी के महाअभियान के अन्तर्गत 50 वें पृथ्वी दिवस पर मानवता के कल्याण के लिये घर-घर हवन किया गया। तुलसी के पास दीपक प्रज्जवलित कर रंगोली भी बनाई गई। उक्त जानकारी देते हुए संरक्षक गोविन्द मालू और अध्यक्ष उष्मा मालू ने बताया कि पृथ्वी पर बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, इबोला, निपाह, सार्स आदि के बाद अब 'कोरोना' पृथ्वी पर हमारे द्वारा पैदा किये गए असन्तुलन का परिणाम है। अतः 50 वें पृथ्वी दिवस पर संस्था के आव्हान पर घर - घर गायत्री मंत्र और अथर्ववेद के चार मन्त्रों ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ प्रजापतये स्वाहा, ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ सोमाय स्वाहा से सूर्यास्त के पूर्व हवन किया गया। शाम को घी का दीपक तुलसी के पास प्रज्जवलित किया गया। हर घर आंगन में रांगोली बनाकर पृथ्वी का श्रृंगार किया। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए यह अभियान चला। शहर में 108 टीमों नें दिन भर सोशल मीडिया और व्यक्तिगत फोन कर लोगों को प्रेरित किया। पण्डित रामचंद्र शर्मा 'वैदिक' ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से हवन की विधि बताते हुए कई परिवारों में हवन करवाया। अनेक प्रमुख गणमान्य नागरिकों पूर्व महापौर कृष्णमुरारी मोघे, विधायक मालिनी गौड़, उमा शशि शर्मा, अजय सिंह नरुका, जगमोहन वर्मा। विधायक रमेश मेंदोला, महेंद्र हार्डिया, पूर्व विधायक सुदर्शन गुप्ता आदि ने हवन किया।

'हम समझते कम..समझाते ज्यादा है..!
इसलिए सुलझते कम...उलझते ज्यादा है...!!'

बारहवें पर दी राशन सामग्री

भीलवाडा। हुरड़ा निवासी बसंत काबरा के पिता श्री सोहन लाल काबरा का स्वर्गवास गत 19 अप्रैल को हो गया था। कोरोना महामारी की विभीषिका में काबरा परिवार द्वारा निर्णय लिया गया कि पिताजी के 12 वे पर गंगा माई की प्रसादी ना करके जरूरतमन्दों के लिए खाद्य सामग्री प्रदान की जाए। इसके अन्तर्गत 100 किलो आटा, 2 टिन तेल व 30 किलो दाल गुलाबपुरा पालिका अध्यक्ष धनराज गुर्जर को मानव सेवा हेतु प्रदान की गई।

किसानों को उपज का पूरा मूल्य दिलाने की मांग

इंदौर। किसानों को उसकी सब्जी फल की फसल का लागत मूल्य ही नही मिल रहा है। उपर से कोरोना महामारी के चलते अपनी फसल औने-पोने दामों में बेचने को मजबूर हो रहा हैं। प्रशासन फल सब्जी के भाव निर्धारित करें, जिससे किसानों से सब्जियाँ सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचे। खनिज निगम के पूर्व उपाध्यक्ष गोविन्द मालू ने कृषि मंत्री कमल पटेल और संभागायुक्त से चर्चा कर किसानों को उनकी उपज का पूरा मूल्य दिलाने की मांग की।

रोहित बने सीए

सूरत (गुजरात)। समाज की वरिष्ठ श्रीमती नर्बदादेवी के पौत्र तथा अशोक कंचन टावरी के सुपुत्र रोहित ने सीए की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

होली स्पेशल का आयोजन

लखनऊ। अनुपमा बल्दुआ के निवास स्थान पर महिला मंडल की बैठक होली स्पेशल में रंग गुलाल लगाकर सबका स्वागत किया गया। नीरू और मांडवी बल्दुआ ने बैठक का शुभारम्भ किया। फाग उत्सव का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित हुआ। राधा कृष्ण के सुंदर भजन ने सबका मन मोह लिया। राधा कृष्ण की अद्भुत जोड़ी ने मनमोहक नृत्य किया व फूलों की होली खेली। बल्दुआ परिवार ने स्वल्पाहार कराया। कार्यकारिणी मंडल ने सबका आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के साथ बैठक का समापन हुआ।

एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ बाहेती सम्मानित

कोलकाता। बाहेती भाईपा के होली प्रीति सम्मेलन के अवसर पर संगठन के कर्मठ सहयोगी एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ सत्यनारायण बाहेती को सम्मानित किया गया। संगठन द्वारा श्री बाहेती का सम्मान उनकी समर्पित सक्रिय समाजसेवा के लिये किया गया।

कोरोना योद्धाओं को किया सम्मानित

तमिलनाडु। एस एस ले आउट में कोरोना प्रतिबंधित क्षेत्र में ड्यूटी दे रहे पुलिसकर्मियों एवं नगर निगम के सफ़ाई कर्मचारियों को स्थानीय माहेश्वरी सभा द्वारा सन्मानित किया गया। इस अवसर पर माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष अशोक चांडक, कोषाध्यक्ष हरिकिशन भैया एवं शंकरलाल मूंधड़ा, शिवरतन मोहता, जुगल किशोर लड्ढा, चोरुलाल झंवर, मदनलाल राठी, मेघराज चांडक, घनश्याम राठी, वासुदेव भूतड़ा, हंसराज मुणौत, चांद रतन एवं आदि कई गणमान्यजन उपस्थित थे। पुलिसकर्मियों द्वारा टाउन पुलिस थाना में इस आयोजन की सूचना दी गया। उन्होंने इरोड एसपी को बताया, एसपी साहब ने टाउन थानेदार और इंस्पेक्टर को एसपी ले आउट भेजा और माहेश्वरी सभा के पदाधिकारियों को बुलाकर धन्यवाद दिया।

व्हीज्डम स्कॉलरशिप गणित परीक्षा में उत्कर्ष अव्वल

अमरावती। विगत माह व्हीज्डम स्कॉलरशिप गणित परीक्षा सेंट फ्रांसिस परीक्षा केंद्र पर आयोजित हुई थी। इसमें शाश्वत कॉन्सेप्ट स्कूल के कक्षा पांचवी के छात्र उत्कर्ष राठी ने मेरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त किया। उत्कर्ष को 100 में से 84 अंक हासिल हुए। उत्कर्ष ने अमरावती जिले में चतुर्थ तथा समूचे महाराष्ट्र में 60 वां स्थान हासिल किया है। उत्कर्ष, ब्रिजलाल बियानी साइंस कॉलेज के उपप्राचार्य सीताराम राठी तथा जेसीआई की राष्ट्रीय प्रशिक्षक संगीता राठी के सुपुत्र हैं। उल्लेखनीय है कि उन्होंने इस वर्ष इंटरनेशनल जनरल नॉलेज ओलंपियाड परीक्षा में स्वर्ण पदक तथा इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड में कांस्य पदक भी प्राप्त किया था।

अनोखे ढंग से मनाया अध्यक्ष ने जन्मदिन

कोटा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष आशा - विशाल माहेश्वरी ने गत 21 अप्रैल को अपना 60वां जन्मदिन बेमिसाल ढंग से मनाया। खुशी के इस मौके पर श्रीमती माहेश्वरी द्वारा जन्मदिन के उपलक्ष में कोरोना वैश्विक महामारी के निवारण हेतु संचालित जनहितकारी कार्यों के लिए माहेश्वरी समाज के तीनों शीर्षस्थ संगठन महासभा, युवा संगठन व महिला संगठन प्रत्येक को 51-51-51 हजार रूपये की राशि प्रदान की गई। श्रीमती माहेश्वरी का कहना है कि जिस देश व समाज में हमने जन्म लिया है, उसके प्रति हमारा कर्तव्य है और यही हमारी सच्ची राष्ट्र व समाज सेवा है। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ ने बताया कि राष्ट्र हित व समाज हित में श्रीमती माहेश्वरी द्वारा दिए गए इस अमूल्य योगदान के लिए अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से श्रीमती व श्री माहेश्वरी तथा परिवार का आभार व्यक्त किया गया।

मानवता की सेवा में भोजन वितरण

कलबुर्गी। स्थानीय श्री मारवाड़ी समाज कलबुर्गी द्वारा जरूरतमंद लोगों के लिए 600-700 प्रतिदिन पूरी-सब्जी भोजन के पैक का वितरण किया जा रहा है। विधायक दत्तात्रय पाटिल (अप्पू पाटिल) व एमएलसी बीजी पाटिल ने भी इस सेवाकार्य का अवलोकन कर इसकी सराहना की। इसमें गोविंद राठी, संतोष मालू , दीपक बलदवा, सुनील मालू, प्रदीप कलंत्री, नंदकिशोर बजाज, राजेश सारडा आदि इस सेवा कार्य में तन-मन-धन से समर्पित हैं।

सात सौ ऊँटों की हो गई मौत

भीलवाड़ा। लोक डाउन के चलते पशु चिकित्सालय के बंद होने व अस्पतालों व बाजार में दवा उपलब्ध न होने से सात सौ के लगभग राज्य पशु ऊंटों की मौत हो गई। उक्त जानकारी देते हुए पीपल फॉर एनिमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से इसमे सरकार की घोर लापरवाही बताते हुए कहा कि 12 वर्ष पूर्व ऊँटो की संख्या 10 लाख थी जो सरकार की अनदेखी से वर्ष 2019 की गणना में मात्र 2 लाख 12 हजार रह गई जो अत्यधिक चिंताजनक है। श्री जाजू ने आगे बताया कि ऊँटों में चल रही एक बीमारी के लिए इवेरमेक्टिन नाम का टीका लगता है। उन्होंने पशुपालन मंत्री व मुख्यमंत्री से संकटग्रस्त ऊँट प्रजाति को बचाने व संख्या बढ़ाने के लिए ऊँट पालक रायका जाति को अपने ऊँटो के इलाज का प्रबंध कराने व ऊंटों की मौत ना हो इसकी पुख्ता व्यवस्था कराने की मांग की है।

धन्यवाद सुपरस्टार सिंगिंग प्रतियोगिता का आयोजन

कोटा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन एवं अखिल भारतवर्षीय युवा संगठन के सम्मिलित तत्वावधान में "धन्यवाद सुपरस्टार सिंगिंग प्रतियोगिता" का आयोजन किया जा रहा है। इसका शुभारम्भ आगामी 25 अप्रैल को राष्ट्रीय महिला संगठन अध्यक्ष आशा माहेश्वरी एवं युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार काल्या द्वारा हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ ने बताया कि कोरोना की इस विश्वव्यापी त्रासदी के चलते राष्ट्र के समस्त सेवा कर्मियों एवं दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हेतु इस गायन प्रतियोगिता का आयोजन वस्तुतः समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं निष्ठा की भावना का प्रत्यक्षीकरण है। इस आयोजन का जिम्मेदारी युवा संगठन के प्रभारी राजेश मंत्री व उनकी टीम तथा महिला संगठन की समिति प्रमुख मंजू कोठारी एवं प्रभारी पुष्पा सोमानी एवं टीम द्वारा वहन की जाएेगी।

हनुमान जन्मोत्सव प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रदेश के 179 परिवार के साथ 2 विदेशी प्रत्याशी परिवार भी हुए सम्मिलित

संगमनेर। महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा की बाल संस्कार समिति द्वारा 'हनुमानजी का जन्मोत्सव, सहपरिवार घर पर' प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसे अच्छी सफलता मिली। इसमे महाराष्ट्र से 179 के साथ 2 प्रत्याशी विदेश से भी उत्साह पूर्वक शामिल हुए।

उक्त जानकारी देते हुए महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा की बाल संस्कार समिति के अध्यक्ष गणेशलाल बाहेती ने बताया कि महाराष्ट्र प्रदेश के 20 जिलों से इस इसमें प्रत्याशी शामिल हुई, जिसमें कोकण से 37, पश्चिम महाराष्ट्र से 49, उत्तर महाराष्ट्र से 43 तथा मराठवाड़ा विभाग से शामिल हुए। हर परिवार से बचपण से पचपन उम्र तक के 5 से 20 सदस्य इस धार्मिक प्रतियोगिता में शामिल हुए। संयोजिका रेखा मुंदडा की संकल्पना से आयोजित हुई इस प्रतियोगिता में विदेश से भी दो परिवार शामिल हुए। इनमें गगराणी परिवार - फिलडेल्फिया (अमेरिका) और चांडक परिवार- अबुधाबी शामिल थे। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान बार्शी निवासी रामचंद्र सोमाणी परिवार ने प्राप्त किया। द्वितीय राखी बिहाणी (जयसिंगपुर), तृतीय रमा पलोड (महाबलेश्वर), चतुर्थ डॉ. प्रीतम धुत (शेवगांव) तथा पंचम स्थान नंदकिशोर बाहेती (सेलू) ने हासिल किया। विदेश से सम्मिलित हुए गगरानी और चांडक परिवार को समिति विशेष पुरस्कार से सन्मानित करेगी। विडियो परीक्षण हेतु ध्रुव अकादमी एवं गीता परिवार के सक्रिय कार्यकर्ता गिरीश डागा, संगमनेर कॉलेज के कम्प्युटर डिपार्टमेंट के हेड प्रो.सचिन बाहेती तथा ए.आर. रहमान इन्स्टिट्यूट, चेन्नई के विशारद छात्र अक्षय बाहेती ने सहयोग दिया। संयोजिका रेखा मुंदड़ा, दर्शना लाठी एवम अजय जाजू का विशेष सहयोग रहा।

पीएम केयर में दिया आर्थिक सहयोग

संगमनेर। अ. भा. माहेश्वरी महासभा के आह्वान पर संगमनेर तालुका सभा द्वारा अध्यक्ष अतुल झंवर व मंत्री राजकुमार लाहोटी के नेतृत्व में 1 लाख 33 हजार 911 रुपये की राशि एबीएमएम रिलीफफंड के खाते में जमा की। लॉक डाऊन के कारण सरकार के नियम अनुसार सोशल डिस्टेन्सिंग रखकर दोपहर 12 से 3 तक खुले समय का उपयोग करके इतनी बड़ी राशि का संकलन किया गया। इसमें इस कार्य में उपाध्यक्ष सचिन मणियार, अर्थमंत्री श्रीनिवास भंडारी, संगठन मंत्री संजय रा. मालपाणी, सहमंत्री जुगल बाहेती तथा कार्यकारीणी सदस्यों ने विशेष परिश्रम किए। इस योगदान के लिये इन सभी पदाधिकारियों का सभापति श्यामसुंदर सोनी, महामंत्री संदीप काबरा, प्रदेशाध्यक्ष श्रीविसन भंसाली, प्रदेश मंत्री मदनलाल मनियार आदि ने अभिनंदन किया है।

कोरोना योद्धाओ का किया सम्मान

बीकानेर। एमडीवी सेलिब्रिटीज ग्रुप द्वारा गत 3 मई को मुरलीधर व्यास नगर के कोरोना योद्धा (समस्त सफाई कर्मचारियों) का सम्मान किया गया। ग्रुप अध्यक्ष योगेश बिस्सा ने बताया कि इसमें सम्मान स्वरुप सभी कोरोना योद्धाओं को कम्बल एवं श्रीफल प्रदान किये गये। ग्रुप के मीडिया प्रभारी पवन राठी ने बताया कि समाजसेवी राजेश चुरा, किशोर पारीक मुख्य प्रबधक एस बी आई, सनातन धर्म साधना पीठ के अधिष्ठाता पं. भाईश्री, कंपनी सेक्रेट्री गिरिराज जोशी, जगमोहन हर्ष निगम अधिकारी आदि शामिल हुए ।

पीएम फंड में भेंट की राशि

सिकंदराबाद। कोरोना महामारी के राहत कोष 'पीएम केयर फंड' में माहेश्वरी सेवा संघ की ओर से 2 लाख 21 हजार रुपये की सहायता राशि भेंट की गई। तेलंगाना प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री बड़ी संजय को सेवा संघ के मंत्री पी.डी. जाखोटिया ने इस राशि का चेक भेंट किया। इस अवसर पर भाजपा के भँवरलाल वर्मा, उत्तम सिंह राजपुरोहित, सुरेश काकानी, नरेन्द्र खेतान सहित माहेश्वरी सेवा संघ सिकंदराबाद के कई सदस्य उपस्थित थे।

'मेरा परिवार अनमोल मोती' प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन ने किया लॉकडाउन में किया आयोजन

शिप्रा राठी

प्रिया कासट

सपना मूंधड़ा

श्वेता तोष्नीवाल

पदमा झंवर

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी के नेतृत्व व राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड़ की प्रेरणा से लॉकडाउन अवधि का सदुपयोग करते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति द्वारा पारिवारिक सामंजस्य को सकारात्मक आईने में दर्शाने हेतु राष्ट्रीय स्तर पर 'मेरा परिवार अनमोल मोती' वीडियो बनाएँ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

समिति की राष्ट्रीय प्रभारी शिखा भदादा ने बताया कि इसमें संपूर्ण राष्ट्र के 27 प्रदेशों से लगभग 400 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इसके अन्तर्गत विडियो द्वारा महिला व पुरूष के एक दुजे को सहयोग, हर पीढ़ी का आपस में सीखना व सिखाने का क्रम, संस्कार से टेक्नॉलोजी तक व मोबाईल से रामायण तक का आदान प्रदान दिखा। सारे विडियो ने परिवारों के सामंजस्य की सुन्दर छवि को दर्शाया। हर प्रदेश से श्रेष्ठ 3-3 विडियो इस तरह कुल 8 विडियो राष्ट्रीय समिति के पास आए। इनमें से निर्णायकों ने विजेताओं का चयन किया। राष्ट्रीय प्रभारी श्रीमती भदादा ने बताया कि इसमें शीतल सोनी, सह प्रभारी-पूर्वांचल का विशेष सहयोग रहा।

प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार है-प्रथम शिप्रा राठी, मथुरा पश्चिम उत्तर प्रदेश, द्वितीय प्रिया कासट,पालथी, महाराष्ट्र, तृतीय सपना मूंदड़ा दुहबी, नेपाल चैप्टर, चतुर्थ पद्मा झंवर, मेहबूबाबाद, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पंचम श्वेता तोषनीवाल, कानपुर, मध्य उत्तर प्रदेश

सान्त्वना पुरस्कार- हेमा मूंदड़ा, जहाजपुर,दक्षिणी राजस्थान प्रदेश, पल्लवी राठी, धमतारी, छत्तीसगढ़, मंगला भूतड़ा, गंगावती, जिला कोपल, कर्नाटक प्रदेश सभी विजेताओं को हार्दिक बधाइया एवं सभी प्रतिभागियों को भी उनके अपार मेहनत के लिए आभार व बधाई। **विशेष-** कुछ प्रविष्ठियां अति सराहनीय व प्रशंसनीय रही जिनका नामों का संगीता भट्टर, झारसुगुडा, ओडीशा प्रदेश, कृष्णा महेश्वरी, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल प्रदेश, सोनिका दरक, पूर्वी राजस्थान अर्चना सारदा, महाराष्ट्र थी।

ऋषिमुनि समूह द्वारा काल गणना की
प्राचीन नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

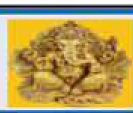

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग

इतना सरल की अपने घर के पंडित आप खुद बन जाए

डेढ़ वर्षीय
विवाह मुहूर्त
के साथ

व्रत-पर्व देखना हो या शुभ मुहूर्त या
विवाह के लिए पत्रिका का करना हो मिलान
कहीं जाने की जरूरत नहीं, स्वयं देखें अपने पञ्चाङ्ग में

90, विद्या नगर, टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-2526761, मो. 094250-91161, 98275-59522

सभी प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध

लॉकडाऊन की बंदिशें बनीं इन नव युगलों के लिये यादगार

वैसे तो कोरोना महामारी व इसके कारण लगा लॉक डाऊन दोनों ही परेशानी का सबब बने हुए हैं, लेकिन इन्होंने हमें इस समयावधि की वे यादें भी दीं हैं, जिन्हें कभी भूलाया नहीं जा सकता। यह समय सबसे बड़ी यादगार तो उनके लिये बना है, जो इस दौर में परिणय सूत्र में बंधे हैं। आईये डालें इस अवधि में हुए कुछ यादगार विवाहों पर नजर।

बंदिशों के बीच अजय व मानसी बने हमसफर

जोधपुर। लॉकडाउन की बंदिशों के बीच भाजपा महिला मोर्चा की जिला उपाध्यक्ष डॉ. नीलम-सुनिल मूंदड़ा के पुत्र अजय का विवाह कुछ लोगों की उपस्थिति में सादगी से हुआ। इस शादी के साक्षी बने सिर्फ दोनों के माता पिता और एक पंडित। बाद में विडियो कॉलिंग के जरिये लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने भी वर-वधू को आशीर्वाद दिया और सादगीपूर्ण शादी करने पर बधाई दी।

11 हजार गरीबों को खाना खिलाएंगे

भाजपा के कई अन्य नेताओं ने भी नवविवाहित जोड़े को शुभकामनाएं प्रदान की। डॉ. नीलम मूंदड़ा ने बताया कि उनके पुत्र अजय मूंदड़ा का विवाह मानसी सोनी के साथ पूर्व में ही तय हो गया था। प्रशासन से अनुमति लेने के बाद नियत दिन दूल्हा-दुल्हन अपने-अपने माता पिता के साथ तैयार होकर उम्मेद हैरिटेज मंदिर पहुंचे। यहां पंडित ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ दोनों की शादी संपन्न कराई। इस अवसर पर अजय व मानसी दोनों ने तय किया कि भव्य शादी नहीं करने से हुई बचत से वे शहर के एक हजार जरूरतमंद लोगों को भोजन कराएंगे। शादी के दौरान दूल्हा-दुल्हन ने सारी रस्में मास्क लगाकर पूरी की। इस दौरान दोनों के मास्क आकर्षण का केंद्र बने रहे। दुल्हन ने अपनी शादी की ड्रेस से मैच करता हुआ गोल्डन कलर के वर्क का मास्क पहन रखा था। वहीं दूल्हे ने अपनी शेरवानी से मैच करता हुआ मास्क लगाया।

आये थे गणगौर पर, सात फेरे लेकर लौटे

जीरापुर। लॉकडाउन के एक दिन पहले अपनी होने वाली दुल्हन के लिए गणगौर पर्व का सिजारा कपड़े लेकर पहुंचे। 'जमाई साहब' लॉकडाउन के कारण ऐसे उलझे कि अक्षय तृतीया पर शादी रचाकर दुल्हन को लेकर विदा कराकर ही लौटे। इस अनोखे विवाह शादी में दूल्हे के माता -पिता व बड़े भाई ने विडियो कॉलिंग से नवदंपति को आशीर्वाद प्रदान किया।

नगर के प्रतिष्ठित मूंदड़ा परिवार में स्वर्गीय श्री भगवानदास मूंदड़ा की सुपुत्री रितु मुंदड़ा का विवाह उज्जैन निवासी अनुराग माहेश्वरी के साथ तय हुआ। उक्त विवाह पूर्व में ही 17 अप्रैल को होना तय हो गया था। इसके लिए वर-वधु पक्ष द्वारा तमाम तैयारियां की गई थी। उक्त शादी पर दुल्हन पक्ष द्वारा करीब 25 लाख रुपए तक खर्च किए जाने थे। परंतु लॉक डाउन के कारण उक्त शादी मामूली खर्च पर सोशल डिस्टेंस में सिमट कर रह गई। जब दुल्हे राजा 21 मार्च को अपनी होने वाली दुल्हन के लिए सिजारा कपड़े लेकर पहुंचे, उसके तत्काल बाद देश में लॉकडाउन लागू हो गया। इस बीच दुल्हे राजा ऐसे उलझे कि अपने घर तक नहीं पहुंच सके। इधर दुल्हन पक्ष ने अपनी सारी तैयारियां शुरू कर दी। उन्हें उम्मीद थी कि हालात सुधर जाएंगे। जब कोरोना संक्रमण के कारण लाकडाउन बढ़ा दिया गया, तब परिवार ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम निरस्त कर दिया और अक्षय तृतीया पर सादगी पूर्वक शादी संपन्न हुई।

ऐसे दिया वर वधु को आशीर्वाद

लॉकडाउन की वजह से दूल्हे के माता - पिता, भाई व दुल्हन की बहन - जीजाजी नही पहुंच पाए। उन्होंने वहीं से विडियो कालिंग से नवदंपत्ति को आशीर्वाद दिया। वहीं दुल्हन की बड़ी बहन ममता बियाणी व निकेत बियाणी ने जयसिंहपुर महाराष्ट्र से विडियो कॉलिंग द्वारा अपनी लाड़ली बहन को बधाई दी।

लॉकडाऊन में परिणय सूत्र में बंधे

रतलाम। स्थानीय समाज में अक्षय तृतीया पर अनोखी शादी हुई। होने वाले जमाईजी गहने खरीदने के लिए रतलाम आए और लॉकडाउन में यहीं फंस गए। इस बीच पहले से तय शादी की तारीख आ गई तो परिवार के 12 लोगों की मौजुदगी में यहीं शादी भी हो गई। दुल्हे के परिवार ने वीडियो कॉल पर ही आशीर्वाद दिया।

सेठी नगर निवासी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सेवानिवृत्त मैनेजर गोविंदलाल राठी की बीएड कर चुकी बेटी आरती की शादी राजस्थान के लुनकरण के सीए नरेंद्र पिरताणी से तय हुई थी। सोने की शुद्धता के लिए ख्यात रतलाम से ज्वैलरी खरीदने के लिए नरेंद्र 18 मार्च को रतलाम आए। 23 मार्च को लॉकडाउन हुआ तो यहीं फंस गए। शादी अक्षय तृतीया पर तय थी और पत्रिका छप चुकी थी। पत्रिका तो बंटी नहीं लेकिन परिजन की रजामंदी से नरेंद्र-आरती ने अक्षय तृतीया पर 12 परिजनों की मौजूदगी में घर पर सात फेरे ले लिए। दूल्हे के माता-पिता कमलादेवी-घनश्यामदास, बड़े भाई जितेंद्र, भाभी शृद्धा ने वीडियो कॉल पर आशीर्वाद दिया। दुल्हन के बड़े भाई गौरव ने आलीराजपुर के उदयगढ़ व बहन पूजा ने देवास से तो मामा कैलाश लड्डा ने प्रतापगढ़ से वीडियो कॉल पर ही आशीर्वाद दिया।

दूल्हा दुल्हन ने लगाए डिजाइनर मास्क

शादी में सोशल डिस्टेंसिंग का ध्यान रखा गया और दूल्हा दुल्हन ने डिजाइनर मास्क लगाए। परिजन ने भी दूर से ही आशीर्वाद दिया। इस शादी में परिवार के 12 लोग दुल्हन के माता -पिता, भाई माधव, बहन खुशबू, काका राधेश्याम, चंद्रशेखर, कमलनयन, काकी अनिता, प्रीति, रतलाम निवासी मामा प्रहलाद मंडोरा, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष पूर्व महापौर शैलेंद्र डागा, पंडित तरूण द्विवेदी ही शामिल हुए। दूल्हे नरेंद्र व दुल्हन आरती का कहना है कि कोरोना संक्रमण में चल रहे लॉकडाउन में शादी होने से परिजन कम शामिल हुए लेकिन हमें वीडियो कॉल से सभी का आशीर्वाद मिला है। इस कठिन समय में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ हमारी शादी का यह रोचक किस्सा हमेशा याद रहेगा।

बेंजामिन फ्रैंकलिन की पंक्तियां हैं कि ऐसा कुछ लिखे जो पढ़ने लायक हो। इससे भी बेहतर है कि ऐसा कुछ करें जिस पर कुछ अच्छा लिखा जा सके। उक्त पंक्ति ख्यात बाल साहित्य की सृजनकर्ता डा.विमला भंडारी पर खरी उतरती है। डॉ. भंडारी ने न सिर्फ ऐसा लिखा जिसे पढ़ा जा सके बल्कि अपने कर्म से इतना कुछ करके भी दिखाया है, जिस पर कोई भी साहित्यकार बहुत कुछ लिख भी सकता है। शील कौशिक, सिरसा, हरियाणा

बाल साहित्य की सृजनकर्ता डॉ. विमला भंडारी

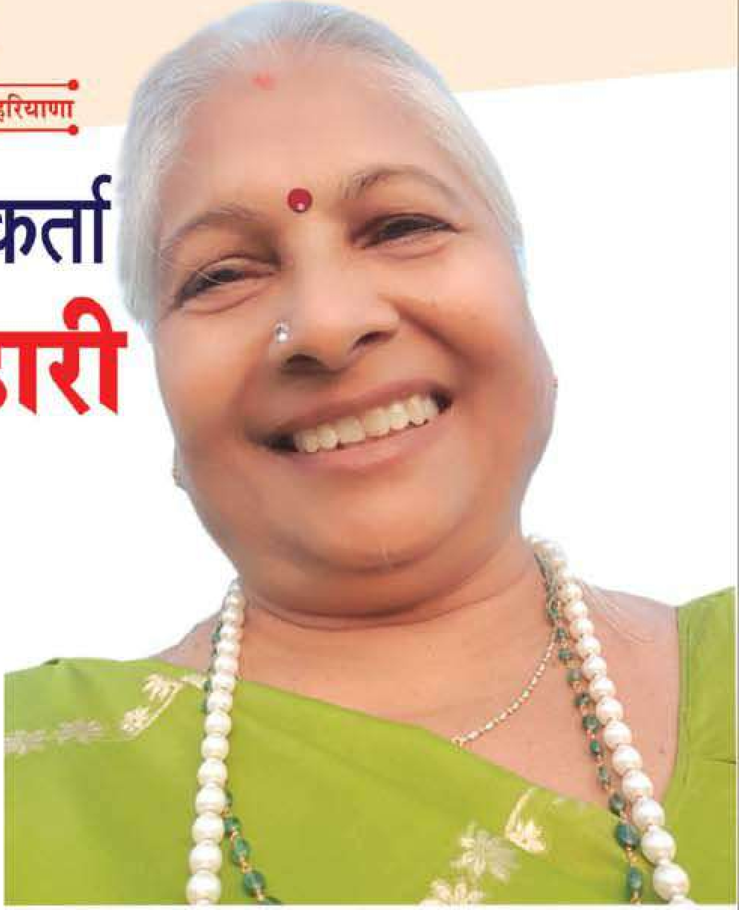

राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व बाल साहित्य का पर्याय बन चुकी डॉ. विमला भंडारी वर्तमान में किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। डॉ भंडारी की बाल साहित्य की बहुआयामी देन हिन्दी साहित्य को समृद्ध भी कर रही है, तो भावी पीढ़ी को नई राह भी दिखा रही है। बालक और बाल साहित्य उनके मन प्राण में रचा बसा है। उन्होंने बहुत पहले समझ लिया था कि यदि एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करना है तो उस देश के बच्चों को बहुआयामी विकास करना होगा। उन्हें अपने राष्ट्र की गौरवशाली संस्कृति से परिचित कराना होगा। इसीलिए डॉ विमला भंडारी बालकों के हित में निरंतर चिंतन रत रहकर नित्य ही कुछ नया व ठोस करने में विश्वास रखती हैं। मन की सरल, मनमोहक मुस्कान लिए जब वे बच्चों के विषय में बात करती हैं या बच्चों से बतियाती हैं, एक बाल सुलभ भाव उनके चेहरे पर सहज ही दिखाई पड़ता है। दूसरे शब्दों में उनके चेहरे से उनका बचपन जागता नजर आता है।

सतत चलती रहीं लेखनी

अपने विपुल साहित्य लेखन से वे समय-समय पर अपनी लेखनी से बाल साहित्य को समृद्ध करती रही हैं। इसके लिये वे भारत सरकार व राजस्थान सरकार से पुरस्कृत सम्मानित हो चुकी हैं। बाल साहित्य की विविध विधाओं में उन्होंने अब तक 16 कृतियां एक से बढ़कर एक प्रदान की हैं। वे अत्यंत संवेदनशील हैं तथा उनकी बाल कहानियां में कल्पना व मनोरंजन के तत्व सहज ही दृष्टव्य हैं। उनकी बहुत सी कहानियां जैसे 'पृथ्वी ने मांगी चप्पल', 'उड़ने वाले जूते', 'आत्मकथा एक सोसाइटी की' इत्यादि कई कहानियां राष्ट्रीय बाल पत्रिकाओं में चर्चित रही है। उनके

लिखे बाल उपन्यास 'कारगिल की घाटी' का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है। इसके अलावा आपकी लिखी बाल कहानी 'स्वाद का रहस्य' महाराष्ट्र के पाठ्यक्रम में शामिल हुई है।

साहित्यिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान

डॉ. भंडारी राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त 'सलिला' संस्था, सलूंबर की आप संस्थापक अध्यक्ष हैं, जिसके तहत सन 2010 से सलूंबर में निरंतर भव्य राष्ट्र स्तरीय साहित्यिक आयोजन करा रही हैं। सम्मेलन से पूर्व प्रतिवर्ष आप बच्चों की पांच दिवसीय लेखन कार्यशाला आयोजित करती हैं। इस कार्यशाला में बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा को निखारने का काम बखूबी किया जाता है। बच्चों को सहज ही निबंध लेखन, यात्रा वृतांत, जीवन की घटना, कहानी, नाटक, जीवनी, कविता, पत्र लेखन व ओरिगामी के तहत अखबार के मोड़ से सरल भाषा में रेखागणित समझाया जाता है। बच्चे अपने नाम से अपनी-अपनी हस्तलिखित पुस्तक तैयार करते हैं। बच्चों से दीवार अखबार भी तैयार करवाया जाता है। इस प्रकार उनकी बहुआयामी विकास में इन लेखन कार्यशालाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

साहित्य के सृजनकर्ताओं को प्रोत्साहन

प्रत्येक वर्ष वे बाल साहित्य के विविध विषयों पर अखिल भारतीय स्तर की

प्रतियोगिता आयोजित करती हैं। तदुपरांत विजेताओं को अखिल भारतीय सम्मेलन में पुरस्कृत किया जाता रहा हैं। जिससे नवोदित व वरिष्ठ बाल साहित्यकारों को अपनी प्रतिभा निखारने व परखने का अवसर मिलता है। सम्मेलन में बाल साहित्य आधारित विभिन्न पुस्तकों का लोकार्पण भी किया जाता है। पत्र वाचन, वार्ता और परिचर्चा जैसे विभिन्न सत्रों में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, राजस्थान साहित्य अकादमी जैसी सरकारी संस्थाएं भी सहभागी होती हैं। विभिन्न प्रदेशों से बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'सलिला साहित्य रत्न सम्मान' सहित अनेक सम्मान प्रदान किए जाते हैं। गत वर्ष 'सलिला' संस्था की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण करने पर रजत जयंती महोत्सव मनाया गया था।

एक सफल संपादक की पहचान भी

डॉ. भंडारी संपादन के क्षेत्र में भी पीछे नहीं हैं। वे प्रतिवर्ष बाल साहित्य की विविध विधाओं यथा बाल कहानी, यात्रा वृतांत, पत्र लेखन आदि में पुरस्कृत व चयनित रचना का संपादन कर पुस्तक प्रकाशित करवा रही हैं। सन 2017 में 'हमारे समय की श्रेष्ठ कहानियां', 2018 में 'देख लो जग सारा', 2019 में 'पत्र तुम्हारे लिए' संपादित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष 'सलिल प्रवाह' पत्रिका का भी संपादन किया जाता है, जिसका लोकार्पण राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन में किया जाता है। पत्रिका का प्रत्येक अंक किसी विशिष्ट बाल साहित्यकार की रचनाओं पर केंद्रित होता है। राजस्थान साहित्य अकादमी की विशिष्ट पत्रिका 'मधुमति' के बाल साहित्य का संपादन भी वह 2013 में कर चुकी हैं। डॉ. भंडारी अकादमी की सरस्वती सभा की सदस्य भी रहीं। शोधकर्ताओं ने आपके लेखन पर शोध कार्य किए हैं। आपके समग्र साहित्य लेखन पर दिनेश कुमार माली, उड़ीसा द्वारा लिखी गई पुस्तक 'डॉ विमला भंडारी की रचना धर्मिता' यश प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हो चुकी है।

बाल साहित्यकार पटल की संयोजक

डॉ भंडारी के संयोजन में एक अनुशासित, नियमबद्ध कार्यशाला व्हाट्सएप पर चल रही है, जिससे देशभर के ातिष्ठित व नवोदित साहित्यकार जुड़े हैं। यह देश की सोशल मीडिया पर पहली ऐसी कार्यशाला है, जिससे अनेकानेक नवोदित व वरिष्ठ बाल साहित्यकार लाभान्वित हो रहे हैं। विभिन्न दिवस के संचालक व पाठक विधा विशेष पर प्रस्तुत रचनाओं पर अपनी टिप्पणियों व प्रतिक्रियाओं से रचना को पुष्ट करते हैं। पटल के माध्यम से कविता, कहानी, आलेख, समीक्षा के अतिरिक्त विस्मृत कर दी गई विधाओं यथा रेखाचित्र, जीवनी, संस्मरण, यात्रा वृतांत, पत्र लेखन, सूचनात्मक साहित्य का पुनर्लेखन भी हो रहा है है। हाल ही में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा पूरे देश में सर्वप्रथम बाल साहित्य अकादमी की स्थापना की घोषणा की गई, इसमें भी डॉ. भंडारी के विशिष्ट प्रयास रहे हैं।

कोरोना महामारी की इस विभीषिका में देश की जनता की रक्षा के लिए राष्ट्रव्यापी लॉक डाउन लागू किया गया है। इसके पीछे लक्ष्य है सोशल डिस्टेंसिंग, जिससे यह महामारी एक व्यक्ति से दूसरे में नहीं फैले। लॉक डाऊन ने दौड़ती व चहलकदमी करती जिंदगी को घर की चारदीवारी में सिमट कर रख दिया है। ऐसे में हम सोचने पर विवश हैं कि हम घर पर रहकर करें तो क्या करें? वास्तव में यदि हम चाहें तो इस अवधि का बहुत कुछ सदुपयोग कर सकते हैं। इस अवधि में लोग स्वास्थ्य सुधार के लिए योगा, मेडिटेशन आदि का उपयोग कर रहे हैं तो अपनी रचनात्मकता को भी इस खाली समय में कल्पना की उड़ान दे रहे हैं। सबसे बड़ा काम तो वे समाजसेवी कर रहे हैं, जो पीड़ित मानवता की सेवा में इस विषम परिस्थिति में भी समर्पित हैं। आईये समाज के प्रबुद्ध वर्ग से जानें, कैसे व्यतीत कर रहे हैं, वे अपना लॉकडाऊन का यह समय?

कैसे बीत रहा है हमारा लॉकडाउन

□ टीम SMT

अपनों के लिये मिला समय

स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि कभी जीवन में सबको एक इस तरह संकट की घड़ी से गुजरना पड़ेगा। इस महामारी के कारण एक ओर भय और निराशा का वातावरण व्याप्त है, तो दूसरी ओर इसका दूसरा सकारात्मक पहलू भी है। मैंने भी सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाते हुए अपने समय का सदुपयोग करना सीख लिया है। व्यस्तता भरी जिंदगी के कारण हमें अपने परिवार के साथ रहने का समय नहीं मिल पा रहा था। 'स्टे-होम-स्टे-सेफ' के नियमों का पालन करते हुए आज सभी परिवारजनों के साथ प्रेमपूर्वक रहने और आपसी तालमेल और समझ को विकसित करने का सुअवसर हमें मिला है।

मेरी सुबह की शुरूआत योगा और मेडीटेशन के साथ होती है, जो कि वर्तमान समय में स्वस्थ रहने के लिए अत्यंत ही आवश्यक है। जहां घर के पुरुषों और बच्चों का अधिकतर समय ऑफिस और कॉलेज के कारण बाहर ही बीतता था, आज वो ही समय घर पर रहने के कारण मेरे लिए अमूल्य धरोहर बन गया है। आज घर में चाय, नाश्ता, खाना सबका एक साथ तो होता ही है, इसके साथ ही घरेलू कामों में भी घर के सभी सदस्यों का सहयोग मिल जाता है। टी.वी. पर चल रहे धार्मिक कार्यक्रमों जैसे रामायण, महाभारत आदि हम सब एक साथ बैठकर देखते हैं। एक दूसरे से वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी आदि से सभी के ज्ञान का सृजन होता है और मनोरंजन के लिए विभिन्न प्रकार के खेल भी मिलकर खेलते हैं। बच्चों के साथ बच्चा बनकर खेलने से मानो बचपन को फिर से जीने लगे हैं। ऐसा लगता है कि जिस अपनत्व और प्यार को हम बरसों से खोज रहे थे, वो सही मायनों में आज मिला है।

बतौर जिलाध्यक्ष मुझे माहेश्वरी महिला मंडल से संबंधित भी कई कार्य संपादित करने होते हैं। सोशल डिस्टेंसिंग के चलते समस्त सामाजिक गतिविधियां और प्रतियोगिताएं ऑनलाइन ही करवाई जा रही है। प्रतियोगिताओं को निष्पादित कराना, उनका विश्लेषण करना और जिला स्तर पर मंडल के विभिन्न कार्यों को रूपान्तिरित करना- इन सभी ने मेरे डिजीटल ज्ञानकोष को भी बढ़ाया है। सच कहुं तो मेरा समय पंख लगाकर उड़ रहा है। अंत में, इतना ही कहना चाहूंगी कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, हमें सदैव सकारात्मक रवैया अपनाकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। मंजिलों को पाने में चाहे कितने ही अवरोध क्यों न आए, चाहे रास्ते कितने ही दुर्गम क्यों न हो, मन में यदि आशा, उत्साह और उमंग हो तो मंजिलें आसान हो ही जाती हैं।

सीमा कोगटा, अध्यक्ष भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी महिला संगठन

व्यक्तित्व निर्माण का मिला अवसर

लॉकडाउन के दौर में हम सबका व्यस्तम जिंदगी को छोड़ के घर में कैद हो कर रहना बहुत ही कठिन कार्य है। पर मेरे लिये तो ये दिन मेरे जीवन के यादगार व सुनहरे पल बन गये हैं। मैंने व मेरे परिवार ने पहले दिन से ही इस समय को हँसी खुशी से बिताने के लिए एक अच्छी सी दिनचर्या बना ली है।

हमारी दिनचर्या में प्रभात की शुरुआत हम शरीर को स्वच्छ रखने के लिए योगा, प्रणायाम व ध्यान से करते हैं। यह शुरुआत मैंने व मेरे हमसफर ने कई सालों के बाद की है। अब समय है, साथ-साथ में चाय-नाश्ता करते हुए रामायण का लुत्फ उठाने का भी। 32 साल बाद ऑनलाईन सितार सिखना शुरू करके अपने पुराने शौक को फिर से जागृत किया और मेरे साथ मेरे पतिदेव सिंथे साइजर व पियानो बजाते हैं। इस तरह से हम एक घण्टा संगीत की दुनिया का रस लेते हैं। अब हम श्रीजी बाबा ठाकुरजी की शरण में बैठ जाते हैं और कुछ समय ठाकुरजी की पूजा अर्चना में बिताते हैं। मेरे पति हर रविवार को हवन करते हैं, जिसमें मैंने पहले कभी भागीदारी नहीं निभाई, पर इन दिनों मुझे अंतप्रेरणा हुई और मैं इसमें अपनी भागीदारी निभाने लगी। सच पूछो तो मुझे इसमें आनंद आने लगा और मन शांत रहने लगा। साथ में हमने सुंदरकाण्ड पाठ भी किया। अब समय है, बेटे-बहू व पति के साथ भोजन ग्रहण करने, लूडो व ताश खेलने का भी। ये पल पूरा परिवार साथ-साथ गुजार रहे हैं।

थोड़ा समय मैंने अपने लिए भी रखा है जिसे मैं कुछ पारिवारिक धारावाहिक देखकर, परिजनों, परिचितों व दोस्तों का हालचाल जानने तथा समाज के रचनात्मक कार्यों को करने के लिए फोन व व्हाटसऐप पर व्यतीत करती हूं। हर दूसरे दिन सामाजिक संगठनों की जूम मीटिंग वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से होती रहती है, जिसमें अपनी भागीदारिता दर्ज कर कुछ न कुछ सीखती रहती हूं। कुछ पल परिवार सहित शाम की चाय पीते हुए बेडमिंटन, क्रिकेट, टीटी खेलते हुए व रचनात्मक कार्य करते हुए बीताते हैं। फिर से महाभारत-रामायण देखते हुए, परिवार के साथ पूरी शाम बिताते हैं। यह है हमारी पूरी दिनचर्या जो कि मेरे लिए एक यादगार याद बन गई है। आप कहेंगे इसमें ऐसा क्या खास है ये तो सादी सी दिनचर्या है। पर राज की बात बताऊं साधारण दिनचर्या में तो मेरे पतिदेव व मैं अतिव्यवस्ततम जिंदगी जीते हैं। एक लम्बे अंतराल के बाद हम साथ-साथ में खुशनूमा पल बिता रहे हैं व एक-दूसरे के साथ समय बिताने का ये हमारे लिए स्वर्णिम अवसर है। मैं तो ये कहती हूं कि मेरे लिए तो यह अपने स्वयं के व्यक्तित्व निर्माण का भी स्वर्णिम अवसर है। अंत में मेरा यही कहना है कि कठिन से कठिन समय को खुशनूमा बनाने की कला हममें ही निहित है। जरूरत है उससे जागृत करने की।

- ममता मोदानी, उपाध्यक्ष पश्चिमांचल महिला संगठन

वह पा रहे हैं, जो पैसे से हासिल नहीं किया जा सकता

''जीवन की आपाधापी में कब वक्त मिला'' में बच्चनजी ने वक्त न मिल पाने का अफसोस एवं नुकसान बताये थे और हर कोई यही सोचकर दुखी होता रहा। आज आपाधापी थम गई और वक्त ही वक्त मिल रहा है। दुःख है कि प्राकृतिक आपदा से ये थमी, तो कहर भी बरपा रही हैं। संक्रांति काल है, परंतु संक्रांति काल में ही तो मनोवांछित गुणों का विकास होता है, वे प्रकट होते हैं। 'काल' ही अगर इसका कारण है, तो फिर दुखी होकर क्यों हों?

अब वो वक्त मिला जिसके लिये कब से तड़प रहे थे। दूर होते रिश्ते, एक घर में सिमट गये हैं। सबके पास एक दूसरे के लिए समय ही समय है। माया में उलझता जीवन सादगी से घर की उलझनें सुलझा रहा है। 'मैं' के शिकार हम हो गये हैं। 'हम आपके हैं कौन?' से अब 'हम साथ साथ हैं' हो गये हैं। कृत्रिमता और स्वाभाविकता का भेद नजर आ रहा है। लालायित थे जिसे पाने को, सैकड़ों खर्च कर दो दिन प्रकृति की गोद में वीकेंड मनाने की चाह, बिन पैसे पूरी हो रही है। मां की रोटी, पिता की गोद, बच्चों का खेल, परिवार का सुख, भौतिकता की भागती दौड़ थम गई, अपना और अपनापन मिल गया। यदि अब भी नहीं समझे तो कभी नहीं समझ पाओगे कि सुख शांति सुकून क्या है? रोते रहना कमजोर की फितरत होती है, हमें तो घर बैठे वो ज्ञान मिल रहा है, बोध मिल रहा है, खुशी मिल रही है। जिसे पाने अनादिकाल से मनुष्य 'ऋषि-मुनि' के पास पहाड़ों की कंदराओं में जाया करते थे।
-कल्पना गगडानी, पूर्व अध्यक्ष महिला संगठन, मुंबई

मानवता की सेवा का मिला अवसर

आज पूरा विश्व कोरोना वाइरस संक्रमण महामारी से जूझ रहा है, जिससे भीलवाड़ा जिला भी अछूता नहीं है। इस महामारी के कारण लॉकडाउन चल रहा है। भागदौड़ की इस जिंदगी में लॉकडाउन से मानव जीवन में ठहराव आ गया है। इसके कारण लोग घर में रहकर लॉकडाउन का पालन कर रहे हैं और यही एक इस संक्रमण महामारी का इलाज माना जा रहा है। मैं भी इसका पालन कर रहा हूं। इस लॉकडाउन में मैंने अपनी लगभग 100 सामाजिक व्यक्तिगत पत्रावलियों का रिकार्ड पुनः संधारित कर व्यवस्थित किया तथा पुनः कुछ रिकार्ड का अवलोकन भी किया। समय समय पर भीलवाडा जिले की समस्त तहसील सभाओं के अध्यक्ष व मंत्री महोदयों से निरंतर सम्पर्क बनाये रखा एवं साथ ही यह भी सभी से निवेदन किया कि इस आपदा की घड़ी में कोई भी माहेश्वरी परिवार खाद्य सामग्री से परेशान नहीं हो। श्री राधेश्याम चेचाणी पूर्व अध्यक्ष महेश सेवा समिति एवं जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू की प्रेरणा से भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा की ओर से भीलवाड़ा शहर में जरूरतमंद माहेश्वरी परिवारों को उनके घर-घर जाकर अब तक 70 परिवारों को मैं स्वयं खाद्य सामग्री देकर आया। खाद्य सामग्री वितरण में मेरे पड़ोसी मधुसुदन बागला जो कि एक शिक्षक हैं, का पूरा सहयोग मिला। मैं निरंतर इस प्रयास में लगा रहता हूं कि जिस जरूरतमंद माहेश्वरी परिवार को खाद्य सामग्री की जरूरत हो उसको तुरंत उसके घर पहुंचाऊं। इस कार्य में किसी भी परिवार का नाम उजागर नहीं किया जा रहा है।

परिवार के साथ रामायण व महाभारत के टीवी पर प्रसारण का आनंद लेता हूं। लॉकडाउन के समय में दिन में आराम, नहीं के बराबर कर रहा हूं। दिन भर कुछ न कुछ सामाजिक रिकार्ड को अपडेट करना, पुरानी माहेश्वरी पत्रिकाओं का अध्ययन करना व कभी-कभी कीचन में कार्य करना भी आनंद देता है। जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू से दिन में एक बार अवश्य ही समाज की गतिविधि व भीलवाड़ा शहर की जानकारी हेतु मोबाईल पर बात होती रहती है।

देवेंद्र सोमानी, मंत्री भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी संगठन

इस समय हमारे देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में कोरोना को लेकर भारी कोहराम मचा हुआ है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री के शब्दों में इस महामारी की स्थिति विश्वयुद्ध से भी अधिक भयावह है। ऐसे में आखिर हमारे मन में कई प्रश्न भी उठते होंगे और भविष्य की भयावह कल्पना से भय भी उत्पन्न होता ही होगा। लेकिन इसका समाधान यह नहीं है। सरकार इससे देश को बचाने के लिये अपनी पूरी सामर्थ्य लगा रही है और हमें उसे ऐसे दौर में सम्बल देना है। याद रखें यदि हममें आत्मविश्वास है, तो सफलता अवश्य ही मिलेगी।

त्रिभुवन काबरा, वडोदरा

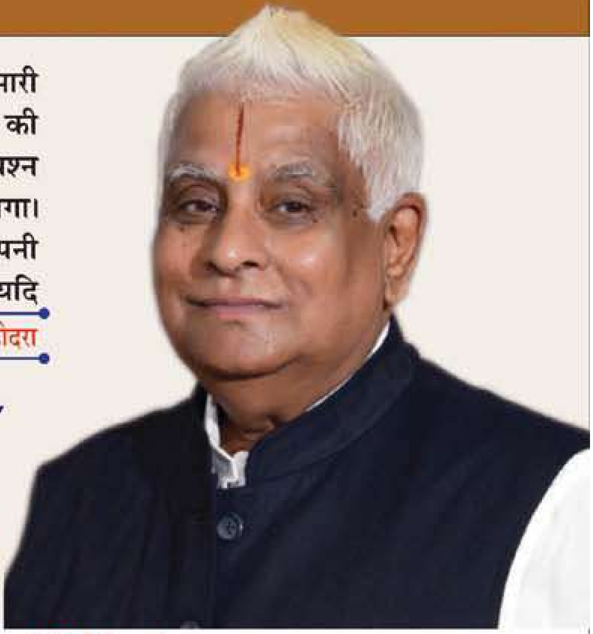

'कोरोना' से डरो 'ना' समझदारी से लड़ो

कोरोना कहाँ से आया? कैसे आया? क्यों आया? कैसे बढ़ा? हमारी सरकार क्या कर रही थी? हमारा गुप्तचर विभाग क्या कर रहा था? हमारा मेडिकल विभाग क्या कर रहा था? समय पर इसपर रोक क्यों नहीं लगाई गई? हमारी वजह से इस रोग का फैलाव होगा क्या ? आदि अनेक सवाल देश की जनता द्वारा किये जा रहे हैं। देश की जनता को यह समझना चाहिए कि यह समय सरकार या किसी और पर आरोप प्रत्यारोप करने का नहीं, बल्कि समस्या की गंभीरता को समझकर इससे उभरने के लिए सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पूर्णतः पालन करने का है। यह हमारा कर्त्तव्य भी है और ऐसा करना हमारी सच्ची देश सेवा भी । प्रथम चरण में सरकार ने 21 दिनों का सम्पूर्ण लॉक डाउन का निर्देश दिया था किन्तु उस दौरान कुछ लोगों ने सार्वजनिक जमावड़ा एवं सीमाओं का उल्लंघन किया जो कि इस वायरस के विस्तृत होने की गति को बढ़ाने में मददगार साबित हुआ। इसके कारण सरकार को मजबूरन लॉक डाउन की अवधि को बढ़ाना पड़ा और तब लॉकडाउन का दूसरा चरण शुरू हुआ।

इनसे लें राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा

दूसरी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हैं, जिनको अपने पूज्य पिताजी के देहांत का दुःखद समाचार कोविड-19 की सभा में प्राप्त हुआ, पर वे विचाराधीन मुद्दे के महत्व को देखते हुए सभा में अंत तक उपस्थित रहे और मंत्रणा समाप्त होने के बाद ही अपनी जगह से उठे। उन्होंने लॉकडाउन में लागू प्रतिबंध की वजह से तथा उत्तर प्रदेश की जनता की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अपने पिता के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होने का निर्णय लिया। साथ ही साथ अपने परिवारजनो को अंतिम संस्कार करते वक्त सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की सख्त हिदायत भी दी जो कि अपने आप में कर्त्तव्य की प्रतिबद्धता का एक अद्वितीय और अनुकरणीय उदाहरण है। यह प्रसंग, रामायण में अपने पिता के अंतिम संस्कार के लिए अनुपस्थित भगवान श्री रामचंद्र जी की याद दिलाता है। हमारे देश की जनता आर्थिक रूप से मुख्यतः तीन वर्गों में बंटी हुई हैं, उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग। जैसा की हम सभी जानते हैं की जब कभी भी देश पर किसी भी तरह की आपदा अथवा विपदा आती हैं तो इसका सबसे अधिक नुकसान निम्न वर्ग को ही भुगतना पड़ता हैं। शायद यही वजह हैं कि वह लोग ही सबसे अधिक तनाव में एवं आर्थिक रूप से कमज़ोर पाए जाते हैं। फिर भी याद रखें हमें हर हाल में धैर्य रख इस महायुद्ध में कोरोना को हराना है।

मानवता के पुजारी हैं कोरोना योद्धा

उन सभी कोरोना हीरो को मेरा हार्दिक नमन, जिन्होंने देशवासियों की सेवा के लिए खुद को पूर्णरूप से भारत माता के नाम न्योछावर कर दिया है। इन हीरो की श्रेणी में डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ, सपोर्ट स्टॉफ, पुलिस, सफाई कर्मी, सुरक्षा दल, सिक्योरिटी गार्ड, ड्राइवर, इलेक्ट्रीशियन आदि ऐसे सभी लोग शामिल हैं, जो प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इस लड़ाई में अपनी पूरे सामर्थ्य के साथ अपना उत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं। देश के औद्योगिक घराने तथा अनेकों सामाजिक संस्थाएं भी इस संकट की घडी में सरकार को प्रत्येक राहत कार्य में यथा संभव मदद कर रहे हैं। देश में अनेकता के बावजूद एकता का सुखद माहौल नजर आ रहा है जो कि भारत की शान में चार चाँद लगाता है। इन प्रतिकूल और विकट परिस्थितियों में केंद्र सरकार तथा सभी राज्य सरकारों एवं उनके कैबिनेट द्वारा लिए गए सभी निर्णय बेहद सराहनीय है। कोरोना वायरस महामारी के इस कठिन वक्त में पूरी दुनियाँ एक तरह से घरों मे स्थिर सी हो गयी है। इस वक्त खाद्य सामग्री की सबसे ज्यादा आवश्यकता है और साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग का पालन पूरी निष्ठा से करना है। हमें जान और जहान दोनों को बचाना है, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को खुशहाल और स्वस्थ पृथ्वी की अद्भुत सौगात दे सकें।

देश हित में सरकार उठा सकती है ये कदम

जिस तरह सरकार ''रेड जोन'' की परिधि में नहीं आने वाले और आवश्यक वस्तुओ के निर्माण तथा निर्माण कार्य कार्य में आवश्यक सेवा देने हेतु कार्यरत हैं, उनको सभी आवश्यक मापदंड के अंतर्गत सुरक्षा के नियमों का पालन करते हुए कार्य शुरू करने की अनुमति दी है। इसी के अन्तर्गत सरकार कुछ सुधारात्मक कदम और भी उठा सकती है। जैसे सरकार को छोटे दुकानदारों को कुछ घंटो के लिए अपना व्यवसाय शुरू करने की अनुमति देनी चाहिए। सभी दुकानदारों को व्यवसाय करने का मौका मिल सके, इसके लिए एक एरिया में एक दिन 1, 3, 5 नंबर की दुकाने तथा दूसरे दिन 2, 4, 6 नंबर की दुकाने खोली जा सकती हैं। इससे सुरक्षा और सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों का पालन भी होगा और देश की अर्थव्यवस्था को सशक्त करने में मदद भी होगी। प्रत्येक वर्ग के लोगो को उनकी जरुरत के हिसाब से पैकेज देना चाहिए। आयकर नियमावली में ऐसे उदार संशोधन करने चाहिए, जिससे एक तरफ करदाताओं को राहत मिले और कर दाताओं की संख्या में भी वृद्धि हो सके।

वर्तमान दौर में शब्द ''कोरोना'' भय का पर्याय बन चुका है। कारण है इसका मौत की ऐसी महामारी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में फैलना, जिसका कोई उचित इलाज अभी उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में तमाम देश जो भी प्रयास कर रहे हैं, वह है सिर्फ इससे बचाव क्योंकि चिकित्सा के लिये तो अभी शोध चल रहा है।

कोरोना
सिर्फ सावधानी ही सुरक्षा

डॉ. रूचिता लोहिया, वर्धा

कोरोना यानी कोविड-19 के बढ़ते प्रकोप के साथ जनमानस की चिंता भी बढ़ती जा रही है। वायरस का नाम है 'कोरोना' और इसके संक्रमण से होने वाला रोग (covid-19) है। मतलब कोरोना वायरस डिसीज है और 19 इसलिए क्योंकि इसका पहला मामला 2019 दिसम्बर में सामने आया। दरअसल यह सिर्फ एक वायरस नहीं बल्कि वायरस का समूह है। इससे कोई भी संक्रमित हो सतर्क रहना आवश्यक है। इससे खुद को कैसे सुरक्षित रखना है, आप क्या क्या कर सकते हैं, यह जानना जरूरी है।

न करें लक्षणों को नजर अंदाज

कोरोना के संक्रमण से भयभीत होने के बजाय संक्रमण से बचना चाहिए। बुखार, गले में दर्द या जुकाम है तो जरूरी नहीं है कि यह कोरोना संक्रमण ही हो। ये मौसमी जुकाम या फ्लू भी हो सकता है। मौसमी फ्लू व साधारण सर्दी जुकाम का आसान इलाज मौजूद है। ये इससे अधिकतम 4 दिनों में काफी हद तक ठीक हो जाते हैं। लेकिन यदि यह अवधि 5 से 7 दिन हो गई और कोई लाभ नहीं हो रहा है, तो छुपायें नहीं, डॉक्टर को अवश्य दिखाकर आवश्यक परामर्श लें। ऐसी स्थिति में कोरोना से प्रभावित होने की आशंका बढ़ जाती है। यदि इन स्थितियों को नजरअंदाज किया गया तो ये न सिर्फ स्वयं के लिये अपितु आपके परिवार व अन्य अपनों के लिये भी खतरनाक साबित हो सकता है।

स्वास्थ्यवर्धक आहार लें

इस बीमारी से बचाव के लिये हमें हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर भी ध्यान देना चाहिए। उम्र बढ़ने के साथ-साथ दमा, ब्रॉन्काइटिस जैसी श्वास की परेशानियाँ भी होने लगती है। हृदय संबंधी दिक्कतें भी होती हैं। विटामिन - सी युक्त फलों का सेवन करें। हालांकि इसका कोई प्रमाण नहीं है कि ये कितना लाभ करेंगे, पर इसके सेवन से शरीर को बीमारियों से लड़ने की ताकत मिलती है। सूखे मेवे अखरोट, बादाम और खजूर में जरूरी विटामिन-सी नियासिन और रायबोफ्लेविन बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं। विटामिन ई ऐंटीऑक्सीडेंट्स भी है, जो शरीर की कोशिकाओं को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं।

भ्रांतियों से रहें दूर

भ्रांति - लहसुन खाने से दूर होगा कोरोना वायरस?

तथ्य - ये बात पूरी तरह गलत है क्योंकि लहसून में एंटीबेक्टिरियल गुण होते हैं। लेकिन इसका कोई अभी तक वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं है।

भ्रांति - तापमान बढ़ने पर वायरस कम हो जाएगा?

तथ्य - इस बात का अभी कोई संकेत नहीं। हाँ पर वायरस का ट्रांसमिशन यानि एक से दूसरे को फैलना काफी हद तक कम हो जायेगा।

भ्रांति - क्या गोमूत्र या गोबर इस वायरस को रोक सकते हैं?

तथ्य - इस वायरस का प्रभाव मनुष्यों और जानवरों दोनों पर समान है और डब्ल्यूएचओ के अनुसार कोरोना वायरस दोनों के मल से भी फैल सकता है।

भ्रांति - अल्कोहोल के सेवन से वायरस मर जाता है?

तथ्य - नहीं। अल्कोहोल आधारित सैनिटाइजर का इस्तेमाल संक्रमण से बचने के लिए जरूर करना चाहिए। अल्कोहोल और क्लोरिन दोनों ही कीटाणु रहित सतहों के लिए उपयुक्त है।

भ्रांति - कोरोना वायरस मच्छर के काटने से फैल सकता है?

तथ्य - यह एक श्वसन वायरस है। कोई संक्रमित व्यक्ति जब खांसता है या छींकता है, या नाक साफ करता है, तो उससे फैलता है। मच्छर का इस वायरस से संबंध है या नहीं, कहना मुश्किल है।

भ्रांति- क्या मास्क पहनना हर एक को जरूरी है?

तथ्य - जब किसी सार्वजनिक स्थान पर जाना जरूरी हो, तो मास्क या रूमाल लगाकर ही जाएं। इससे आप बार- बार मुंह नाक को हाथ लगाने से बचेंगे और अगर वहां किसी सतह या वस्तु पर वायरस हुआ तो उससे भी बचेंगे।

भ्रांति - पालतू जानवरों द्वारा यह वायरस फैलता है?

तथ्य - नहीं, किंतु आपको जानवरों के साथ सीधे संपर्क में आने से बचना चाहिए तथा हाथों को साबुन से जरूर धोएं।

क्या 100 साल बाद फिर नये रूप में आयी
मौत की महामारी

जिस तरह कोरोना महामारी अपना मौत का महाजाल फैलाती जा रही है, इसने पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया है। कभी कोई भी यह कहने की स्थिति में नहीं है कि मौत का तांडव कहाँ जाकर रूकेगा? इतिहासकार इसे लगभग 102 वर्ष पूर्व आयी महामारी 'स्पेनिश फ्लू' का नया रूप भी कह रह हैं। यह वह भयानक महामारी थी, जिसने पूरी दुनिया में लाशें बिछा दी थीं। आईये जानकारी के लिये झांकें इतिहास के पन्नों में।

नीरज त्यागी, गाजियाबाद

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस से लड़ रही है। ये वायरस लगभग सभी देशों में फ़ैल चुका है।पूरे दुनिया में कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। कोरोना वायरस की इस महामारी ने लोगों को 1918 के स्पेनिश फ्लू की याद दिला दी है। उस दौर में जिस तेजी से ये संक्रमण फैला था और जितनी मौतें हुई थी, उससे पूरे दुनिया को हिला दिया था।102 साल पहले पूरी दुनिया में स्पेनिश फ्लू के कहर से एक तिहाई आबादी इसकी चपेट में आ गयी थी। कम से कम पाँच से दस करोड़ लोगों की मौत इसकी वजह से हुई थी। रिपोर्टस के मुताबिक स्पेनिश फ्लू की वजह से करीब पौने दो करोड़ भारतीयों की मौत हुई है, जो विश्व युद्ध में मारे गए लोगों की तुलना में ज्यादा है। उस वक्त भारत ने अपनी आबादी का छह फीसदी हिस्सा इस बीमारी में खो दिया था। मरने वालों में ज्यादातर महिलाएँ थीं। ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि महिलाएँ बड़े पैमाने पर कुपोषण का शिकार थी। वो अपेक्षाकृत अधिक अस्वास्थ्यकर माहौल में रहने को मजबूर थी। इसके अलावा नर्सिंग के काम में भी वो सक्रिय थी।

महाकवि निराला के शब्दों में वह महामारी

कहा जाता है कि गांधी जी भी इससे प्रभावित हुऐ थे लेकिन वे और उनके सहयोगी किस्मत के धनी थे कि सब बच गए। हिंदी के मशहूर लेखक और कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की बीवी और घर के कई दूसरे सदस्य इस बीमारी की भेंट चढ़ गए थे।उन्होंने बाद में इस सब घटना चक्र पर लिखा भी था कि मेरा परिवार पलक झपकते ही मेरी आँखों से ओझल हो गया था।' वो उस समय के हालात के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं कि गंगा नदी शवों से पट गई थी। चारों तरफ इतने सारे शव थे कि उन्हें जलाने के लिए लकड़ी कम पड़ रही थी। ये हालात तब और खराब हो गए थे जब खराब मानसून की वजह से सुखा पड़ गया और आकाल जैसी स्थिति बन गई। इसकी वजह से बहुत से लोगो की प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई थी।शहरों में भीड़ बढ़ने लगी। इससे बीमार पड़ने वालों की संख्या और बढ़ गई। बॉम्बे शहर इस बीमारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ था। उस वक्त मौजूद चिकित्सकीय व्यवस्थाएं आज की तुलना में और भी कम थीं। हालांकि इलाज तो आज भी कोरोना का नहीं है लेकिन वैज्ञानिक कम से कम कोरोना वायरस की जीन मैपिंग करने में कामयाब जरूर हो पाए हैं. इस आधार पर वैज्ञानिकों ने टीका बनाने का वादा भी किया है।

स्पेनिश फ्लू और कोरोना दोनों में समानता

इन दोनों ही महामारियों के फैलने के बीच भले ही एक सदी का फासला हो लेकिन इन दोनों के बीच कई समानताएं दिखती हैं। संभव है कि हम बहुत सारी जरूरी चीजें उस फ्लू के अनुभव से सीख सकते हैं। उस समय भी आज की तरह ही बार-बार हाथ धोने के लिए लोगों को समझाया गया था और एक दूसरे से उचित दूरी बनाकर ही रहने के लिए कहा गया था। सोशल डिस्टेंसिंग को उस समय भी बहुत अहम माना गया था और आज ही की तरह लगभग लॉक डाउन की स्थिति उस समय भी थी। इतने सालों बाद भी वही स्थिति वापस हो गई है। स्पेनिश फ्लू

की चपेट में आए मरीजों को बुखार, हड्डियों में दर्द, आंखों में दर्द जैसी शिकायत थीं। इसकी वजह से महज कुछ दिन में मुंबई में कई लोगों की जान चली गई। एक अनुमान के मुताबिक जुलाई 1918 तक 1600 लोगों की मौत स्पैनिश फ्लू से हो चुकी थी। केवल मुंबई इससे प्रभावित नहीं हुआ था। रेलवे लाइन शुरू होने की वजह से देश के दूसरे हिस्सों में भी ये बीमारी तेजी से फैल गई। ग्रामीण इलाकों से ज्यादा शहरों में इसका प्रभाव दिखाई दिया।

टीकाकरण से हुई थी रोकथाम

बॉम्बे में तेजी से फैलने के बाद इस वायरस ने उत्तर और पूर्व में सबसे ज्यादा तांडव मचाया। ऐसा माना जाता है कि दुनियाभर में इस बीमारी से मरने वालों में पांचवां हिस्सा भारत का था। बाद में असम में इस गंभीर फ्लू को लेकर एक इंजेक्शन तैयार किया गया, जिससे कथित तौर पर हजारों मरीजों का टीकाकरण किया गया, जिसकी वजह से इस बीमारी को रोकने में कुछ कामयाबी मिली। हालांकि बाद में कुछ बाते सामने आई। सन 2012 की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के जिन हिस्सो में अंग्रेजो की ज्यादा बसावत थी।उन हिस्सों में इस बीमारी ने ज्यादा कहर मचाया था।इन हिस्सो में भारतीय इस महामारी में सबसे अधिक मारे गए थे।अब एक बार फिर से कोरोना के बढ़ते कहर की वजह से लोग बेहद आशंकित हैं। फिलहाल सरकार और दूसरी संस्थाएं लगातार लोगों को इस गंभीर वायरस से बचाव को लेकर कोशिश में जुटी हुई हैं।

पहलें भी आये थे लोग मदद के लिये आगे

आखिरकार गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सेवी समूहों ने आगे बढ़कर मोर्चा संभाला था। उन्होंने छोटे-छोटे समूहों में कैंप बना कर लोगों की सहायता करनी शुरू की, पैसे इकट्ठा किए, कपड़े और दवाइयां बांटी थी। नागरिक समूहों ने मिलकर कमेटियां बनाईं। एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, 'भारत के इतिहास में पहली बार शायद ऐसा हुआ था, जब पढ़े-लिखे लोग और समृद्ध तबके के लोग गरीबों की मदद करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में सामने आए थे। आज की तारीख में जब फिर एक बार ऐसी ही एक मुसीबत सामने मुंह खोले खड़ी है तब सरकार चुस्ती के साथ इसकी रोकथाम में लगी हुई है लेकिन एक सदी पहले जब ऐसी ही मुसीबत सामने आई थी, तब भी नागरिक समाज ने बड़ी भूमिका निभाई थी। जैसे-जैसे कोरोना वायरस के मामले बढ़ते जा रहे हैं, इस पहलू को भी हमें ध्यान में रखना होगा और सभी लोगों को मिलकर इस बीमारी की लड़ाई में आगे बढ़ना होगा।

॥ जय श्री कृष्ण ॥

भगवान श्रीकृष्ण की ब्रजभूमि गोवर्धन में परिक्रमा मार्ग में
'श्री गिरिराजधरण माहेश्वरी सेवा टस्ट'
द्वारा संचालित अत्याधुनिक सुविधायुक्त माहेश्वरी भवन

माहेश्वरी भवन, गोवर्धन

आन्योर परिक्रमा मार्ग, दानघाटी के पास, गोवर्धन 281502 (उ.प्र.)
दूरभाष- 0565-2815832, मो. 88591-11222
www.mbgoverdhan.com
E-mail : mbgoverdhan@gmail.com

आप अपना आरक्षण ऑन लाईन अथवा फोन से करवा सकते हैं

उपलब्ध सुविधायें

- 26 डीलक्स ए.सी. कमरे (डबल-बेड) इन कमरों में ए.सी., गीजर, मिनिफ्रीज, डिजिटल लॉकर, टीविल आदि की सुविधायें
- 26 एसी कमरे (डबल बेड) गीजर की सुविधा सहित।
- 4 ए.सी. कमरे (3 बेड) गीजर की सुविधा सहित।
- 2 एसी मिनी हॉल (10बेड)
- 46 कूलर युक्त कमरें (डबल बेड)
- 2 मिनी हॉल (6बेड) एयर कूलर सहित
- 1 डोरमेट्री (24बेड) एयर कूलर सहित
- 1 एसी डाइनिंग हॉल एवं किचन
- सभी कमरों में अटेच लेट-बॉथ की सुविधा।
- सत्संग हॉल 200 व्यक्तियों की बैठकर कथा सुनने की व्यवस्था (शीघ्र एसी युक्त होगा)
- 2000 स्क्वेयर फीट का किचन एवं डाइनिंग हॉल निजी उपयोग के लिये, जिसमें यात्री अपने रसोइयों द्वारा भोजन बनवा सकते हैं।
- दोनों भवनों में लिफ्ट की सुविधा।
- कारों एवं बसों की सुरक्षित पार्किंग का स्थान।
- पॉवर कट के समय निरंतर विद्युत सप्लाई के लिये 125 केवीए एवं 25 केवीए के जनरेटर।

बजरंगलाल बाहेती (अध्यक्ष)
मो.- 98290-79200
विनोद कुमार बांगड (महामंत्री)
मो. 094142-12835
जुगल किशोर बाहेती (कोषाध्यक्ष)
मो. 98291-56858

श्री द्वारिकाधीश विजयते

भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि

द्वारकाधाम

में 'श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट' द्वारा संचालित
अत्याधुनिक सुविधायुक्त एकमात्र माहेश्वरी अतिथि गृह

माहेश्वरी सेवा कुंज

21, द्वारकेश पार्क सोसायटी (अम्बुजा प्लाट), नागेश्वर रोड,
देवभूमि द्वारका-361335 (गुजरात),
दूरभाष- 02892-235553 / 235554, मो. 097271-22111
E-mail : maheshwarisewakunj@gmail.com

उपलब्ध सुविधायें

- ए.सी. व टी.वी. से सुसज्जित 47 डबल बैडरूम (अटैच्ड लैट, बॉथ)।
- 4 फैमिली ए.सी. हॉल (6 व्यक्तियों की क्षमता वाले)।
- अत्याधुनिक किचन के साथ वातानुकुलित भोजनशाला।
- वाई–फाई सुविधा से युक्त पूरा भवन
- विभिन्न मंजिलों पर जाने के लिये दो लिफ्ट की सुविधा।
- स्वच्छ आर ओ पेयजल की सुविधा
- भव्य एयरकंडीशन सत्संग हॉल।
- कार पार्किंग की सुरक्षित व्यवस्था।

श्यामसुंदर कासट
अध्यक्ष
मो.- 098315-55555
रामस्वरुप जैथलिया
कार्यकारी अध्यक्ष
मो.- 096490-79999
विनोद कुमार बांगड
महामंत्री
मो. 094142-12835
गोविंद गोपाल सोनी
कोषाध्यक्ष
मो. 98240-26961

लोकडाउन एवं कोरोना जैसे महामारी ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था बिगाड़ दी और इससे भारत भी अछूता नहीं रहा। भारत की दो डेसिमल जीडीपी ग्रोथ अब घटकर शून्य से दो प्रतिशत के बीच आंकी जा रही है। लोकडाउन के बाद मजदूर का नहीं मिलना तथा स्माल ट्रेडस का अस्थिर भविष्य जैसे घटनाक्रम इस महामारी के बाद होने की संभावना है। हम सभी को नए अवसर खोजने के लिए तैयार रहकर अपने आपको एडजेस्ट करना भी सीखना होगा। आईये जानें इस विपदा के समय कैसे अवसर ढूंढ कर इस महामारी के पश्चात आने वाले समय का हम मुकाबला कर सकें।

कोविड-19 के पश्चात आने वाले समय का मुकाबला

सीए आर.एल. काबरा, मुंबई

यह तो समय ही बतायेगा कि लॉकडाउन पूरी तरह से खुलने के बाद क्या अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटेगी तथा किस तरह की परेशानियां बढ़ेंगी? व्यवसाय करने वालों को दुकान का किराया और काम करने वाले वर्कर्स की सैलरी तथा पेमेंट करना पड़ रहा है, जबकि बिजनेस ठप्प हो गया है तथा छोटे ट्रेडर्स की कमर टूट गई है। लॉकडाउन खुलने के बाद भी लोग जरूरत के सामान पहले खरीदेंगे तथा इलेक्ट्रॉनिक सामान, कपड़े, फर्नीचर, ड्राई फूडस, मकान, मनोरंजन, प्लेजर, ट्रीप, विदेश यात्रा एवं लक्जरी सामान को खरीदने को महत्ता कम देंगे एवं इसे अगले वर्ष के लिए टाल देंगे। इससे सीधा अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ेगा। जैसा कि आप को विदित होगा, सिर्फ भारत में ही लाकडाउन के प्रथम चरण में आठ लाख करोड़ रुपयों का घाटा अनुमानित है। आज के समय किसी को भी इसकी गहराई तथा थमने का अंदाजा नहीं है। इसके लिये जरूरी है कि अभी से प्लॉनिंग की जाए।

नयी परिस्थितियों की करें तैयारी

सोचना तो यह है कि इस महामारी के पश्चात हम कैसे व्यवसाय को मजबूत एवं तीव्रता से नई ऊंचाईयों पर ले जाएंगे। यह समय शायद चिरकाल तक याद रहेगा और इससे हमें काफी कुछ सीखने को मिलेगा जो शायद हमारे जीवन को अलग ही मोड़ पर ले जाएगा। बिजनेस को जारी रखने के लिए आपको इंटरनल एवं बाहरी चेलेंजों का आंकलन करना होगा तथा लिक्वाडिटी को ध्यान में रखते हुए स्टॉफ, कर्मचारियों, ग्राहकों एवं उत्पाद की पॉलिसी तय करनी होगी। यदि जरूरत पड़े तो आपको वेतन एवं किराये में कटौती तथा खर्च में किफायत करनी होगी। स्थिति सुधरने में एवं गाड़ी पटरी पर आने में शायद यह वर्ष निकल जाये। उदाहरणतः बिग बाजार एवं फ्यूचर ग्रुप ने यह सोचना चालू कर दिया है कि कैसे उनके रेंट के खर्चों में कटौती हो। पूरे देश में उनके करीबन 1700 स्टोर हैं तथा लगभग 1500 करोड़ रुपये का किराया देते हैं।

निर्यात बनेगा बड़ी चुनौती

महामारी से भारत का लगभग अधिकांश एक्सपोर्ट प्रभावित हुआ है तथा अब आपके उद्योग में मार्केट का बदलाव आयेगा। जहां तक हो सके आप अपना माल देश में ही बेचकर आत्मनिर्भर बने। महामारी की समाप्ति पर आपको हर तरह की सोच रखकर अपने बिजनेस मॉडल तैयार करने होंगे तथा आपको अपने तजुर्बे, अपने निवेशकों, आप ही के बराबर उद्योग की, समाज की, राष्ट्र की एवं विश्व में हो रहे परिवर्तनों की संज्ञावाना लेनी होगी। यह जरूर सच है कि लॉकडाउन के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है लेकिन इसकी समाप्ति के पश्चात आपकी ऑफिस कार्यप्रणाली, शिक्षा, स्वाथ्य एवं बिजनेस मॉडल गेम चेंजर साबित हो सकते है। अतः आपको समय अनुसार कदम उठाना है। आपको अपने ग्राहकों को कुछ हटकर आकर्षित करना होगा जैसा कि आपके माल की कीमत सबसे कम है या आप उसी कीमत में कुछ वैल्यू एडिशन कर रहे हैं, जैसे कि किराना व्यापारी उसी कीमत पर दुकान की

जगह घर पर फ्री डिलीवरी दे सकते हैं। प्रोफेशनल अपनी रेगुलर सेवाओं के साथ कुछ नई सेवाएं किफायती कीमतों पर देवे या आइसक्रीम कंपनियां अपना बिजनेस चेंज करके दूध वितरण का कार्य तथा घर पर फ्री डिलीवरी देवें। आप अपने व्यवसाय एवं सप्लाई चेंज को डिजिटल प्रणाली से जोड़ें।

सकारात्मक परिस्थिति का करें स्वागत

ऐसा मानना है कि विश्व मंदी के बावजूद भारत महामारी के बाद भी सबसे तेजी से विकास करेगा। सरकार की सकारात्मक सोच को देखते हुए कुछ विकसित देशों ने अपना "मैन्युफैक्चरिंग बेस" चाईना से हटाकर भारत में लगाने की सोच रखी है, इससे प्रधानमंत्री के पांच ट्रिलियन इकोनॉमी की सोच में यह कदम एक मिल का पत्थर साबित होगा। भारत की सीमाओं से लगे दूसरे देशों का निवेश अब सरकारी मंजूरी मिलने पर ही संभव होगा। सरकार ने अपने एक्शन प्लान में उद्योगों के लिए कई तरह के कदम उठाये हैं, बैंकों को कुछ हद तक कंपनियों के वर्किंग केपिटल पर ब्याज कम करना, प्रोविडेंस फंड सरकारी मदद से जमा करना, लोन इंस्टालमेंट एवं ब्याज को आगे बढ़ाना, नई इंडस्ट्रीज को बढ़ावा जैसे कई फायदे कम्पनियां ले सकती है। अतः आप सोच एवं सलाह करें कि क्या आप भी अपनी बिजनेस में इसका फायदा ले सकते हैं। इस विश्व मंदी से अमेरिका में अपने दिए बैंकों के लोन अथवा निवेश में काफी नुकसान हुआ है, जो और भी बढ़ने की सम्भावना है। भारतीय बैंकों में भी आने वाले समय में दिये गये ऋणों को समय पर नहीं चुकाने से एनपीए बढ़ने की सम्भावना है। देखना यह है कि कहीं आप ऐसी परिस्थिति में नहीं उलझे।

हर परिस्थिति के लिये रहें तैयार

आप यह मानकर चलिये कि महामारी एवं लॉकडाऊन की समाप्ति के पश्चात आर्थिक मंदी तो है ही और कल क्या होगा यह कहना मुश्किल है। किसी ने ऐसा समय आज तक नहीं देखा है। आपदा है, परिवर्तन होगा लेकिन मायूसी की बात नहीं है। हमें स्थितियों को स्वीकार करना होगा। चिंता मुक्त रहकर ही हल खोजे जा सकते हैं। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए मैं समाज बंधुओं को यही राय दूंगा कि कुछ कार्यों में जैसे कि विदेश यात्रा, बाहर खाना, अनावश्यक यात्रा, सोशल डिस्टेंस, मास्क का इस्तमाल, भीड़-भाड़ से बचना इत्यादि से सावधानी बरतें। यह सोचें कि व्यवसाय के लिए एक नया मोड़ आया है और इसमें क्या अवसर मिल सकते हैं? ताकि आप देश, समाज एवं अपने परायों की देखभाल करते हुए भी एक नई ऊंचाइयों पर पहुंच सकें। कुछ समय के लिए अपनी तरल पूंजी बनाये रखें। वेतन भोगी लोग रोजगार के नए तरीकों में ढलने की सोच बनाये जैसे कि वर्क फ्रोम होम, डिजिटल व्यवस्था तथा मितव्ययी रहें। आगे पीछ अवसर हमारी तरफ जरूर आयेंगे, इसी आशा के साथ अभी हाल फिलहाल आप घर पर रहें, सुरक्षित रहें एवं सरकारी आदेशों का पालन करें।

(लेखक अ.भा.मा. महासभा के अर्थमंत्री हैं।)

बहुप्रतिक्षित डायरेक्टी प्रकाशित...

श्री माहेश्वरी मेलापक

विवाह योग्य युवक-युवतियों की विश्वस्तरीय डायरेक्ट्री

- 800 अधिक प्रोफेशनल बॉयोडेटा
- विभिन्न वर्गों के लिये भिन्न-भिन्न पृष्ठ
- उत्कृष्ट बॉयोडाटा व आकर्षक कलेवर आज ही
- आज ही सुरक्षित करवाएँ अपनी प्रति

पृथक से प्रति बुक करवाने के लिए शुल्क मात्र (डाक खर्च अतिरिक्त)

अब रिश्ते आयेंगे - आपके द्वार

'श्री माहेश्वरी मेलापक'

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता क्रं.-31725815057

IFSC Code-SBIN0030062

में जमा कर जमापर्ची की छायाप्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

हाईटिक व प्रोफेशनल युवक-युवतियों की पहली पसन्द

90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे), इंदौर रोड, उज्जैन (मप्र)

मो.- 96305-62161, 74770-72161, 94250-91161

e-mail : srimaheshwarimelapak@gmail.com

‘कोरोना’ में सजी सृजन की फुलवारी

कोरोना महामारी अपने साथ जीवन की चुनौती और संघर्ष लेकर आयी तो साथ ही लॉकडाऊन के कारण वह पल भी लेकर आयी, जिसे हम अपने ‘मन का’ करने के लिये जीवन भर तलाशते रहे। आईये इस दौर में काव्य की सूर-लहरी से भी दो-चार हो लें।

कभी देखा है ?

कभी देखा है ?

झिलमिलाते नील गगन को
सोती फुटपाथों को
विश्रमित रास्तों को
बंद घरों को, शोर के छिपने को......

अमृत कण बिखराती हवाओं को
साँसों को सुगंधित करती फ़िज़ाओं को
फूलों को जी भर जी लेने को
पेड़ों को सीना तान साँस लेने को.....

बर्फ़ को बर्फ़ीला रहते
नदियों को निर्मल प्रवाहित होते
पहाड़ों को ऊँचाई का एहसास करते
बरसात के पानी को गंगाजल होते .....

चौखट पर लगी पाबंदी को
दिन और रात की जुगलबंदी को
घड़ी को समय दिखाना भूलते
पाँवों को पगडंडी के लिए तरसते.....

अंतर्मन से दीदार करती दीवारों को
घर आँगन में गूँजती हँसी को
बच्चों की नटखट आहट को
परिवार में परिवार देखने की ख़ुशी को.....

आज को कल के इंतज़ार में तरसते
ईश्वर को भक्तों के लिए तड़पते
सुबह और शाम को बड़े आकार लेते
बंधी ज़ंजीरों को तोड़ने बिलखते.....

वक़्त करेगा इंतज़ार....
फिर मिलेंगे, फिर चलेंगे.....

कमल गाँधी, कोलकाता

लॉक डाउन-पैकेज और प्यार

इतनी दूर मैं क्यों आ गई, छोड़ सलौने प्यार के दिन
याद आ रहे रह-रहकर वो मुझको घर-परिवार के दिन

सोमवार गाजर का हलवा, मंगल रोटी मक्की की
बुध को मम्मी के हाथों की बारी बेसन चक्की की
गुरु गुड़ का खिचड़ा, शुक्कर को पापा लाते हैं रबड़ी
शनिचर को है फलाहार तो साबूदाने की खिचड़ी
रोज-रोज लगता है घर में जैसे हों त्यौहार के दिन
याद आ रहे रह-रहकर वो मुझको घर-परिवार के दिन

दादा-दादी संग ताश की बाजी जब-तब है जमती
बड़ा मजा आता है जब दादी की डांट नहीं थमती
इसीलिए बेइमानी कर हम उनको रोज चिढ़ाते हैं
पत्ता होते भी उनके इक्के को कट कर जाते हैं
हंसी-ठिठौली बीच-बीच में दादी की फटकार के दिन
याद आ रहे रह-रहकर वो मुझको घर-परिवार के दिन

माँ की ना सुनती तो मुझको वो ही रोज जगाता था
रुक-रुककर कानों में मेरे तिनकों से खुजलाता था
फिर भी अगर न जगती, च्यूंटी भर-भरकर छुप जाता था
गुस्सा करती, कान पकड़कर हौले-से मुस्काता था
छेड़छाड़ वह भैयू की और उस मीठी तकरार के दिन
याद आ रहे रह-रहकर वो मुझको घर-परिवार के दिन

मुझको तनिक बुखार हुआ माँ कितनी चिन्तित हो जाती
गीली पट्टी माथे रख वो एक मिनिट ना सो पाती
खांसी का ठसका सुन पापा इतने घबरा जाते थे
बात ज़रा-सी लेकिन डाक्टर अंकल को ले आते थे
भूल नहीं पाती हूँ प्रतिपल वो मेरे उपचार के दिन
याद आ रहे रह-रहकर वो मुझको घर-परिवार के दिन

सर्विस तो सर्विस है झिड़की सुनना पड़ती अफसर की
पैकेज के लिये आई हूँ, सोचा करती अक्सर ही
डांट अगर पड़ जाये तो फिर माथे हाथ फिराये कौन
आंखों में जब आंसू छलकें अपने कण्ठ लगाये कौन
हरेक डांट पर याद आ रहे दादी की पुचकार के दिन
याद आ रहे रह-रहकर वो मुझको घर-परिवार के दिन

हेमन्त श्रीमाल, उज्जैन

कोरोना 'विध्वंसक विषाणु शक्ति'

कोरोना ने मातम का माहौल बनाया,
जीवन के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाया।
कोरोना ने सनातन धर्म याद दिलाया,
हाथ जोड़कर अभिवादन करना सिखाया।
कोरोना ने आँख, नाक व मुँह को अपना प्रवेश द्वार बनाया,
हमने भी स्वच्छता के नियमो को पूर्ण रूप से अपनाया।
कोरोना ने मायूसी का प्रसार किया,
हमने भी दृढ़ निश्चय से उसका साक्षात्कार किया।
कोरोना तूने मानव जाति को शिकार बनाया,
पर डॉक्टर ने भी पूर्ण समर्पण से तुझे हराया।
कोरोना तूने गति पर विराम लगाया,
परंतु हमने मानवता पर अटूट विश्वास दिखाया।
कोरोना तूने जन-जन पर कहर बरसाया,
जनमानस के जीवन से खुशहाली को दूर भगाया।
कोरोना तूने आवागमन को बाधित किया,
मेल मिलाप का दस्तूर जीवन से गायब किया।
कोरोना तूने विनाश का रास्ता अपनाया,
हमने भी ईश्वरीय सत्ता पर पूर्ण विश्वास दिखाया।
कोरोना तूने जन-जन में अलगाव को बढ़ाया,
हमने भी अपने सुक्ष्म प्रयासों से जिंदगियों को बचाया।
कोरोना तूने विश्व में सन्नाटे को हर तरफ फैलाया,
हमने भी प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाया।
कोरोना तूने विध्वंस का विकराल स्वरूप अपनाया,
हमने भी एकजुट होकर तुझे हराने का मन बनाया।
कोरोना तूने बेगुनाह मासूमो को निशाना बनाया,
हमने भी अनुशासन में रहकर तेरा विस्तार गिराया।
कोरोना तूने जनता की आजादी पर प्रतिबंध लगाया,
मोदीजी ने भी लॉकडाउन द्वारा बचने का रास्ता सुझाया।
कोरोना तूने महामारी का रूप अपनाया,
हमने भी भारत को कोरोना मुक्त करने का बीड़ा उठाया।
कोरोना तूने विश्व मे मानव पीड़ा को बढ़ाया,
हमे भी पुरातन संस्कृति को छोड़ने का दुष्परिणाम बताया।
कोरोना तूने मृत्यु को अपना लक्ष्य बनाया,
हमने भी एकांत को जीवन रक्षा का शस्त्र बनाया।
कोरोना तूने वैश्विक महामारी बनकर हाहाकार मचाया,
तब विश्व को भारतीय संस्कृति का महत्व समझ आया।
कोरोना तूने विध्वंसक विषाणु शक्ति का रूप अपनाया,
पर भारत ने भी एकजुटता और धैर्य को मूल मंत्र बनाया।

डॉ. रीना रवि मालपानी, पुणे

खुली रहेंगी मधुशाला

बन्द रहेंगे मंदिर मस्ज़िद,
खुली रहेंगी मधुशाला।
ये कैसी महामारी है,
सोच रहा ऊपरवाला।।

नशा मुक्त हो जाता भारत
तो कैसे चलती मधुशाला।
व्यवसाय रुका है उन गरीबों का,
जो नोट की जपते थे माला।।

नहीं मिल रहा राशन पानी,
मगर मिलेगी मधुशाला।
भाड़ में जाए जनता बेचारी,
दर्द में है पीने वाला।।
आपत्ति नहीं जताओ कोई,
खुलने दो ये मधुशाला।
कोराना मुक्त होगा भारत,
जब ठेके पर चलेंगे त्रिशूल और भाला।।

मंदिर मस्जिद बंद पड़े हैं,
मगर खुलेंगी मधुशाला।
ये कैसी महामारी है,
सोच रहा ऊपर वाला।।

मंदिर-मस्जिद बंद कराकर,
लटका विद्यालय पर ताला।
सरकारों को खूब भा रही,
धन बरसाती मधुशाला ।।

डिस्टेंसिंग की ऐसी तैसी,
लाकआउट को धो डाला !
हम सब के व्याकुल हृदयों पर
रस बरसाती मधुशाला!

जयकिशन झंवर

गो कोरोना

ओ कोरोना, सुनो कोरोना, अब जरा थम भी जाओ ना
चुपके से तुम आए हो जहाँ में, चुपके से चले जाओ ना
ओ कोरोना.....

कितना गदर मचाया है, कितनों को रूलाया सताया है
अपने ताण्डव नृत्य से तुमने, लाशों का अंबार लगाया है
हाहाकार मचा कर इतना, हमको ऐसे डराओ ना
चुपके से तुम आए हो...

कैसे हालात, कैसी दुर्दशा, क्या बेरंग माहौल बनाया है
हरी भरी धरा को देखो, तुमने उजड़ा चमन बनाया है
अतिसूक्ष्म कीटाणु होकर, भीषण कोहराम मचाओ ना
चुपके से तुम आए हो...

चिकित्सा और शोध को, लाचार तुमने बना दिया
मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में, ताला तक जड़वा दिया
क्या कहें, किससे कहें, ऐसा कहर बस ढाओ ना
चुपके से तुम आए हो...

रणभूमि के शत्रु बनकर, चारो ओर हड़कम्प मचा रहे
हम भी वीर योद्धा से, पुरजोर साहस दिखला रहें
ना थके हैं ना हारेंगे, तुम खुद ही चले जाओ ना
चुपके से तुम आए हो...

हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बनकर कैदी करें भरपाई
काबिलों को नाकाम बनाना, क़हाँ की है यह चतुराई
दुआ करें सब रहें सलामत,
बस तुम भी अब मान जाओ ना
चुपके से तुम आए जहाँ में,
चुपके से चले जाओना

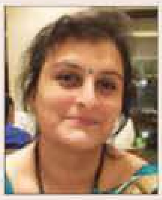

लता राठी, जोधपुर

देख तेरे संसार की हालत.....

देखो तुम्हारे संसार की हालत क्या हो गई भगवान
कितना लाचार है ये इंसान कितना बेबस है इंसान

कोरोना की महामारी से मानव जात की हुई तबाई
घरों में रहकर ही, इस महामारी से करनी है लड़ाई

मनुकुलवासी पर ये कैसा आया है खत्तरों का पहर
न जाने इस 'वैरस' का, आज हवाओं में भी है ज़हर

आया समय बड़ा विकराल इसका न कोई उपचार
घरों में रहना ही बस, एक मात्र करे हम सब विचार

नाच रहा कोरोना खुले में, घरों में छिप बैठे इंसान
नज़र न आये वैरस तो कैसे करना इसका नुक़सान

बंद है दरवाज़े, बंद है खिड़कियाँ, बैठे हार के सारे
संकट की इस घड़ी में हे नाथ जीवित हैं तेरे सहारे

जैसी करनी वैसी भरनी, बात 'राज' लिखके रखनी
राम हो या, हो रहीम सबको भी ये बात है परखनी

-राज मालपाणी 'राज', शोरापुर-कर्नाटक

सौभाग्य भारत माता के लिए

हे कोरोना - अब करूणा बरसाओ ना
इतना भी मत तड़पाओ ना
क्यों किया है तुमने ऐसा वार
सबका जीना हो गया दुश्वार
सब कोई डरे सहमे हुए हैं
ये कर, वो कर, इसी में फंसे हुए हैं
ए कोरोना जैसे अदृश्य आतंकवादी
क्यों कर रहे हो देश की बर्बादी
हाँ कैसी भी हो तेरी यह अतिकृति
यहाँ गाय और गंगा की है संस्कृति
मत करो पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण
करना है भारतीय संस्कृति का अंगीकरण
अब तोड़ना होगा कोरोना का अभिमान
संजीवनी बूटी संग आ जाओ रामभक्त हनुमान
कृतज्ञ हूं मैं उनकी जो है देश के सेवाधारी
हम सबकी लाज बचाने आ जाओ गिरधारी
'उर्मिला' की आज है, गवर-ईसर से अरदास
भारत माँ की संतान नहीं रहे उदास
हर वर्ष मांगती हूं अमर सुहाग अपने लिए
इस वर्ष मांग रही हूं, सौभाग्य भारत माता के लिए

उर्मिला तापड़िया, पाली (राज.)

एकता की अलख

हर दिशा से उठ रही
अराजकता की चिंगारियां

नफरत की आग में
जल रही है मानवता

मैं कौनसी एकता की अलख जगाऊँ
जुंझ रहे है सभी कोरोना महामारी से
मैं दानवों के दल से इंसान कहाँ से लाऊं

हे स्वार्थी मनुष्य, जाति तुम्हें प्रकृति कैसे माफ करेगी
तुम्हे तुम्हारें काले कारनामों की सज़ा जरूर मिलेगी
आंतकी इरादों की हार जरूर होगी
दानवों चेत जाओ तुम्हें क्या दंड की परिभाषा सिखाऊं
मैं दानवों के दल से इंसान कहाँ से लाऊं

कुछ भी न कर पाने की ये हताशा
ये कैसी लाचारी, ये कैसी विवशता
सब कुछ राख हो रहा
सब कुछ खाक हो रहा
कैसे सभी धर्मों से मनुष्य धर्म का मेल कराऊ..
मैं दानवों के दल से इंसान कहाँ से लाऊं

स्वाति 'सरु' जैसलमेरिया

यह कोरोना है जनाब

अतिथि नहीं है जनाब ।
दस्तक से भी नहीं है, इसका कोई काम ।
न मनवार से इसका नाता है।
हर कोई इसे साथ लेकर ही आता है ।
एक बार आए तो,
सबको अपना बना लेता है।
गले से लगाया तो,
आपका होकर रह जाता है।
यह कोरोना है जनाब।

बुलावे पर ही इसको आना है।
नहीं तो सदा के लिए इसने हमें भूल जाना है।
सेनीटाइजर, मास्क से सख्त नफरत रखता है।
यह तो जनाब इंसानों के ही गले पड़ता है।
उपहार में सर्दी,खांसी, खराश ले आता है।
साथ में यमराज का प्रवेश पत्र भी बनवा लाता है।
लेकिन,
एड़िया रगड़ कर ओखली में सिर देना है।
या इतिश्री को अलविदा कहना है।
निर्णय तो अब ले ही लेना है।।

डॉ. शैलजा भट्टड़

दोस्त

जिंदगी में दोस्त होते हैं या दोस्तो में जिंदगी पता नहीं!
बस इतना पता है जिंदगी के धूप में सुकून कि छाव है दोस्त
आबोहवा कितनी भी जहरीली क्यूं ना हो प्राणवायु है दोस्त!
कठिनाइयों में जीतने का जज्बा देते हैं दोस्त!

मिलेंगे हम सब फिर,
जमेगी महफिल फिर,
खूब छूटेंगे हंसी के गुब्बारे,
खूब करेंगे मस्ती,
करेंगे फिर धुमाल, कैद करेंगे कैमरे में दोस्तो की हंसी !

फिरसे खो जायेंगे अपनी क्लासरूम की यादों में
याद करेंगे बचपन की वो नादानियां और लगायेंगे ठहाके !

बस कुछ दिनों की बात है दोस्तों!
खींचेंगे एक दूजे की टांग
फिर चलेंगे साथ-साथ!
अभी दूर रह कर भी निभायेंगे दोस्ती !
बस कुछ दिन कि बात है दोस्तों!
गायेंगे साथ.......
ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे.....

आरती तोष्नीवाल, पुणे

वा रे कोरोना ..

कोरोना ने आज बड़ा सबक सिखा दिया ,
दादी - परदादी के विचारों को फिर से दोहराया गया।
कहती थी कि दादी , इतनी अच्छी नहीं आजादी ,
आधुनिकता की होड़ में करते थे हम मनमुरादी,
आज फिर से वही रास्ते का मोड़ आ गया,
कोरोना ने आज .....

कहती थी कि बेटा हाथ धो कर लेना पानी!
मानते नहीं थे हम, करते थे मनमानी,
आज बार बार साबुन से,
हाथ धोने का समय आ गया
कोरोना ने आज ....

कहती थी की बेटा, छूना ना किसी को !
रहना थोड़ा दूर,
शालीनता सुशीलता में ना रखना तुम कसूर ,
आज फिर से यही सुनने का समय आ गया।
कोरोना ने आज .....

कहती थी कि बेटा, अच्छा नही ये तेरा बहाना !
रात देरी से घर आना ओर होटल का ये खाना,
संस्कार को मेरे तू बेहाल कर गया।
कोरोना ने आज .....

हम सोचते कि पिछड़े विचारों के सब बुढ्ढे,
शुद्धता पर अड़े रहते हैं सब बड़े,
आज विज्ञान भी अध्यात्म को जोर दे गया।
कोरोना ने आज .....

माने ना बात बड़ों की, रहते थे शानशौकत में!
घर परिवार से होकर दूर धन दौलत की लालच में,
आज परिवार के साथ रहने का समय आ गया।
कोरोना ने आज ....

सरोज गट्टाणी, परभणी

कोरोना वायरस महामारी ने जनमानस पर स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक प्रहार किया है जिसकी क्षतिपूर्ति आने वाले समय में बरसों-बरस तक पूरी होती दिखाई नहीं दे रही है। कोरोना के कारण बढ़ता यह संकट दिनों-दिन और भयावह होता जा रहा है। वर्तमान में स्वास्थ की चुनौती तो है ही, साथ ही साथ ही अपनी आजीविका व अर्थव्यवस्था का संकट भी गहराता जा रहा है। अतः इन विकट स्थितियों में हर किसी के मन में भय मिश्रित प्रश्न उत्पन्न होने लगा है कि इस महामारी के कारण विकट होती चुनौतियों से क्या हम निपट पाऐंगे?

समाज ही नहीं बल्कि मानवता के अस्तित्व के लिये महत्वपूर्ण बन चुके इस विषय पर आपसे आपके बहुमूल्य विचार आमंत्रित हैं। इसमें आप अपने विचारों के साथ भावी-भविष्य की सामाजिक और आर्थिक योजनाओं को भी अवश्य साझा करें । आपके अमूल्य विचार निर्मम कोरोना के भावी दुष्परिणामों से निपटने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं । आईये जाने इस स्तंभ की प्रभारी मालेगांव निवासी सुमिता मूंधड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

कोरोना महामारी से उत्पन्न हो रही चुनौतियों से क्या हम निपट पाएंगे?

कोरोना महामारी में अपनी समझदारी

एक तरफ तो कोरोना महामारी के लॉकडाउन की वजह से परिवार और समाज चारदीवारी में सिमट गए हैं। परिवार में एक-दूसरे के साथ समय बिताने से आपसी बंधन मजबूत हुए हैं। भाग-दौड़ और व्यस्तता में ब्रेक लगने से रिश्तेदारों से भी फोन पर कुशल-क्षेम पूछने का भरपूर समय मिल रहा है। हरेक रिश्ते में नवीनता महसूस होने लगी है। दूसरी तरफ व्यापार और काम-धंधे बंद होने के कारण वर्तमान आय नगण्य है, इसलिए घर के कमानेवाले सदस्य के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उसकी मानसिक स्थिति को समझने की कोशिश भी करें। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अनुमानित है कि भविष्य में हमारी पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था पर इसके दुष्परिणाम दृष्टिगोचर होंगे। अगर हम थोड़ा धैर्य, संयम और समझदारी रखें तो भावी विकट परिस्थिति से सरलता से उबर जायेंगे। परिवार के छोटे-बड़े हर सदस्य को अपव्यय से बचना होगा। छोटी से छोटी बचत भी आर्थिक रूप से मददगार होती है। मनोरंजन और मौज-मस्ती पर होने वाले खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। अगर हमारे घर में शादी या कोई कार्यक्रम हो तो अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा से जारी आचार-संहिता का अनुपालन करने से भी हमारी अर्थव्यवस्था डगमगाने से बच जाएगी। साथ ही आवश्यक रीति-रिवाजों को छोड़कर थीम पर आधारित दिखावटी अनावश्यक कार्यक्रमों का आयोजन ना करें, तो यह मेहमान और मेजबान दोनों के लिए श्रेयस्कर होगा। आम दिन हो या खास अवसर हों, गैजेट्स, विधुतीय उपकरणों, सोने-चांदी आदि की खरीददारी पर नियंत्रण करना भी हमारी अर्थव्यवस्था को संभालने में सहायक साबित होगा । लॉकडाउन के कारण व्यापार में नकद की आवाजाही बहुत प्रभावित हुई है ऐसे में गृहिणी भी घर-खर्चों से संचित नकद राशि को अपने घरेलू व्यापार में लगाकर कर्ज पर ब्याज का नुकसान होने से बचा सकती है । **समिता मंधडा**, मालेगांव (नाशिक)

सकारात्मक सोच बनाऐ रखें

जीवन का दूसरा नाम संघर्ष है और यह संघर्ष प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे आता है। संघर्ष को हम दो रूपों में देख सकते हैं, एक संघर्ष हम आगे बढ़ने के लिये करना पड़ता है और दूसरा संघर्ष हमें अपने सामने उत्पन्न बाधाओं को हटाने के लिए करना होता है, जैसे आज पूरे विश्व में कारोना महामारी हा-हाकार हो रही है। यह समस्या लम्बी है, लेकिन मैंने गम्भीरता से सोचा कि दुनिया में जो कार्य सभी के लिये असम्भव हो जाता है, वही कार्य ईश्वर के लिये हमेशा सम्भव होता है। अतः जब कोई समस्या लम्बे समय तक बनी रहती है, लगातार पीड़ा देती है, बहुत प्रयास करने पर भी समाधान नहीं मिलता है, तो इस समस्या तथा पीड़ा से मुक्ति के लिए ईश्वर तक अपनी बात तो पहुंचानी ही होगी। अपना देश धर्म पर टिका है। आज रोग एवं रोगियों की संख्या में बहुत वृद्धि हो रही है। इससे आजीविका व अर्थव्यवस्था पर संकट के बादल छा गया हैं। इन रोगों के जटिल या असाध्य अवस्था में पहुंचने पर रोगियों की मृत्यु भी हो रही है। फिर भी रोग की सही स्थिति में उपाय कर लेने तथा ईश्वर की साधना आराधना तथा सरकार के बताए हुए नियम का पालने से त्वरित लाभ मिलना निश्चित है। जब हम लोग ईश्वर से संबंधित कोई उपाय करते हैं, तो हमारा मनोबल ऊंचा हो जाता है, मन में आशा उत्पन्न होने लगेगी इसलिए ईश्वर अवश्य हमारी रक्षा करेगा। इस बारे में किसी को किसी प्रकार की शंका नहीं होनी चाहिए।

श्यामसुन्दर धनराज लखोटिया, मालेगांव

मितव्ययी बन हों तैयार

संकट के इस समय हर किसी को आनेवाले भविष्य की चिंता होना स्वाभाविक ही है। हम भारतीयों में बड़े से बड़े दुःख को झेलकर, उसे सुख में तब्दील करने का जन्मजात हुनर है, ऊपर में हम मारवाड़ी माहेश्वरी, हम तो दान देने से लेकर वक्त आने पर जमीन पर बैठकर अपना काम निकालने में भी माहीर हैं। हम चाहे बड़े उद्योगपति हों या नौकरीपेशा या मिडल क्लास व्यापारी हम यह संकट आने पर कम में काम कैसे करना, मितव्ययी बनकर किस तरह जीना, यह तो हम हंसते खेलते हुऐ कर लेते हैं। मेरे जैसा आम इंसान न तो ईश्वर की तरह सब त्रिकालदर्शी बनकर सब देख सकता है, न बड़े अर्थशास्त्री की तरह यह बता सकता है कि इस संकट से

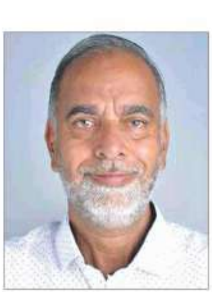

हमें मुक्ति कैसे मिलेगी? मेरा तो मारवाड़ी दिमाग यही कहने की चाह रख रहा है कि हर इंसान पारिवारिक जबाबदारियों का चिंतन कर काम करें, खर्च पर पूरी तरह लगाम लगाये। व्यापार में समय देखकर पूंजी लगायें तो निश्चित रूप हमारा समाज ही नहीं, बल्कि पूरा देश कुछ समय पश्चात इस संकट से बाहर होगा। हम ही नहीं, पूरा विश्व कहेगा हम हर परिस्थिति से निपटने में सक्षम हैं।

सतीश लाखोटिया, नागपुर

स्वास्थ्य संकट का प्रबंधन

करीब पिछले ढाई महीनों से दुनियाभर में आतंक मचाने वाले कोरोना वायरस से दुनिया का हर शख्स किसी न किसी रूप में प्रभावित है। कोरोना को लेकर तमाम तरह के सवाल और गुत्थी बनी हुई है। भले ही अगले कुछ महीनों में कोरोना वायरस के मामले कम हो भी जाए, लेकिन इसके पूरी तरह से खत्म होने में लंबा समय दिखाई दे रहा है। इन सबके बीच राहत की बात यह है कि इसके बढ़ते संक्रमण के साथ ही बहुत से लोगों ने इससे मुक्ति भी पाई है। ये अपने आपमें दर्शाता है कि मानव शरीर की रक्षा प्रणाली को इससे लड़ना आता है। भारत में कोविड-19 की घातकता दर 2.1 यानि तुलना में बेहद कम है। ऐसे में योग, ध्यान व सात्विक भोजन जैसी आयुर्वेदिक जीवनशैली अपनाकर प्रतिरोधक क्षमता बढ़ानी चाहिए, ताकि स्वास्थ्य संकट का प्रबंधन हो सके। याद रखे "मन के हारे हार है और मन के जीते जीत"। हिरोशिमा-नागासाकी विध्वंस के बावजूद जापान दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा इकोनॉमी वाला देश है। अतः सकारात्मक दृष्टिकोण रखें, जिससे हमारे इस संकट में टिके रहने व वापसी करने की संभावना बढ़ जाती हैं। साथ ही कोरोना वायरस से निपटने के लिये सरकार द्वारा दिये गये सभी निर्देशों का पालन करें।

अनुश्री तरूणकुमार मोहता, बुलढाणा (महा.)

ज़िन्दगी कैसी अजीब हो गई है.. खुश दिखना खुश होने से जयादा जरूरी है

बचत ही होगी भविष्य की सुरक्षा

यह समय कुछ नए विचारों पर चिंतन का है, जब दुनिया की लगभग पूरी मानवता अपने घर में कैद है। कोरोना तो एक संकट है, समय आने पर चला जाएगा। पर वह हमारी दुनिया को हमेशा के लिये बदल देगा। सामाजिक, मानसिक, आर्थिक आदि बदलावों को हम किस तरह से स्वीकार करते हैं, यही मानवता के भविष्य की नींव रखेगा। आर्थिक संकट के दौरान आमतौर पर हम जीवन के हर पहलू के बारे में नकारात्मकता से सोचने लगते हैं। यह समस्या शारीरिक रूप से हमें कमजोर करने के साथ भावनात्मक रूप में भी आहत करती है। अतः तनाव ना लें, आखिर यह समय भी टल जाएगा। नई चुनौतियों में ही नये अवसर का निर्माण होगा। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में ही व्यापार का स्थान बना रहेगा। बिना लाभ की व्यापार को अधिकतम समय चालू रखना मुश्किल होगा। जन्मदिन, सालगिरह, किटी पार्टियां होटलों में मनाने और उस बहाने ढेर सारी खरीदी करने में व्यर्थ खर्च टालना होगा। शादी ब्याह में आधुनिकता का प्रदर्शन, दिखावा व होड़ाहोड़ को टालकर सादगी पूर्ण विवाह को बढ़ावा देना होगा। हमें एक साथ कहीं ज्यादा काम करने की दक्षता अपनानी ही होगी। जैसे घर में बैठकर उच्च शिक्षित महिलाओं को "वर्क फ्रॉम होम" से तथा बच्चों की घर में ही टूशन्स, क्लासेस लेकर पैसा बचाना होगा। याद रखें जो लोग अपने समय का मैनेजमेंट कर पाएंगे वही लोग खुद को दूसरे के सामने बेहतर प्रदर्शित कर पाएंगे ।

सरोज घनश्याम गट्टाणी, परभणी (महाराष्ट्र

सकारात्मक सोच व ठोस क़दम आवश्यक

'माना अंधेरा घना है, लेकिन दीप जलाना कब मना है?' निःसंदेह कोरोना एक विश्वव्यापी आपदा है, जिसने अमेरिका, यूरोप, चीन, स्पेन, इटली जैसे देशों को घुटनों पर ला दिया है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए जहाँ जनसंख्या का घनत्व ज्यादा और संसाधन सीमित हैं, ऐसे देश के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है। लंबे लॉकडाउन के चलते देश की अर्थव्यवस्था डगमगा गई है, हर क्षेत्र आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है किंतु यदि लॉकडाउन न किया गया होता तो आज स्थिति अत्यंत भयावह होती। कोरोना के कारण मृत्यु तांडव कर रही होती। अब सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक विकास की दर को गति देना है, इस महामारी की अवधि जितनी ज़्यादा लंबी होगी, उतना ही ज्यादा नुक़सान उठाना पड़ सकता है। भविष्य में चुनौतियों का सामना करने के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों को जीवंत करना होगा। हर व्यक्ति अपनी खुद् की ज़िम्मेदारी समझे और ग़ैर ज़रूरी शॉपिंग न करें, बजट बनाकर चलें, फ़ालतू लोन लेकर अपने खर्चे ना बढ़ाएं, बड़े-बड़े धूमधाम वाले आयोजन कम से कम हों। चुनौतियां कम नहीं हैं किंतु सकारात्मक सोच व संकल्प के साथ उनका सामना करना आवश्यक है। इसमें हम महिलाओं की भागीदारी को नहीं नकार सकते। महिलाओं में व्यापार को संचालित करने की नई सोच को अपनाने की क्षमता है। कई महिला गृह उद्योग अपने आप में ब्रांड बन चुके हैं, वो न केवल स्वरोज़गार प्रदान कर रहे हैं बल्कि दूसरों को भी रोज़गार उपलब्ध करवा रहे हैं। इन उपक्रमों से भारत की अर्थव्यवस्था को मज़बूती प्रदान की जा सकती है। विदेशी वस्तुओं को छोड़कर देशी उत्पादों के अधिक से अधिक उपयोग से देश को आर्थिक मज़बूती दी जा सकती है। आगे आने वाला समय कठिन ज़रूर है, कई संदेह और कई प्रश्न सुरसा के समान मुँह खोले सामने खड़े हैं किन्तु इन सब परिस्थितियों का सामना चातुर्य और हिम्मत से करना होगा।

मनीषा राठी, उज्जैन (म.प्र.)

सकारात्मक दृष्टिकोण जरूरी

आज पूरा विश्व कोरोना की चपेट में है। ऐसी स्थिति में भविष्य के प्रति आशंकित होना स्वाभाविक है। परंतु वर्तमान में सजग रहेंगे तो ही भविष्य सफल होगा, मगर उबरने में मेहनत तो बहुत लगेगी। लॉकडाउन ने जीवन जीने का तरीका सीखा दिया। मितव्ययिता अपनाकर, विस्तृत आवश्यकताओं को सीमित कर, एक-दूजे का हौसला बढ़ाकर

परिश्रम और उम्मीद के सहारे नये कीर्तिमान स्थापित किये जाते हैं। सबसे अहम जरूरत है कि हम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहे। इसके लिये शुद्ध खान-पान के साथ शारीरिक व्यायाम, योगासन, प्राणायाम को दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। स्वच्छता एवम आध्यात्म की संजीवनी से मन और आत्मा को स्वच्छ रखना है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी तभी तो स्वास्थ्य संबंधी खर्चे कम होंगे। उत्सवों पर फिजूलखर्ची व दिखावे से बचना होगा, जो हमारे पास उपलब्ध है वह पर्याप्त है। प्रकृति के व्याकरण को समझकर, यम-नियम-संयम को जीवन में उतारना होगा। रिश्तों को समय देकर पारिवारिक और सामाजिक दूरियों को कम करना होगी। बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने का सही मौका मिला है। इतिहास गवाह है, अतीत में भी हमने प्राकृतिक आपदाओं से लड़कर सफलता की अगवानी की है। अफ़वाओं पर ध्यान न देते हुए, संकीर्णता से ऊपर उठकर, देशहित में मंथन कर, नयी योजनाओं के साथ स्वयं, समाज व देश की मदद करनी है। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर, चुनौतियों का सामना कर, हमें बेहतर दुनिया की ओर अग्रसर होना है।

डॉ. (सौ) सूरज माहेश्वरी, जोधपुर

नये चिंतन का किया शुभारम्भ

कोरोना महामारी की बिभीषिका ने सारे विश्व को नये सिरे से चिंतन को मजबूर किया है। सबसे पहले तो कोरोना ने ये अहसास कराया कि मानव को अपने सर्वशक्तिमान होने के दम्भ से बाहर आ कर प्रकृति के प्रति नजर और नज़रिया बदलना ही होगा। ये एक तरह से तृतीय जैविक विश्व युद्ध ही है, जिसमें हमें बड़ी आर्थिक एवम मानसिक तैयारी के साथ लड़ना होगा। निराश होकर नहीं हौंसलों के साथ अपने नैतिक एवम आध्यात्मिक बल को कवच की तरह सम्बल बनाना होगा। एक सदी पहले भी महामारी ने करोड़ों को अपना ग्रास बनाया पर दर्द और निराशा के अत्यंत गहरे जख्मों से सही रणनीति अपना कर उबर ही गये थे। आने वाला समय निश्चित ही चुनौती पूर्ण है किन्तु चुनौतियाँ ही इंसान को नये द्वार तक ले जाने की राह भी दिखाती है। हमें समय की लय और रफ़्तार के हिसाब से परिवर्तन करने ही होंगे। चिंता के स्थान पर चिंतन आवश्यक है। कितनी भी गहरी रात हो सबेरा होगा किन्तु पहले स्थान पर स्वास्थ्य का ध्यान और निर्देशों का पालन जरूरी है। फिर धीरे धीर जीवन गाड़ी पटरी पर लौटेगी। वक्त की एक खासियत है दोस्तों, कितना भी बुरा हो गुजर जाए है, लेकिन उसके पदचिन्ह हमें अनेक तरह के सबक सिखाते हैं। उनसे ही सीख कर अपने आचरण को नये साँचे में ढाल लेना ही समझदारी है।

पूजा नबीरा काटोल, नागपुर (महाराष्ट्र)

अपना व अपनो का ध्यान रखें

पिछले 48 दिनों से हम इस महामारी से निजात पाने हेतु अनसुने, अनकहे, अनदेखे लॉक डाउन का पालन कर रहे हैं। इसमें हमें परिवार की एकता, नई पीढ़ी की सूझ-बूझ, आपसी प्यार और "महाबला" (अपारशक्ति वाली), खूबसूरत, सबको एक सूत्र में बांधे रखने वाली घर की उस महिला का एक पल भी योगदान विसराना नहीं चाहिए। परिवार के बड़े बुजुर्गों ने घर के छोटे बच्चों की देखभाल और समय समय पर अपनी राय देकर चुनौतियों को ही तो स्वीकारा है। जब परिवार का प्रत्येक पुरूष अपने कार्य छोड़ घर पर ही रह कर अपनी संचित पूंजी का प्रयोग अपनी हैसियत और जरूरत के हिसाब से कर रहा है, तो यह भी तो चुनौती ही है। जब हम अपने आसपास रह रहे गरीब वर्ग, घर के कर्मचारी, ऑफिस और दुकानों पर कार्यरत व्यक्तियों के लिए उनके परिवार को चलाने हेतु घर से ही उनकी तनख्वाह की व्यवस्था कर सक रहे हैं, तो यह भी तो एक महत्वपूर्ण चुनौती ही है। फिर भी याद रखें कि प्रतिरोधों और चुनौतियों से भरा जीवन ही प्रखरता को प्राप्त करता है।

ज्योति नवल किशोर मालाणी, इटारसी

सामाजिक समस्याएं भी हैं

कोरोना वायरस महामारी एक विश्व व्यापी समस्या बन चुकी हैं, जिससे हमारा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व जूझ रहा है। कोरोना महामारी से हमारे देश में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या तो है ही, इसके साथ ही आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक समस्याएं भी जन्म ले चुकी है, जिसकी क्षतिपूर्ति आने वाले कई बरसों तक होती नजर नहीं आ रही है। इस विकट समय में सबसे ज्यादा जरूरी है, हम सभी को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना जिसके लिए हमें अपने घर में रहना ज्यादा जरूरी है। बहुत से लोग जो इस बात का पालन नहीं कर रहे हैं, उनकी वजह से आज हम कोरोना के आंकड़े दिन प्रतिदिन बढ़ते दिख रहे हैं। अगर हम अपने घरों में रहें और सामाजिक दूरी बना कर रखते हैं, तभी हमारा देश स्वस्थ होगा और हम कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में सफल हो पाएंगे। जब कोरोना ही नहीं रहेगा तब देश में चल रही आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जायेंगी।

आरती बाहेती, जयपुर,

कर्म व ईश्वर पर भरोसा जरूरी

कोराना महामारी से जो भी चुनौती हमारे सामने आई है और आगे आने वाली है, उनसे निपटने के लिए हमें अपने आत्मविश्वास व हिम्मत को संजोए रखना होगा और हमें अपने भगवान पर पूरा भरोसा रखना होगा। यदि हमारे अंदर यह भावना होगी, तो हम खुद के साथ दूसरों की भी हिम्मत बढ़ा सकते हैं। भगवान ने हमें यदि ऐसी परिस्थिति दी, तो उससे निपटना भी हमें सिखाया है। पहले हम कभी इस तरह घर की चार दीवारी में नहीं रहे है पर आज हम सब सरकार व खुद का सहयोग कर रहे हैं। याद रखें रात के बाद सवेरा आता है, उसी प्रकार दुःख के बाद सुख आएगा ही। ऐसा हम सब ने अनुभव किया है, तो इस संकट के समय में हम सबको अपना धैर्य बनाए रखना चाहिए, शांति और संतोष व सरलता से जीवन यापन करना होगा। हमें अपने खर्चों पर लगाम लगानी होगी, जिससे अर्थव्यवस्था ठीक रहे। एक-दूसरे की सहायता करनी होगी। देखा-देखी को छोड़कर जो भी बन सके अपना कर्म खुद को करके अपना व सरकार का सहयोग करना चाहिए।

भगवती-शिव प्रसाद बिहानी, आसाम

देश की संस्कृति ही है हमारी शक्ति

भारत एक पौराणिक देश है। इस देश का कई युग-युगांतर का गौरवशाली इतिहास रहा है। सांकृतिक गरिमा लिए इस देश ने कई युद्ध, कई महायुद्ध, कई विभीषिकाएँ व कई अकाल झेले हैं। हर असामान्य परिस्थिति में से ये देश पुनः उठ खड़ा हुआ है। पौराणिक काल में महाभारत के भीषण युद्ध के दौरान लाखोंलाख मानवों का संहार हुआ था, देश जवानों से श्रीहीन हो गया था। ऐसे में जो बच्चे, महिलाएं व वृद्ध बचे थे, उन्होंने शक्तिशाली मानवता को पुनर्जीवित किया व इसक सोने की चिड़िया बना दिया।

आधुनिक काल में अलेक्जेंडर, महमूद गौरी आदि से लेकर बाबर तक आक्रांताओं ने भारत को लूटा खसोटा और बर्बाद कर दिया, लेकिन भारत की संस्कृति को नहीं मिटा सके। तत्पश्चात अंग्रेज आये, राजाओं के राज समाप्त हो गये, प्रजा घोर गरीबी में रही, लेकिन भारत की आत्मा अक्षुण्य रही। इस महान देश ने प्लेग, हैजा, चेचक, टिड्डी दल जैसी महामारियां को झेला व इनकी क्रूर लीलाओं के घात - प्रतिघातों को सहन किया, लेकिन हमारी आध्यात्मिक शक्तियों ने हमारी रक्षा की। आज जो कोरोना का संकट आया है, निःसंदेह ये घातक है, उभरते हुए भारत पर कुठाराघात है। हम पीछे जरूर जावेगे लेकिन गिरेंगे नहीं। हमारी अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। हमारी पृथ्वी माता व किसान, जब तक खेतो में सोना उगाते रहेंगे, तब तक हमारे मेहनती लोग हारेंगे नहीं। दूसरा मुख्य आधार है, भारतीयों की बचत की आदत। भिखारी भी इतना सामर्थवान है कि 2-4 माह के लॉक डाउन से, उसे भी कोई फर्क नहीं पड़ता है। अतः संतोष के धन वाला, सादगीपूर्ण, कम कर्जों वाला, सम्पन्न भारत निर्विवाद रूप से विश्व शक्ति बनकर उभरेगा।

श्रीकांत बागड़ी, उज्जैन

सोचने से कहा मिलते है
तमन्नाओं के शहर
चलने की ज़िद भी जरूरी है
मंज़िल पाने के लिए

नयी परिस्थिति के अनुसार होना होगा तैयार

निःसन्देह इस अनायास आई वैश्विक महामारी ने पूरी मानव जाति को चकित और चिन्तित कर दिया है। हमारी जीवन शैली, सामाजिक व्यवहार, मनोरंजन, भोजन, व्यापार, आय-व्यय, उत्सव, शिक्षा इत्यादि सब कुछ तो बदल कर रख दिया है इसने, और बढ़ा दी है हमारी इंटरनेट पर निर्भरता। वैसे तो अपनी बुद्धि के बल पर मनुष्य ने अनेक चुनौतियों पर विजय पाई है, किन्तु इस बार ये चुनौती चौतरफा है। व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं जीवन यापन के साथ-साथ समष्टि अर्थव्यवस्था को भी सहेज कर रखना है। व्यक्तिगत स्तर पर हमें अपनी पिछली पीढ़ी के समान ही बचत और उपलब्ध धन पर विशेष ध्यान देना होगा। हाथ मिलाने की आदत को भुलाना होगा। स्वच्छता पर अतिरिक्त बल देना होगा। मुँह ढके बिना घर से बाहर नहीं निकल पाएंगे। भीड़-भाड़ वाले आयोजनों और यात्राओं को तो भूल ही जाइये। घर पर बैठ कर ही अपने व्यापार अथवा सेवा को गतिमान रखने के उपाय खोजने होंगे। जो ये सब कर पाएगा वो विजयी होगा और जो इनके उपाय खोजेगा वो अन्य का नेतृत्व करेगा। शासन और प्रशासन को भी भविष्य को देखते हुए सुरक्षा और अर्थव्यवस्था को बागडोर सम्भालनी होगी। सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता एक नियमित दायित्व और रोज़गार बन जाएगा। उद्योगों और कारखानों के संचालन के लिए भी स्वच्छता और सुरक्षा की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होगी। असंगठित उद्योगों और व्यवसायों को भी संगठित क्षेत्र की ओर लाना होगा। सबसे अधिक प्रभावित हुए यात्रा व्यापार को सभी गंतव्यों की स्वास्थ्य सम्बन्धी पूर्व सूचना उपलब्ध करवानी होगी। चिकित्सा व्यवस्था को बहुत तीव्रता के साथ उच्च स्तरीय बनाना होगा। इन सभी के बीच एक सशक्त विकल्प एवं सुरक्षा साधन के समान उभरने वाले प्लास्टिक का भी विकल्प खोजना होगा। और इन्हीं से निकलेंगे अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान के साधन। किन्तु, किसी भी परिस्थिति में हमें प्रकृति को प्राथमिकता देनी होगी, अन्यथा काल पुनः कोई नया रूप लेकर धरती और उसके जीवों की मानव से रक्षा करने आएगा ही।'

प्रतीक 'भारत' पलोड़

सादगी बनेगी हमारी ताकत

हमारी आत्मशक्ति, इरादों की मजबूती और अपनों के साथ को सबसे बड़ी ताकत बनाकर हम इस कोरोना महामारी से उत्पन्न चुनौतियों से अवश्य निपट पाएंगे। इस बीमारी के बाद हर घर में सभी सदस्य एक दूसरे को अच्छे से समझ पा रहे हैं। घर की अर्थव्यवस्था में सोच समझकर अनावश्यक खर्चों में कटौती करके जो जरूरी है, वही खर्च करना और दिखावे से रहना अब आदत बन रही है। इसमें नारी की सोच व घरेलू बचत के तरीके बहुत मददगार साबित हो रहे हैं। हम सब अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सजग हो गए हैं। घर के खाने का महत्व समझ में आ रहा है, जिससे स्वास्थ्य व पैसे दोनों की बचत हो रही है। हम एक दूसरे की सहायता से घर में कई तरह के काम करके अपनी आर्थिक व्यवस्था को मजबूत कर सकते हैं व सादगी से शादी - विवाह एवं बाकी उत्सवों में अनावश्यक खर्च ना कर बचत कर सकते हैं। सामाजिक कार्यक्रमों को सादगी पूर्ण तरीके से आयोजित कर खर्चो पर नियंत्रण कर जमा राशि से जरूरतमंदों की मदद की जा सकती है।

रेखा राजेश लखोटिया, नागपुर

पहली प्राथमिकता अस्तित्व बचाना

सर्वप्रथम चुनौती तो हमारे अस्तित्व के लिए ही है। सौभाग्यवश अगर हमारा अस्तित्व रहा तो हमें अन्य कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक रूप से कमजोर हो चुके ढांचे को पुनर्जीवित करना पड़ेगा। हालांकि ये इतना आसान नहीं होगा, क्योंकि लोगों का कामकाज पूरी तरह बंद हो चुका है। मजदूर अपने अपने घरों को लौट चुके हैं। वापस वही कुशल मजदूर आएंगे या नहीं? माल तैयार नहीं होगा तो भेजेंगे क्या? बकाया पैसा वसूल करना आदि कई-कई रूपों में आर्थिक दृष्टिकोण से समस्याएं आएंगी। नौकरी पेशा लोगों को अलग तरह से दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। उनकी नौकरी रहेगी या नहीं इसकी कोई ग्यारंटी नहीं। जो लोग अपनी नौकरी बचा पाएंगे भी, तो उनके वेतन

में कटौती निश्चित रूप से होगी। जिनकी नौकरी चली जाएगी उनको नए सिरे से प्रयास करने होंगे। अच्छी चिकित्सा सेवा भी चुनौती है। लोग अपनी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को लेकर चिकित्सक से परामर्श लेने में संकोच कर रहे हैं। जब तक पहले जैसी व्यवस्था सुचारू रूप से शुरु नहीं हो जाती तब तक अच्छी स्वास्थ्य व चिकित्सा सेवा भी चुनौती है। हर चुनौती का समाधान होता है। जरूरत है तो धैर्य और हौंसले की। हम चुनौतियों का डटकर मुकाबला करेंगे और बहुत जल्दी ही हम इससे उबरेंगे।

स्वाति मानधना, बालोतरा

धन के साथ अपनी ऊर्जा को भी बचाऐं

कोरोना के बाद का जीवन आज देखते हैं तो काफी भयावह प्रतीत होता है क्योंकि जहाँ देखो वहां से अनगिनत सूचनायें जो कि नकारात्मक है, हमारे मस्तिष्क से टकरा रही है। हमने खुद को इतना विवश कर लिया है कि सकारात्मकता हमारे आस पास भी नही आ रही है। इसलिए इस सोच में बदलाव लाना होगा ताकि कोरोना के बाद का हमारा जो पुनर्जन्म होगा, उसमे हम उसी उत्साह और उमंग के साथ जीवन जिये और खुद की और देश की अर्थव्यवस्था को एक नई ऊंचाई दे सकें। मेरा ये मानना है कि जो आर्थिक मापदंड इस समय विश्व के गड़बड़ा गए है, काफी जल्दी हम उसे भर सकते है। वैश्विक मांग भी बढ़ेगी और रोजगार भी, बशर्ते आज हम हमारी जमापूंजी को सोच समझ कर खर्च करे जैसे कि युद्धकाल में हुआ करता है। किसी ने सच ही कहा है कि 2020 के साल में आप अपने आप को बचाकर रखिये, भविष्य काफ़ी उज्वल होने वाला है। आज की परिस्थिति में अगर हम उज्वल भविष्य के सपने देखने है तो आज के खाली वक्त का हमे सदुपयोग करना होगा और अपने आप को ऐसे काम मे व्यस्त रखना होगा, जिससे हमे सकारात्मक ऊर्जा मिले। जैसे कि हम योगाभ्यास, धार्मिक धारावाहिक देखना, ऐसे वक्ताओ के वेबिनार सुनना जो सकारात्मक सोच को बढ़ावा देवे, महान व्यक्तित्व की किताबे पढ़ना आदि। अपने ऐसे शौक पूरे करना जिसके लिए हमने कभी वक्त ही नही दिया। इन्ही सब कार्यो से आप अपनी ऊर्जा को बनाये रख सकते हैं, तो कोरोना के बाद होने वाली अस्थायी परेशानियों से लड़ने में यह मददगार होगी।

राजकुमार मूंधड़ा, मालेगांव

संकट से संघर्ष पर जीतना जरूरी

आज पहले जीवन बचाना आवश्यक है, पर हमारे जैसे स्वाभिमानी समाज के लिए जीविका बचाना भी आवश्यक है। आने वाले वर्षों में हो सकता है, इसी तरह की और महामारियां आऐं क्योंकि ये बिना युद्ध के किसी देश को नुकसान पहुंचाने का आसान तरीका है। इस से बचने के लिए नित्य प्रभु वंदना करें व चिकित्सकों द्वारा दिए गए सुझावों का पालन करें। रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने का प्रयास करें। दो तीन वर्षो के लिए हो सकता है, लक्सरी वस्तुओं के व्यापार में कमी आए किन्तु किराना, कृषि, डेयरी, दवाई, साधारण कपड़े इत्यादि आवश्यक वस्तुओं के व्यापार में कमी नहीं आ सकती। संभव हो तो अपनी पूंजी का कुछ अंश इस तरफ निवेश करें।आने वाले समय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। रसायन रहित उत्पादों की मांग बढ़ेगी। इस क्षेत्र में भी संभावनाएं तलाशिए। अपने व्यापार को ऑनलाइन करने का प्रयास करिए। टेक्नोलॉजी का प्रयोग भी बढ़ेगा। इस क्षेत्र में भी संभावनाएं हैं। भविष्य को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाईए। अब बात है आहार की। अनाज सब्जी फल पहले ही रासायनिक प्रदूषण के कारण कैंसर और अन्य बीमारियों का कारण बन रहे हैं। अब सब्जियों पर थूक लगाया जा रहा है। बारीक इंजेक्शन से भी जहर पहुंचाया जा सकता है। हम जीवन भर के लिए सब्जी फल नहीं छोड़ सकते। इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना होगा। अधिकतर माहेश्वरी बंधु शहर में रहते हैं। जहां खेती संभव नहीं है। इसके लिए 10-15 परिवार का समूह बनाइए। साथ मिल कर आस पास गांव में जमीन लीजिए। प्रति परिवार एक बीघा जमीन और एक देशी भारतीय गाय आत्मनिर्भरता हेतु पर्याप्त है। यह प्रयोग हम तीन वर्षो से कर रहे हैं। बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए तो जैविक आहार बहुत अधिक आवश्यक है। प्रारंभ करना कठिन अवश्य है पर असंभव नहीं। सेना के जवान और अभी चिकित्सक, सफाई कर्मी पुलिस सभी हमारी रक्षा के लिए अपना जीवन जोखिम में डाल रहे हैं। तो खुद की सुरक्षा के लिए हम इतना तो करें।

नम्रता माहेश्वरी, पाली (राज.)

व्यवसाय में भी रखनी होगी सोश्यल डिस्टेंसिंग

सच में कोरोना महामारी बहुत सी चुनौतियां लेकर आई है, चाहे वह स्वास्थ्य की दृष्टि से हो या आर्थिक या सामाजिक हमें भविष्य में पग-पग पर अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। यह सामना कैसे होगा? इसका अनुमान लगाना जरा मुश्किल है, लेकिन जब तक इस महामारी की कोई वैक्सीन नहीं निकलती, तब तक हमें बहुत ही सावधानी बरतनी पड़ेगी। अपने किसी काम से जब हम घर से बाहर निकलेंगे तब खुद को, सामान लेने वाले थैले को अच्छी तरह सेनीटाइज करके सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल रखेंगे। ग्लब्स पहनना, मास्क लगाना, पैसे लेनदेन में सावधानी बरतना आदि अपनी आदत में शामिल करना होगा। सामाजिक दृष्टिकोण से हमें अब तक हुई गलतियों से सबक लेते हुए फिजूल के आडंबर, दिखावे से बाहर निकल कर, सामाजिक दायित्व निभाते हुए इस संकट की घड़ी में कुछ प्लानिंग, मुहिम चलाकर शादी-विवाह में भी कई सावधानियां बरतनी पड़ेगी। आर्थिक योजनाओं के अंतर्गत हमें व्यापार में भी सावधानियां रखनी होगी। कहां माल बन रहा है? किनके हाथों से बनेगा? कहां सप्लाई होगा? दुकान के स्टाफ को ग्राहक के साथ आए लोगों से सोशल डिस्टेंसिंग रखते हुए कार्य करने होंगे। सामान लेनदेन करने में सावधानी बरतना अत्यंत आवश्यक है। सीधी सी बात है अपनी और अपने परिवार की जिम्मेदारी हमें खुद अपने ऊपर ले कर इस कोरोना से बचाव करना होगा, तभी हम स्वस्थ हम कोरोना मुक्त रह सकेंगे।

भारती-सुजीत बिहानी, सिलीगुड़ी

मित्रता एवं रिश्तेदारी
'सम्मान' की नही
'भाव' की भूखी होती है...
बशर्ते लगाव
'दिल' से होना चाहिए
'दिमाग' से नही.

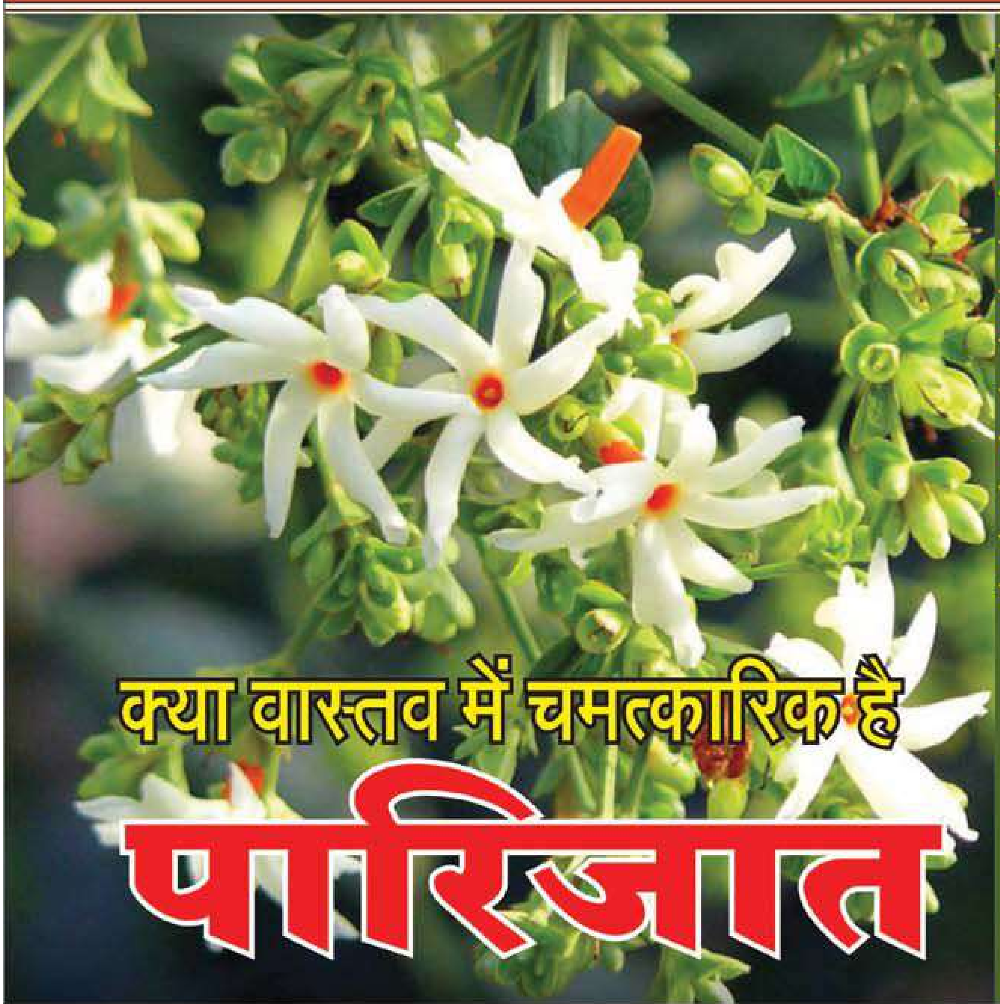

क्या वास्तव में चमत्कारिक है पारिजात

क्या कोई ऐसा भी वृक्ष है, जिसे छूने मात्र से मनुष्य की थकान मिट जाती है। हरिवंश पुराण में ऐसे ही एक वृक्ष का उल्लेख मिलता है, जिसको छूने से देव नर्तकी उर्वषी की थकान मिट जाती थी। ऐसी ही कई चमत्कारिक कथाऐं विभिन्न पुराणों आदि में पारिजात के वृक्ष को लेकर प्राप्त होती है। आईये जानने की कोशिश करें, क्यों रहा है, यह इतना महत्वपूर्ण?

कैलाशचंद्र लड्ढा, जोधपुर

परिजात वृक्ष की प्रजाति भारत में नहीं पाई जाती, लेकिन भारत में एक मात्र पारिजात वृक्ष आज भी उ.प्र. के बाराबंकी जनपद अंतर्गत रामनगर क्षेत्र के गांव बोरोलिया में मौजूद है। लगभग 50 फीट तने व 45 फीट उंचाई के इस वृक्ष की ज्यादातर शाखाएं भूमि की ओर मुड़ जाती है और धरती को छुते ही सूख जाती है। एक साल में सिर्फ एक बार जून माह में सफेद व पीले रंग के फूलो से सुसज्जित होने वाला यह वृक्ष न सिर्फ खुशबू बिखेरता है, बल्कि देखने में भी सुन्दर लगता है। आयु की दृष्टि से एक हजार से पांच हजार वर्ष तक जीवित रहने वाले इस वृक्ष को वनस्पति शास्त्री एडोसोनिया वर्ग का मानते हैं। इसकी दुनियाभर में सिर्फ 5 प्रजातियां पाई जाती है। जिनमें से एक डिजाहाट है। पारिजात वृक्ष इसी डिजाहाट प्रजाति का है। एक मान्यता के अनुसार परिजात वृक्ष की उत्पत्ति समुद्र मंथन से हुई थी। जिसे इन्द्र ने अपनी वाटिका में रोप दिया था। कहा जाता है जब पांडव पुत्र माता कुन्ती के साथ अज्ञातवास पर थे तब उन्होने ही सत्यभामा की वाटिका में से परिजात को लेकर बोरोलिया गांव में रोपित कर दिया होगा। तभी से परिजात गांव बोरोलिया की शोभा बना हुआ है। देशभर से श्रद्धालु अपनी थकान मिटाने के लिए और मनौती मांगने के लिए परिजात वृक्ष की पूजा अर्चना करते है। इस वृक्ष के ऐतिहासिक महत्व व दुर्लभता को देखते हुए जंहा परिजात वृक्ष को सरकार ने संरक्षित वृक्ष घोषित किया हुआ है।

कैसा होता है भारत का पारिजात

भारत में हरसिंगार को भी पारिजात भी कहते हैं। यह एक सुन्दर वृक्ष होता है, जिस पर सुन्दर व सुगन्धित फूल लगते हैं। इसके फूल, पत्ते और छाल का उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है। यह सारे भारत में पैदा होता है। यह 10 से 15 फीट ऊँचा और कहीं 25-30 फीट ऊँचा एक वृक्ष होता है और देशभर में खास तौर पर बाग-बगीचों में लगा हुआ मिलता है। विशेषकर मध्यभारत और हिमालय की नीची तराइयों में ज्यादातर पैदा होता है। इसके फूल बहुत सुगंधित और सुन्दर होते हैं जो रात को खिलते हैं और सुबह मुरझा जाते हैं। इसे संस्कृत में पारिजात व शेफालिका, हिन्दी में हरसिंगार, परजा व पारिजात, मराठी में पारिजातक, गुजराती में हरशणगार, बंगाली में शेफालिका व शिउला, तेलुगू में पारिजातमु व पगडमल्ल, तमिल में पवलमल्लिकै व मज्जपु, मलयालम में पारिजातकोय व पविझमल्लि, कन्नड़ में पारिजात, उर्दू में गुलजाफरी, इंग्लिश में नाइट जेस्मिन तथा लैटिन में निक्टेन्थिस आर्बोर्ट्रिस्टिस कहते हैं। यह हलका, रूखा, तिक्त, कटु, गर्म, वात-कफनाशक, ज्वार नाशक, मृदु विरेचक, शामक, उष्णीय और रक्तशोधक

होता है। सायटिका रोग को दूर करने का इसमें विशेष गुण है।

धन समृद्धि में भी पारिजात का विशेष महत्व

धन की देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करने में पारिजात वृक्ष का उपयोग किया जाता है। यदि "ओम नमो मणि भद्राय आयुध धराय मम लक्ष्मीवृसंच्छितं पूरय पूरय ऐं हीं क्ली हयाँ मणि भद्राय नमः", मन्त्र का जाप 108 बार करते हुए नारियल पर पारिजात पुष्प अर्पित किये जाए और पूजा के इस नारियल व फूलो को लाल कपडे में लपेटकर घर के पूजा धर में स्थापित किया जाए तो लक्ष्मी सहज ही प्रसन्न होकर साधक के घर में वास करती है। यह पूजा साल के पांच मुहर्त होली,दीवाली,ग्रहण,रवि पुष्प तथा गुरू पुष्प नक्षत्र में की जाए तो उत्तम है। यहां यह भी बता दे कि पारिजात वृक्ष के वे ही फूल उपयोग में लाए जाते है,जो वृक्ष से टूटकर गिर जाते है। यानि वृक्ष से फूल तोड़ने की पूरी तरह मनाही है।

औषधीय गुणों का भी भंडार

पारिजात में औषधीय गुणों का भी भण्डार है। पारिजात बावासीर रोग निदान के लिए रामबाण औषधी है। पारिजात के एक बीज का सेवन प्रतिदिन किया जाये तो बावासीर रोग ठीक हो जाता है। पारिजात के बीज का पेस्ट बनाकर गुदा पर लगाने से बावासीर के रोगी को बडी राहत मिलती है। पारिजात के फूल हदय के लिए भी उत्तम औषधी माने जाते हैं। वर्ष में एक माह पारिजात पर फूल आने पर यदि इन फूलों का या फिर फूलो के रस का सेवन किया जाए तो हदय रोग से बचा जा सकता है। इतना ही नहीं पारिजात की पत्तियों को पीस कर शहद में मिलाकर सेवन करने से सुखी खासी ठीक हो जाती है। इसी तरह पारिजात की पत्तियों को पीसकर त्वचा पर लगाने से त्वचा संबंधी रोग ठीक हो जाते है। पारिजात की पत्तियों से बने हर्बल तेल का भी त्वचा रोगों में भरपूर इस्तेमाल किया जाता है। पारिजात की कोंपल को अगर 5 काली मिर्च के साथ महिलाएं सेवन करे तो महिलाओं को स्त्री रोग में लाभ मिलता है। वहीं पारिजात के बीज हेयर टानिक का काम करते हैं, तो इसकी पत्तियों का जूस क्रोनिक बुखार को ठीक कर देता है। इस दृष्टि से पारिजात अपनेआपमें एक संपूर्ण औषधी भी है।

इनमें यह विशेष उपयोगी

- गृध्रसी (सायटिका) के उपचार के लिये हरसिंगार के ढाई सौ ग्राम पत्ते साफ करके एक लीटर पानी में उबालें। जब पानी लगभग 700 मिली बचे तब उतारकर ठण्डा करके छान लें, पत्ते फेंक दें और 1-2 रत्ती केसर घोंटकर इस पानी में घोल दें। इस पानी को दो बड़ी बोतलों में भरकर रोज सुबह-शाम एक कप मात्रा में इसे पिएँ। ऐसी चार बोतलें पीने से सायटिका रोग जड़ से चला जाता है। किसी-किसी को जल्दी फायदा होता है फिर भी पूरी तरह चार बोतल पी लेना अच्छा होता है। इस प्रयोग में एक बात का खयाल रखें कि वसन्त ऋतु में ये पत्ते गुणहीन रहते हैं अतः यह प्रयोग वसन्त ऋतु में लाभ नहीं करता।

- खांसी में हरसिंगार की चाय बनाने के लिए इसकी दो पत्तियां और एक फूल के साथ तुलसी की कुछ पत्तियां लीजिए और इन्हें 1 गिलास पानी में उबालें। जब यह अच्छी तरह से उबल जाए तो इसे छानकर गुनबुना या ठंडा करके पी लें। आप चाहें तो स्वाद के लिए शहद या मिश्री भी डाल सकते हैं। यह खांसी में फायदेमंद है।

- जोड़ों में दर्द में हरसिंगार के 6 से 7 पत्ते तोड़कर इन्हें पीस लें। पीसने के बाद इस पेस्ट को पानी में डालकर तब तक उबालें जब तक कि इसकी मात्रा आधी न हो जाए। अब इसे ठंडा करके प्रतिदिन सुबह खाली पेट पिएं। नियमित रूप से इसका सेवन करने से जोड़ों से संबंधित अन्य समस्याएं भी समाप्त हो जाएगी।

- सामान्य खांसी हो या सूखी खांसी, हरसिंगार के पत्तों को पानी में उबालकर पीने से बिल्कुल खत्म की जा सकती है। आप चाहें तो इसे सामान्य चाय में उबालकर पी सकते हैं या फिर पीसकर शहद के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं।

- किसी भी प्रकार के बुखार में हरसिंगार की पत्तियों की चाय पीना बेहद लाभप्रद होता है। डेंगू से लेकर मलेरिया या फिर चिकनगुनिया तक, हर तरह के बूखार को खत्म करने की क्षमता इसमें होती है।

- दर्द हाथ-पैरों व मांसपेशियों में दर्द व खिंचाव होने पर हरसिंगार के पत्तों के रस में बराबर मात्रा में अदरक का रस मिलाकर पीने से फायदा होता है।
- अस्थमा सांस संबंधी रोगों में हरसिंगार की छाल का चूर्ण बनाकर पान के पत्ते में डालकर खाने से लाभ होता है। इसका प्रयोग सुबह और शाम को किया जा सकता है।

पालघर (महाराष्ट्र) में गत दिनों जूना अखाड़ा के दो संतों व उनके ड्रायवर की बर्बरतापूर्व पीट-पीटकर जघन्य हत्या कर दी गई। इस मुद्दे पर देशभर में भारी जनाक्रोश व्याप्त है। तमाम समाचार चैनलों पर यह मुद्दा प्रमुख सुर्खी बना हुआ है। सिर्फ अपने आपको धर्मनिरपेक्ष कहने वाला एक तबका ही मौन साधे हुए है। वास्तव में देखा जाऐ तो यह मात्र हिन्दू संतों पर हमला नहीं है, यह भारतीय संस्कृति के संरक्षकों पर हमला है। आईये देखें, क्यों और कैसे?

आखिर क्यों महत्त्वपूर्ण है संतों की हत्या पर प्रश्न?

डॉ. अनंत काबरा, हैदराबाद

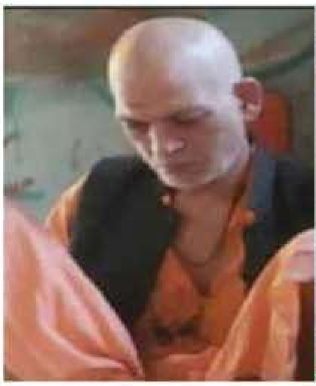

लॉकडाउन में संतों को क्यों जाना पड़ा? यह प्रश्न सभी लोग कर रहे हैं तो उत्तर यह है कि नागा सम्प्रदाय और सन्यासी परम्परा में जब किसी संत-महात्मा का देहावसान होता है, तो उनको समाधि सिर्फ उनके परम व वरिष्ठ शिष्य ही देते हैं। सन्त परम्परा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध बहुत करुणामय और प्रगाढ़ होता है। ये सब आपस में स्नेह और श्रद्धा के बंधन से बंधे होते हैं। किसी का अहित नहीं सोचने वाले ये साधु जीवन भर अपनी साधना के साथ गरीब, दलित, पिछड़े, आम जन सभी लोगों की सेवा में उन्हें ईश्वर समझ कर रत रहते हैं। ये संन्यासी अपना सर्वस्व त्याग कर जाति और वर्ण के बंधनों से मुक्त अपनी पहचान मिटा कर निराकार की आराधना करते हैं और सबके लिए जीते हैं। 'सन्यासी' का अर्थ ही होता है, जो सब भेद मिटा कर लोक कल्याण के लिए अपने जीवन और शरीर को समर्पित करता है।

ऐसे घटी यह घटना

अपने इसी परंपरा व कर्तव्य का निर्वाह करने के लिए अपने पूजनीय गुरू के देहावसान की खबर सुनकर ये साधू अपने गुरु को समाधि देने किसी तरह गुजरात जा रहे थे। इस दौरान गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा पर पालघर जिले के गडचिंचले गाँव से गुजरते हुए देर रात ये घटना घटी। संत समाज के इन महात्माओं की गलती बस इतनी थी कि लॉक डाउन था, तो बिना शिष्यों के बस एक ड्राइवर को साथ लेकर ही निकल पड़े। इन्होनें सोचा होगा कि बस किसी तरह गुरु स्थान पहुंच जाएंगे, जिससे इनके गुरुजी की देह को अधिक प्रतीक्षा ना करनी पड़े। मन में चिंता भी आयी होगी कि क्या पता पुलिस हमें जाने दे या न जाने दे, हमारे गुरु की समाधि लगाने के लिए? अतः भावना और कर्तव्य पालन के वशीभूत हो बॉर्डर वाले गाँव के अंदर से जो रास्ता था, उसी रास्ते से जाने की सलाह बनाई गई मालूम पड़ती है। लेकिन उनको क्या पता कि अंदर क्या होने वाला है और ये बड़ी और वीभत्स घटना सामने आई।

हल्के से घटना को लेना दुःखद

आज इन संतों की हत्या पर एक सेक्यूलर गिरोह एक तरह से लीपापोती पर उतारू है। वह बच्चा चोरी जैसे नैरेटिव की आड़ में मॉबलिंचिंग को एक सामान्य घटना बनाकर पेश करते हुए उन हत्यारों का बचाव कर रही है। इस जघन्यकांड को हल्का करने के लिए यह लिखा जा रहा है कि आक्रोशित भीड़ ने बच्चा चोर समझ कर तीन लोगों को पीट दिया, जिससे बाद में उनकी मृत्यु हो गई। इस नैरेटिव की आड़ में घटना घटे दो दिन होने के बाद भी हर छोटी बात पर बवाल मचाने वाली कई गैंग्स मौन रहीं। अपने गुरु भाई की समाधि के लिए भावुक होकर निकले जूना अखाड़ा के इन संतों ने कभी कल्पना में भी नहीं सोचा होगा कि कुम्भ के मेले में, जब ये करोड़ों लोगों को बिना किसी भेदभाव के एक ही संगत में बैठा कर भोजन कराते हैं, उनकी हत्या उसी इलाके में कर दी जाएगी जिस नासिक महाराष्ट्र के क्षेत्र में नागा साधुओं की संख्या बहुत ज्यादा है और लोग उनसे परिचित भी हैं। कोई भी साधु ऐसा नहीं होता जिसने अपने जीवन काल में मन्दिरों और अनुष्ठानों के भंडारों में हजारों लोगों को भोजन नहीं कराया होता है या मूक जीवों की सेवा नहीं कि होती हैं, दुःखी और निराश लोगों के मन को विश्वास और सहारा नहीं दिया होता हैं।

देश के इतिहास पुरूष हैं नागा साधु

इतिहास में इन नागा साधुओं ने अंग्रेजों और मुगलों के खिलाफ भी बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी हैं। दशकों तक चलने वाले संन्यासी विद्रोह का भी इन्हीं नागा संन्यासियों ने नेतृत्व किया था। यहाँ तक कि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की रूप रेखा भी इन्हीं नागा साधुओं के अखाड़े में बनी थी। आज अचानक देश का यह हिस्सा, जहाँ बहुतायत में नागा संन्यासी हैं। क्यों इन साधुओं के प्रति इतना असंवेदनशील हो गया है कि उनकी भगवा वेशभूषा और वय देख कर भी, पूछताछ के बाद भी उनके बारें में उनकी मृत्यु के बाद भी अफवाह फैला रहे हैं। वहां खड़ी पुलिस सच जानने के बाद भी उन्हें भीड़ के हवाले कर दे रही है और भीड़ उन्हें, उनके गुरु भाई और ड्राइवर को पीटकर मार डालती है। सामान्य समझ रखने वाले आम व्यक्ति में यह साहस नहीं हो सकता है। यह भीड़ 20-25 साल से अधिक उम्र के लोगों की नहीं है। इनके अपरिपक्व दिमाग किसी के हाथों के खिलौना बने हुए हैं। जानवरों को मार कर भगाते समय भी कोई सामान्य व्यक्ति इतनी निर्दयता से व्यवहार नहीं कर सकता है, जो यहाँ मानव समुदाय के सबसे श्रेष्ठ, सरल और सीधे समझे जाने वाले मनुष्यों के साथ हुआ है।

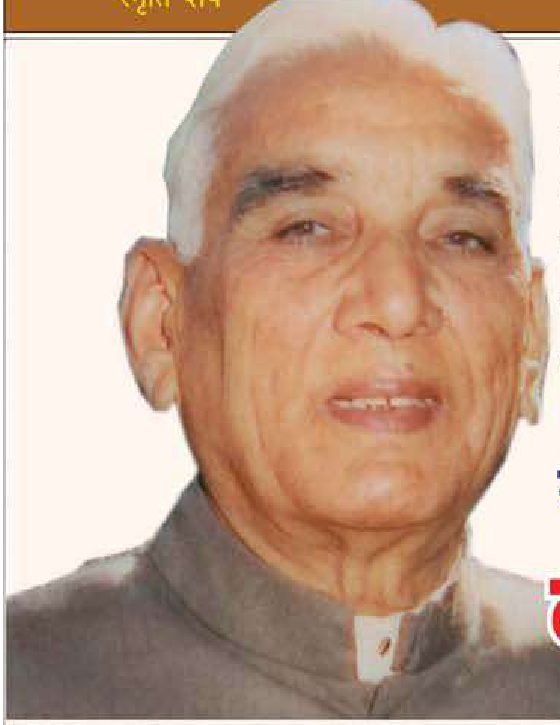

कहने के लिये तो वे इन्दौर म.प्र. में निवास करते थे, लेकिन हकीकत देखी जाऐ तो उनके कर्मों ने उनका निवास स्थान लोगों के दिलों में बना दिया था। यही कारण है कि ऐसे सभी चहेतों के स्नेह ने ही उन्हें नाम दिया था, बाबूजी। जीवन के अंतिम क्षणों तक सभी के दिलों पर राज कर बाबूजी ने सभी की आंखों को नम कर गत 6 मई को इन्दौर में अंतिम बिदा ले ली।

अशोक डागा, इंदौर

नहीं रहे स्नेह की प्रतिमूर्ति बाबूजी श्री बनवारीलाल जाजू

इन्दौरवासी ही नहीं बल्कि और विभिन्न क्षेत्रों के कई समाजसेवियों के बीच वरिष्ठ समाजसेवी श्री बनवारीलाल जाजू प्यार से 'बाबूजी' के नाम से संबोधित किये जाते थे। वे सन 1924 में हरियाणा में जन्में एवं लगभग अर्द्ध शतक पूर्व अपने नवीन कर्मक्षेत्र के रूप में इंदौर आये, तो फिर यहीं के ही होकर रह गये। बाबूजी ने समाज एवं अपने कर्त्तव्य के प्रति पूर्ण सजग रहकर अपने यशस्वी व लोकोपकारी जीवन के 96 वर्ष की आयु पूर्ण की और जीवन का यह अधिकांश कालखंड इन्दौर के रहवासियों को समर्पित कर दिया। इस दौरान मानवता की सेवा के लिये कई संस्थाऐं स्थापित की और कई संस्थाओं के माध्यम से मानवता की सेवा में अपना चहुंमुखी योगदान दिया। लगभग 5 वर्ष पूर्व 14 मई, 2016 को इंदौर वासियों ने खचाखच भरे स्थानीय रविंद्र नाट्यगृह में भव्य नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित कर श्री जाजू के योगदानों को नमन किया था। इस अवसर पर इंदौर की सांसद एवं लोकसभा अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन ने अपने उदबोधन में कहा था कि बाबूजी व्यक्ति नहीं अपने आप में एक संस्था हैं। समारोह के विशिष्ट अतिथि केंद्रीय इस्पात एवं खनन मंत्री नरेंद्रसिंह तोमर ने भी कहा था कि जाजूजी हजारों में एक हैं। इसलिए सबके मन में उनके प्रति श्रद्धा का भाव रहा। यही कारण रहा कि कोरोना के कारण चल रहे लॉक डाऊन के बीच भी चाहे नियमों का पालन के लिये उनकी अंतिम बिदाई में कई लोग उपस्थित नहीं हो पाऐ, लेकिन घर की चारदीवारी में रहकर भी ऐसी आंखें शायद ही नम होने से अछुती रह पायी हों।

संघर्षों से जीवन की शुरूआत

स्व. श्री जाजू का जन्म हरियाणा के एक छोटे से गांव मायन में 24 जून 1924 को स्व. श्री रामकुमार जाजू तथा श्रीमती सम्पत देवी के चौथे पुत्र के रूप में हुआ था। चार भाईयों व तीन बहनों में सबसे छोटे होने के कारण आपको माता पिता का अगाध वात्सल्य व मानवीय संवेदना विरासत में ही मिली। मायन गांव में शिक्षा व्यवस्था का सर्वथा अभाव था। स्कूल गांव से 10 किमी दूर रेवाड़ी नगर में था। अतः श्री जाजू ने 10 किमी की लम्बी दूरी बालू रेत की तपन में पैदल ही तय करते हुए रेवाड़ी के स्कूल से शिक्षा प्राप्त की। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मेट्रिक के बाद श्री जाजू को अपनी पढ़ाई छोड़कर व्यवसाय में लगना पड़ा। सन 1944 में राजस्थान के किशनगढ़ रेनवाल के प्रमुख कपड़ा व्यवसायी श्रीवल्लभजी तोतला की सुपुत्री गायत्रीदेवी के साथ परिणय बंधन में बंध गये थे। उनका परिवार वर्तमान में 3 पुत्र हरीश, अशोक व अनिल तथा 3 विवाहित पुत्रियों सहित पौत्र - पौत्री व नाती - नातिन से भरा पूरा रहा।

इस तरह बना इन्दौर कर्मभूमि

सन 1940 में श्री जाजू अपना गांव मायन छोड़कर काम की तलाश में अपने बड़े भाई जुगलकिशोर के पास कराची चले गये। वहां कुछ समय रहकर काम किया तथा थोड़ी सी पूंजी जुटाकर जयपुर आ गये। जयपुर में अपने चाचा सूरजमलजी के सहयोग से कपड़ा व्यवसाय प्रारम्भ किया। सन 1947 में भारत के विभाजन के बाद आपके बड़े भाई भी करांची (पाकिस्तान) से भारत आ गये। ऐसे में श्री जाजू को जयपुर का यह कपड़ा व्यवसाय पर्याप्त नहीं लगा। अतः श्री जाजू ने उप्र, मप्र, महाराष्ट्र तथा हैदराबाद का दौरा नया व्यवसाय खोलने के लिए किया। इसी दौरान इटारसी में एक बंद पड़ी ऑयल मिल को खरीदकर श्री विजय आयल एण्ड दाल मिल्स के नाम से सन 1950 में उद्योग के क्षेत्र में पदार्पण कर लिया। इस प्रकार श्री जाजू इटारसी के निवासी बन गए। व्यवसाय के विस्तार तथा बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए 20 वर्ष पश्चात् अपनी इस कर्मभूमि इटारसी को छोड़कर जाजूजी परिवार सहित सन 1970 में इंदौर आकर बस गये तथा इटारसी का व्यवसाय अपने पार्टनर को सौंप दिया। इन्दौर में प्रारंभ से ही मप्र कोल्ड स्टोरेज एसोसिएशनके अध्यक्ष तथा ऑल इंडिया कोल्ड स्टोरेज फेडरेशन के निदेशक व फायनेंस कंट्रोलर भी रहे।

राजनीति में भी रही सक्रिय भागीदारी

राजनीति क्षेत्र में श्री जाजू का झुकाव प्रारंभ से ही कांग्रेस की ओर रहा। सन 1952 से 1970 तक होशंगाबाद की जिला कांग्रेस में सक्रिय रहकर कोषाध्यक्ष, कार्यवाहक अध्यक्ष आदि पदों पर रहते हुए सभी लोकसभा व विधानसभा चुनावों के संचालक रहे। पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री नीतिराजसिंह चौधरी व राष्ट्रकवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी के अनुज हरिप्रसाद चतुर्वेदी जो बाद में मप्र सरकार में शहरी विकास मंत्री बने, उनके अभिन्न मित्र होने के नाते उनके सभी चुनावों में उस क्षेत्र के प्रमुख संचालक रहे। इस दौरान उन्हें कांग्रेस के प्रमुख राष्ट्रीय नेता कामराज नाडार व इंदिरा गांधी से भी परिचय करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री जाजू को एक बार कांग्रेस पार्टी की ओर से विधायक का टिकिट भी ऑफर किया गया था, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था। इंदौर आने के बाद श्री जाजू ने राजनैतिक गतिविधियों की बजाय सामाजिक गतिविधियों में रूचि लेना ही ज्यादा उचित समझा।

सेवा के लिये कई संस्थाओं का साथ

स्व. श्री जाजू मप्र दृष्टिहीन संघ, इंदौर, श्री महेशनगर पारमार्थिक न्यास, स्वर्ग मंदिर कन्या विद्यालय, महू, मेवाड़ा थोक ट्रस्ट एवं माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, इंदौर के अध्यक्ष थे। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा से वे अनेक वर्षों से सक्रिय रूप से जुड़े रहकर छः वर्ष तक इसके उपसभापति रहे। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारिणी के सदस्य तथा आदित्य विक्रम बिरला मेमोरियल व्यापार सहयोग केंद्र के न्यासी एवं मप्र पश्चिमांचल प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के भी अध्यक्ष भी रहे। आप अंतिम समय तक श्री बी.डी. तोषनीवाल बाल मंदिर तथा श्रीमती फूलबाई मुरलीधरजी झंवर माहेश्वरी कन्या छात्रावास इंदौर की कार्य समिति के अध्यक्ष रहे और इनके विकास में तन-मन-धन से योगदान दिया। इन्हीं संस्थाओं से लगी भूमि पर एक स्टेडियम के निर्माण की योजना है, जिसे मूर्तरूप देने के लिए भी श्री जाजू प्रयासरत थे। आप नगर सुरक्षा समिति- साउथ तुकोगंज इंदौर के संरक्षक, गीता भवन ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा डॉ. नंदलाल बोर्डिया चेरीटेबल ट्रस्ट, श्री ग्यारह पंच धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट इंदौर, मप्र पश्चिमांचल माहेश्वरी ट्रस्ट, माहेश्वरी विद्यालय ट्रस्ट आदि अनेक ट्रस्टों के ट्रस्टी भी थे। लोकोपकार के निमित्त उनका एक ट्रस्ट बनवारीलाल जाजू पारमार्थिक सार्वजनिक ट्रस्ट नाम से भी बना हुआ है, जिससे वे पीड़ित और जरूरतमंद लोगों की सतत सहायता करते रहते थे। ट्रस्टों के माध्यम से निर्मित होने वाले हॉस्पीटल, मंदिर, स्कूल, धर्मशाला, छात्रावास, प्याऊ आदि के निर्माण कार्य पर वे पूरी निगाह रखते थे, ताकि निर्माण कार्य अच्छे स्तर का हो सके। दृष्टिहीन बच्चों के शिक्षण प्रशिक्षण एवं उन्हें रोजगार मुहैया कराने के मामले में स्व. श्री जाजू विशेष संवेदनशील थे।

श्रद्धासुमन

मैंने अपना अनन्य मित्र खो दिया

इंदौर निवासी प्रख्यात समाजसेवी श्री बनवारी लाल जाजू का निधन मेरे लिए बहुत बड़ी व्यक्तिगत क्षति है। कारण यह है कि वे ना सिर्फ मेरे अनन्य मित्र थे, बल्कि मेरे लिए तो उनका स्नेह सदैव ही एक बड़े भाई के जैसा ही था। अतः मैंने तो अपने बड़े भाई के स्नेह की छाया को ही खो दिया है। आदरणीय जाजू जी अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के उपसभापति तथा पश्चिमांचल प्रदेश सभा के प्रदेशाध्यक्ष रहे थे। समाज सेवा के क्षेत्र में इन सब कारणों से हमारा लंबे समय का साथ रहा। मेरे लिए आदरणीय जाजू जी सदैव व्यक्तिगत रूप से मेरा संभल तो रहे ही साथ ही मेरे मार्गदर्शक भी रहे। उनके देहावसान ने मुझसे जो छीना हैं, उसकी पूर्ति मेरे लिए कर पाना संभव ही नहीं है।

■ **पद्मश्री बंशीलाल राठी**, पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

आम व्यक्ति के थे साथी

अत्यंत व्यथित करने वाला है, पूजनीय बाबूजी श्री बनवारीलाल जाजू के निधन का समाचार। महासभा से उनका जुड़ाव सर्वविदित रहा है। आप महासभा के दो बार उप सभापति रहे और माहेश्वरी पत्रिका से भी जुड़े रहे थे। समाज के आम सदस्य की पीड़ा वे समझते थे और उसके निराकरण के लिये प्रयासरत भी रहते थे। राजनीति में भी बाबूजी सबके वंदनीय थे। मेरे लिये तो यह व्यक्तिगत हानि है ही, समाज के लिये भी बहुत बड़ी क्षति है। मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि परिवार को दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

■ **श्यामसुन्दर सोनी**, सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

सेवा पथ की यह भारी क्षति

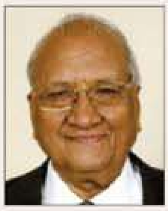

श्रद्धेय बाबूजी के देहावसान का जब समाचार मिला, तो बहुत आघात लगा। आखिर बाबूजी न सिर्फ बड़ें भाई की तरह मेरे मार्गदर्शक ही थे, बल्कि समाजसेवा के पथ पर वे तो ऐसे मित्र भी थे, जिन्होंने सदैव हमारे कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। न सिर्फ उनके शब्द बल्कि उनका तो सम्पूर्ण जीवन ही मार्गदर्शक ही था। उम्र के ऐसे 96 वें पढ़ाव पर बाबूजी पहुंच चुके थे, जहां पहुंचते - पहुंचते अधिकांश लोग शारीरिक असमर्थता के कारण निष्क्रिय हो जाते हैं। उम्र की इस बाधा को भी अपने हौंसले से मात देते हुए, इस अवस्था में भी वे किसी न किसी तरह अपना योगदान देने में पीछे नहीं थे। आपका जीवन समाजसेवा के पथ पर चलने वाले समाजसेवियों को सदा मार्गदर्शित करता रहेगा।

■ **जोधराज लड्ढा**, पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

समाजसेवा में उनका कद सदैव ऊंचा रहा

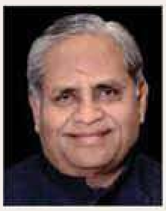

स्वनाम धन्य, प्रख्यात समाजसेवी, विनम्रता एवम उत्कृष्ट चिंतन से परिपूर्ण, लंबे समय से सेवा में समर्पित हमारे बाबूजी परम श्रद्धेय श्री बनवारीलाल जाजू आज हमारे बीच नहीं रहे, यह जानकर बहुत दुख हुआ। श्रद्धेय बाबू जी इंदौर ही नहीं अपितु पूरे देश में समाज के श्रेष्ठतम व्यक्तित्व में से एक थे एवं बाबूजी के नाम से विख्यात थे। आप माहेश्वरी महासभा के उपसभापति रहे किंतु उनका कद हमेशा सभापति से ऊंचा रहा। उनकी अति विशिष्ट जीवनशैली को मैंने बहुत करीब से देखा है, बहुत कुछ सीखा है ,उनका आशीर्वाद सदैव प्राप्त हुआ है। इस दुखद घड़ी में अंतर्मन से गहरी संवेदनाएं प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी महान आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें एवं परिजनों व सभी समाज बंधुओं को धैर्य प्रदान करें ।

■ **रामकुमार भूतड़ा**, पूर्व महामंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

मेरे लिये तो सेवा पथ के थे गुरू

आदरणीय बाबूजी का देहावसान मेरे लिये ठीक वैसा ही है, जैसे किसी से शीतल छाया अनायास छिन ली गई हो। बाबूजी समाजसेवा पथ के एक महान कर्मयोगी थे और मेरे लिये तो इस पथ के गुरू ही। मैं तो समाजसेवा के क्षेत्र में प्रेरणा भी उनसे ही पायी और गुरू की तरह मिले मार्गदर्शन से ही मैं सेवा क्षेत्र में अपना योगदान दे पा रहा हूँ। बाबूजी मेरे लिये तो बहुत कुछ थे, स्नेह के मामले में बड़े भाई और मार्गदर्शन में गुरू की तरह कठोर लेकिन अन्दर से शीतलता से ओतप्रोत। उनके देहावसान ने मुझसे तो मेरे कई रिश्तों का स्नेह ही छिन लिया है।

■ **रामअवतार जाजू**, पूर्व अध्यक्ष 'माहेश्वरी' बोर्ड,

ऐसी विरली विभूति भाग्य से ही मिलती हैं

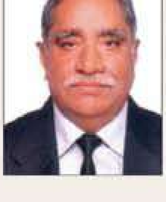

श्रद्धेय बाबूजी के देहावसान का समाचार मेरे लिये किसी वज्रपात से कम नहीं है। उनके देहावसान ने न सिर्फ समाज से एक समर्पित समाजसेवी छिन लिया है, बल्कि मेरे लिये तो यह व्यक्तिगत क्षति ही है। आदरणीय बाबूजी वास्तव में देखा जाऐ, तो स्वयं अपने - आप में समाजसेवा ही नहीं बल्कि व्यावसायिक जगत के भी एक सफल हस्ताक्षर थे। ऐसी विभूति भाग्य से ही मिलती हैं, जिनके सम्पर्क मात्र से वह मार्गदर्शन मिले, जो सामान्यतः प्राप्त करना भी दुर्लभ होता है। कारण वे एक ऐसी विरली महाविभूति थे, जिन्होंने अपने कर्म से अपने परिवार व अपने समाज की कीर्ति को एक नयी पहचान दी। मैं उनके श्री चरणों में प्रणाम करता हुए उनके परिवार को सम्बल प्रदान करने की परमपिता से प्रार्थना करता हूँ।

■ **रामकुमार टावरी**, पूर्व संयुक्त सचिव अ.भा. माहेश्वरी महासभा

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

// विनम्र श्रद्धांजलि //

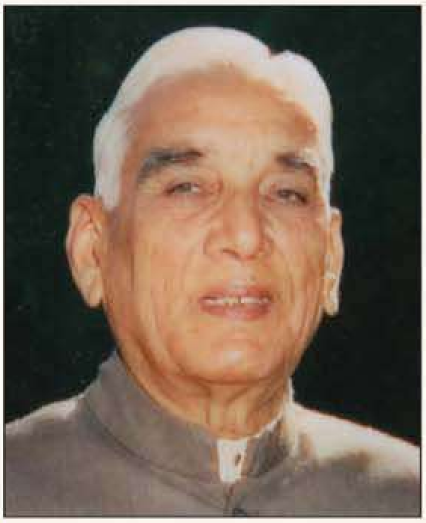

अ.भा. माहेश्वरी महासभा के
पूर्व उपसभापति,
'माहेश्वरी' बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष,
वरिष्ठ समाजसेवी, हम सबके
आत्मीय, मार्गदर्शक एवं मेरे अजीज़

श्रद्धेय बनवारीलाल जी जाजू

के निधन पर विनम्र, अश्रुपूरित श्रद्धांजलि।

बंशीलाल राठी

(चेन्नई)

पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर, माहेश्वरी सेवा समिति बलसार एवं माहेश्वरी एज्युकेशन चेरिटेबल ट्रस्ट सहित कई समाजसेवी संस्थाओं द्वारा समाज के हर वर्ग की सेवा कर रहे ख्यात समाजसेवी सिलवासा, दादर नगर हवेली निवासी वरिष्ठ समाजसेवी श्री अमृतलाल मूंदड़ा नहीं रहे। गत 30 अप्रेल को सिलवासा में श्री मूंदड़ा को कई समाजसेवियों, व्यवसायियों, शिक्षा शास्त्रियों तथा समाजजनों ने अश्रुपुरित अंतिम विदाई दी।

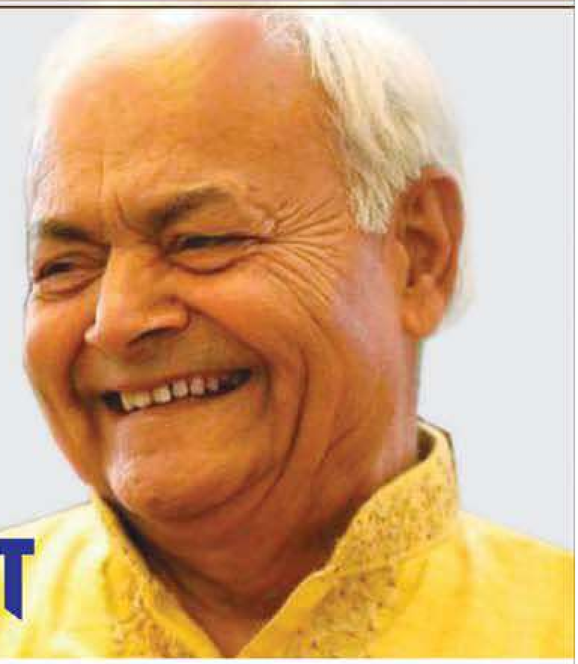

नहीं रहे समाजसेवा के वटवृक्ष श्री अमृतलाल मूंदड़ा

राजस्थान के पाली जिले के ग्राम सोजत मे स्व. श्री कालूराम मूंदड़ा के यहां 20 जुलाई सन् 1950 को जन्में श्री अमृतलाल मूंदड़ा वर्तमान में सिलवासा दादर नगर हवेली में निवासरत थे। वैसे तो श्री मूंदड़ा क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित व सफल व्यवसायी थे, लेकिन उनकी मानवता से ओतप्रोत भावना ने उनकी पहचान समाजसेवा के ऐसे वटवृक्ष के रूप में बना दी थी, जो समाजसेवा के कई क्षेत्रों में अपने स्नेह की छांव प्रदान कर रहे थे। व्यावसायिक रूप से श्री मूंदड़ा ट्रीट रिसोर्ट व सिलवासा रीयल इस्टेट का संचालन तो कर ही रहे थे, साथ ही उन्होंने अपने व्यवसाय को अल्ट्राटेक सीमेंट, एल एण्ड टी स्वीचगियर व सेल स्टील के अधिकृत विक्रेता के रूप में भी स्थापित किया था। श्री मूंदड़ा समाजसेवा के क्षेत्र में माहेश्वरी समाज में तो सम्बद्ध रहे ही, साथ ही कई अन्य समाजसेवी संस्थाऐं भी उनकी चहुंमुखी सेवा से पोषित होती रही। समाज की शीर्ष संस्था अ.भा. माहेश्वरी महासभा से भी लम्बे समय तक कार्यकारी मंडल सदस्य के रूप में सम्बद्ध रहे।

ऐसे सिलवासा बना उनका कर्मक्षेत्र

वर्ष 1970 तक श्री मूंदड़ा ने अपने जन्म स्थान सोजत (राजस्थान) में रहते हुए वहीं की शिक्षण संस्थाओं से शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद वर्ष अपनी जन्मभूमि के गौरव को प्रतिष्ठित करने वे वहाँ से बाहर निकले। इसके अन्तर्गत वर्ष 1970 में सर्वप्रथम मुम्बई को श्री मूंदड़ा ने अपना कर्मस्थल बनाया। वर्ष 1970 से 1980 तक विभिन्न व्यवसायिक कार्यों की व्यस्तता के बावजूद श्री मूंदड़ा ने माहेश्वरी प्रगति मण्डल में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में विभिन्न सामाजिक कार्यों में भी भरपूर योगदान दिया। फिर वर्ष 1980 में केन्द्रीय शासित प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली की राजधानी सिलवासा को अपनी कर्मभूमि बनाया। यहां सर्वप्रथम रियल इस्टेट व्यसाय में नये-नये कीर्तिमान स्थापित करने के साथ-साथ ट्रीट रिसोर्ट, बिल्डींग मेटेरियल की डिस्ट्रब्यूशन एवं मैन्यूफेक्चरिंग व्यवसाय में अपने व्यावसायिक कदम मजबूती से आगे बढ़ाये। वर्तमान में उनका परिवार व्यावसायिक क्षेत्र में एक विशाल वटवृक्ष की तरह प्रतिष्ठित रूप से सुस्थापित हो चुका है।

समाज को दी समर्पित सेवा

श्री मूंदड़ा अपनी तमाम व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद समाज के लिये अत्यंत सहज व निःस्वार्थ भाव से सदैव समर्पित रहे। इसके अन्तर्गत माहेश्वरी समाज के अंतर्गत आप अ.भा. माहेश्वरी महासभा कार्यकारी मंडल सदस्य, अभा माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के उपाध्यक्ष तथा मंत्री व माहेश्वरी सेवा समिति बलसार एवं माहेश्वरी एज्युकेशन चेरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमेन के साथ ही महेश एज्युकेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट (जिला वलसाड़, दमण, सिलवासा) के चेयरमेन एवं ट्रस्टी के पद पर भी आसीन रहे। ये ट्रस्ट इस क्षेत्र में वापी में महेश पब्लिक स्कूल की स्थापना हेतु स्थापित किया गया था। वर्ष 2008 में गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष रहे। साथ ही माहेश्वरी सेवा समिति के आजीवन ट्रस्टी भी रहे। उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में माहेश्वरी सेवा समिति ने वापी में एक सुन्दर एवं विशाल महेश भवन का निर्माण किया। आज भी यह भवन इस क्षेत्र में सर्वाधिक सुविधायुक्त है। अपने इसी कार्यकाल में माहेश्वरी सेवा समिति के तत्वाधान में कई शीतल जल केन्द्रों की स्थापना की गई, आदिवासी क्षेत्र में स्कूलों में पाठय पुस्तकों का निःशुल्क वितरण व अनेकोनेक सामाजिक विकास के कार्यों में भरपूर योगदान दिया। उनके इन्ही अथक प्रयासों से माहेश्वरी सेवा समिति (जिला वलसाड, दमण, सिलवासा) को पूरे गुजरात में अहम् स्थान एवं खास पहचान प्राप्त हुई थी। इन योगदानों के लिये सेवा समिति द्वारा अध्यक्ष पद से निवृत होने के बाद श्री मूंदड़ा को 'समाज रत्न' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था।

मानवता की चहुमुखी सेवा

श्री मूंदड़ा की समाजसेवा का दायरा सिर्फ समाज तक ही सीमित नहीं रहा, वरन् वे कई अन्य समाजसेवी संस्थाओं से सम्बद्ध होकर भी सेवा देते रहे। लायन्स चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित लायन्स इंगलिश स्कूल, सिलवासा के फाउन्डर ट्रस्टी के रुप में शैक्षणिक क्षेत्र में विशेष योगदान प्रदान किया। यह शिक्षण संस्थान वर्ष 1984 में केवल 17 विद्यार्थियों से शुरु की गई थी, जो आज 5500 से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रही है। कई धार्मिक व समाजसेवी संस्थाओं जैसे- कांची चेरिटेबल ट्रस्ट, तिरुपती बालाजी मंदिर सिलवासा, वृंदावन मन्दिर-सिलवासा, ऐश्वर्या मुंदड़ा मेमोरियल ट्रस्ट-सिलवासा, पार्श्वनाथ जैन दिगम्बर मन्दिर सिलवासा आदि को ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवा देते रहे। श्री मूंदड़ा की सेवा यात्रा जीवन की युवा अवस्था में प्रारम्भ हुई तो जीवन के अंतिम क्षण तक अनवरत चलती रही। इनके द्वारा दी गई हर प्रेरणा जैसे संगङ्गन में शक्ति, सामाजिकता में समझदारी, संयुक्त परिवार की विशेषता एवं स्वास्थ्य एवं उपचार के नुक्सों को हमेशा हर व्यक्ति के जीवन की विशेष पहचान के रूप में जीवंत रहेगी।

गांधी तथा विनोबी का सानिध्य प्राप्त सरस्वती की उपासक, रत्नाबाई विद्यालय की पूर्व मुख्याध्यापिका तथा महाराष्ट्र राज्य 'उत्कृष्ट शिक्षिका' का पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात शिक्षाविद् व वरिष्ठ समाजसेवी वर्धा निवासी श्रीमती यमुनादेवी जाजू नहीं रहीं। गत 20 अप्रेल को हुए उनके देहावसान ने समाज को उनके स्नेह व मार्गदर्शन से वंचित कर दिया। उनकी अंतिम इच्छानुसार पुत्रवधुओं ने उन्हें मुखाग्नि देकर समाज सुधार की नई मिसाल कायम की।

□ टीम SMT

नहीं रही सरस्वती उपासक श्रीमती यमुनादेवी जाजू

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नारायणदास जाजू की धर्मपत्नी तथा डॉ. सुहास एवं डॉ.उल्हास जाजू की माता श्रीमती यमुनाताई जाजू का गत 20 अप्रैल को परमधाम गमन हो गया। कई ख्यात शिक्षाविद व समाजसेवी एवं गणमान्यजनों ने उपस्थित होकर ताई को अंतिम विदाई दी। ताई हमेशा ही समाज सुधार का अलख जगाती रहीं और उनकी ये भावनाऐं उनके अंतिम संस्कार के अवसर पर भी प्रकट हुई। परम्परानुसार तो पुत्र ही मुखाग्नि देते हैं, लेकिन उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा में इस पुरूषवादी सोच का विरोध करते हुए पुत्रवधुओं के हाथों से मुखाग्नि देने की इच्छा व्यक्त की थी। उनकी इस इच्छा की प्रतिपूर्ति में उनकी पूत्रवधुओं ने उन्हें मुखाग्नि देकर अंतिम विदाई दी।

तपोधन श्रीकृष्णदास जाजू की थीं पुत्रवधू

आप समाज के गौरव स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तपोधन श्रीकृष्णदास जाजू की पुत्रवधू तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शंकरभाऊ काबरा की सुपुत्री थीं। इस तरह आपको स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की पुत्री, पुत्रवधू तथा पत्नी होने का तिहरा सम्मान प्राप्त था। आपने अपने निजी संबंधों को शालेय जीवन के अनुशासन में कभी बाधक नहीं बनने दिया। अन्न को परब्रह्म का स्वरूप मानने वाली ताईजी ने कभी झूठा नहीं छोड़ा और न ही छोड़ने दिया। प्रगतिशील विचारों की धनी यमुनाताई हमेशा महिलाओं को आगे बढ़ाने की पक्षधर रहीं। जीवन के अंतिम दिनों में आपने काका स्व. नारायणदास जाजू की तरह अन्न एवं जल का त्याग कर वेदना रहित मृत्यु का वरण किया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई है।

सरस्वती की उपासक के रूप में प्रतिष्ठा

ताई की पहचान गांधी तथा विनोबाजी का सानिध्य प्राप्त एक सरस्वती की उपासक के रूप में थी। आप रत्नाबाई विद्यालय की पूर्व मुख्याध्यापिका थी। उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदानों के लिये महाराष्ट्र राज्य 'उत्कृष्ट शिक्षिका' का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। धन, बल, पद - प्रतिष्ठा की गर्विता से कोसों दूर गांधीवादी यमुनाताई, नारियल के भाँति ऊपर से कठोर किंतु अंदर से उतनी ही मधुरता तथा मृदु स्वभाव की धनी थीं। माहेश्वरी महिला मंडल, वर्धा की पूर्व अध्यक्षा ताई महिला आश्रम सहित कई संस्थाओं से सक्रियता से जुड़ी थी। आप एक आदर्श अर्धांगिनी, वात्सल्यमूर्ति, स्वदेशी की प्रोत्साहक, आदर्श शिक्षिका, बालसंस्कारों की गंगोत्री, प्रेरणा की ज्योति, और न जाने ऐसे कई गुणों की खान थीं। अपने स्नेहिल स्वभाव की वजह से आमजन में ताईजी के संबोधन से प्रसिद्ध थीं। ताई माहेश्वरी महिला मंडल वर्धा की संस्थापक अध्यक्ष रही है। आपके कार्यकाल में महिलाओं ने घर की चारदीवारी से निकलकर प्रथम बार समाजहित में कार्य करना सीखा।

बाल संस्कारों की गंगोत्री थीं ताई

श्री राजकुमार जाजू बताते हैं कि मैं जब न्यू इंग्लिश हाईस्कूल का विद्यार्थी था, ताई जी रत्नाबाई विद्यालय में मुख्याध्यापिका थीं। आंतरशालेय स्पर्धा में किसी स्पर्धा का मैं पुरस्कार प्राप्तकर्ता था। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम की ताईजी मुख्य अतिथि थी। जाजू के संबोधन से ताईजी का विशेष ध्यान मुझ पर गया। कार्यक्रम के पश्चात ताईजी ने बुलाकर कहा, "शिक्षा का उद्देश्य मात्र अधिक अंकों से शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करना नहीं है, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी कौशल प्राप्त कर जीवन को सफल, सार्थक तथा संपन्न बनाना है। अवसरों को सोपान बनाकर ऊपर चढ़ने में ही मानवता है। जब कभी भी मेरी जरूरत महसूस हो चले आना, शाला या जाजू वाडी में।" बस तब से लेकर आज तक ताईजी का स्नेहाशीष मुझपर बरस रहा है। करीब ९० वर्ष की इस उम्र में भी मुझसे ऐसे रूठती है, कट्टी करती हैं, मुंह फुला लेती है, जैसे बिल्कुल बच्ची हों। कहतीं तू बहू को कभी लाता नहीं, अकेला आ जाता है।

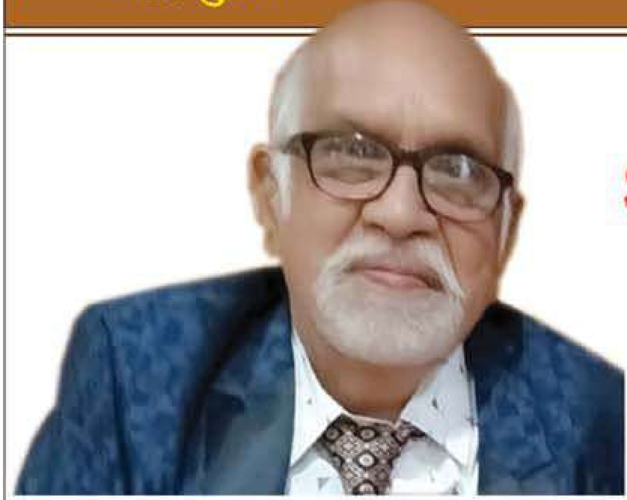

नहीं रहे कुशल प्रबंधन का पर्याय
श्री लालचंद सोमानी

भारतीय स्टील उद्योग जगत में अपनी विशिष्ट प्रतिभा का ध्वज फहराने वाले अहमदाबाद निवासी श्री लालचंद सोमानी नहीं रहे। गत 16 अप्रेल को श्री सोमानी के असमय काल-कलवित हो जाने से सिर्फ गुजरात माहेश्वरी समाज ही नहीं वरन अखिल भारतीय माहेश्वरी समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा के धनी होने के साथ ही आप भारतीय स्टील उद्योग जगत के प्रमुख स्तंभ, बहुमुखी प्रतिभा के धनी उद्यमी थे। स्टील कंपनी जगत में उन्हें कारपोरेट गवर्नेंस और सामाजिक दायित्व की परिकल्पनाओं को पहली बार लागू करने वाले उद्योगपति के रूप में जाना जाता है। सभी भाई - बहनो मे जेष्ठ होने का दाईत्व बखुबी निभाते हुए पूरे परिवार को भी उद्योगों से जोड कर व्यवसाय का श्री सोमानी ने विकेन्द्रीकरण किया था। लालचन्द नाम को साकार करते हुए सभी दूर आपने खुशियों की लाली ही बिखेर थी। आपने समूह को अपने कुशल नेतृत्व में स्टील व्यवसाय को अग्रणी उद्योग में तब्दील कर दिया ।समाज सेवा के गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी महासभा में वे 1990 में सचिव पद पर रहे।अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा में भी कार्यशील रहे।

उच्चशिक्षा से सफलता की यात्रा

स्व. श्री सोमानी का जन्म श्री बाबूलाल सोमानी के यहाँ बोरगांव मंजू जिला - अकोला (महाराष्ट्र) में 7 मार्च 1941 को हुआ था। आपने बिट्स पिलानी से मेकैनिकल इजीनियरिंग की पढ़ाई की थी। इसके बाद बिरला और कमानी ग्रुप जैसे प्रतिष्ठित उद्योग समूहों में महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवा दी। इसके बाद वे अहमदाबाद आ गए। आप अनेक स्टेनलेस स्टील कंपनीज के सलाहकार रहे और फिर खुद के लगभग 7 स्टेनलेस स्टील उद्योग लगाए, जिसमें रोलमेटल इंडस्ट्रीज, कलोल आदि मुख्य हैं। जीवन के अंतिम दिनों में भी वे उद्योग और समाज के लिए हमेशा उपलब्ध रहे। आप जितने सरल थे उतने ही बुद्धिजीवी भी रहे।आपकी सकारात्मक सोच का ही परिणाम रहा कि आपके द्वारा स्थापित उद्यम आज कम से कम पाँच हजार व्यक्तियों की उदर पूर्ति कर रहा है।

समाजसेवी श्री बालकिशन भूतड़ा

देवास। माहेश्वरी समाज के पूर्व जिला अध्यक्ष देवास माहेश्वरी समाज के पूर्व नगर अध्यक्ष समाजसेवी श्री बालकिशन भूतड़ा का 92 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप नगर की कई सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए थे। आप के निधन के समाचार से पूरे नगर में शोक छा गया। आप की अंतिम यात्रा आपके निवास से निकाली गई।अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में समाज जनों व स्नेहीजनों ने भाग लिया। श्री माहेश्वरी समाज देवास के पूर्व अध्यक्ष रहे ओम प्रकाश भूतड़ा व नगर निगम नगर निगम देवास में एल्डरमैन रहे दिनेश भूतड़ा के पिता थे। आप की अंतिम यात्रा में सांवलिया नाथ मंदिर पर आपको देवास जिला माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष कैलाशचंद्र डागा एवं महामंत्री प्रकाश मंत्री व पूर्व जिला अध्यक्ष मुरलीधरजी मानधन्या ने देवास जिला सभा की ओर से महेश पुष्प चक्र अर्पित किया।

समाजसेवी श्री सागरमल खटोड़

मोहना। तन-मन-धन से समाज की सेवा में समर्पित रहे समाजसेवी श्री माहेश्वरी सभा उज्जैन पूर्व उपाध्यक्ष, शाजापुर जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष मोहना निवासी श्री सागरमल खटोड़ का देहावसान गत 7 मई को हो गया। उनके गृहनगर मोहना में ही उनका अंतिम संस्कार किया गया।

श्रीमती कौशल्या माहेश्वरी

मुंबई। समाज की वरिष्ठ श्रीमती कौशल्यादेवी माहेश्वरी (हुरकट) धर्मपत्नी श्री राजाराम माहेश्वरी का देहावसान गत 27 फरवरी 2020 को हो गया। आप अपने पीछे पुत्र संजय व राहुल तथा पुत्री रेणुका लखोटिया आदि का भरा पूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं।

श्री भैरव लाल कोगटा

भीलवाड़ा। प्रोफेसर जगदीश प्रसाद, ओमप्रकाश, राजेंद्र कुमार व रामनारायण कोगटा के पिता श्री भैरवलाल कोगटा का 90 वर्ष की अवस्था में देवलोक गमन गत 3 मार्च को हो गया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

श्री कालूराम सोनी

बस्सी। समाज सदस्य लादूलाल, अनिलकुमार, सुनीलकुमार, ललितकुमार पिता श्री कालूराम सोनी का असामयिक स्वर्गवास 24 फरवरी को हो गया। श्री सोनी ने समाज एवम अनेक संस्थाओ को अपनी सेवायें प्रदान की।

दूसरा मौका सिर्फ कहानियाँ देती हैं, जिन्दगी नहीं

झुको उतना जितना सही हो. बेवजह झुकना दूसरों के अहम् को बढ़ावा देता है।

खुश रहें... खुश रखें...

निःस्वार्थ होना चाहिए भाईचारा

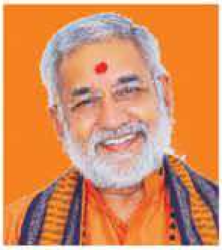

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

भाईचारा एक पवित्र दायित्व है। इसे निभाने के लिए नैतिकता की ताकत लगती है। विभीषण ने अपने जीवन में दो भाई देखे थे- एक अपना सगा भाई रावण और दूसरे लक्ष्मण व भरत के भाई श्रीराम। यहीं उन्हें भाईचारे का अंतर समझ में आ गया था। उन्होंने अपने भाई रावण को समझाते हुए कहा था कि वह देवी सीता श्रीराम को वापस लौटा दें। भाई की बात मानना तो दूर रावण ने लात मरकर उसे लंका से ही निकाल दिया। परंतु विभीषण ने (लात खाने पर भी) बार-बार उसके चरण ही पकड़े। आखिर में विभीषण ने श्रीराम की शरण ली।

श्रीराम ने शरणागत वत्सलता की रघुकुल रीत निभाई और विभीषण के सिर पर कृपा का हाथ रख दिया। श्रीराम के मित्र वानरराज सुग्रीव इस निर्णय से सहमत नहीं थे। उन्होंने संदेह जाहिर करते हुए कहा था- भेद हमार लेन सठ आवा, राखिअ बांधि मोहि अस भावा। हे रघुवीर, विभीषण पर विश्वास करना ठीक नहीं है। आखिर वह शत्रु का भाई है। संभव है हमारा भेद लेने आया हो इसलिए इसे बांधकर रखना उचित होगा। सग्रीव अपनी असहमति की स्पष्ट राय दे चुके थे। श्रीराम ने उनका भी मान रखने के लिए कहा था- सखा नीति तुम्ह नेकि बिचारी, मम पन सरनागत भयहारी। हे मित्र सुग्रीव, तुमने नीति तो अच्छी बताई है लेकिन मेरा प्रण है शरणागत के भय को दूर करने का।

इस प्रकार श्रीराम ने विभीषण को न सिर्फ स्वीकार किया बल्कि समुद्र से जल मंगाकर विभीषण से कहा था- जदपि सखा तब इच्छा नाही, मोर दरसु अमोघ जग माही। अस कहि राम तिलक तेहि सारा, सुमन बृष्टि नभ भई अपारा। हे सखा, यद्यपि तुम्हारी इच्छा नहीं है पर जग में मेरा दर्शन निष्फल नहीं जाता, ऐसा कहकर श्रीराम ने उनका राजतिलक कर दिया। श्रीराम ने बताया कि भाईचारा निःस्वार्थ होना चाहिए। निःस्वार्थ रहने का एक तरीका है जरा मुस्कराइए...।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल
सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है-
'जल है तो कल है'।
इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित
डॉ. विवेक चौरसिया
के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह
'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे
न सिर्फ भारतीय संस्कृति
बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने
स्वीकारी है
जल की महत्ता.

Rs. 150/-
डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का
अन्त नहीं बल्कि उन्हें
साकार करने का स्वर्णिम समय है.
बस इसके लिए जरूरी है
खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ...
इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी
की पुस्तक
"खूबसूरती से जीएँ
55 के बाद".

Rs. 120/-
डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -
- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?

aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है -
"ऐसा क्यों?" लेकिन इसका
उत्तर देगा कौन?
इसका उत्तर देगी गहन
अध्ययन से संजोई पुस्तक

Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

खाना-खजाना

दही के खट्टे-मीठे लड्डू

क्या आपने दही के लड्डू खाये है? जी हाँ, दही के भी लड्डू बनते हैं। दही के खट्टे मीठे लड्डू बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं। और इसे बनाना बहुत ही आसान है।

सामग्रीः- दही-2 कटोरी, चीनी पिसी हुए – 6-7 चम्मच, मिल्क पाउडर 1 कटोरी, इलायची पाउडर 1 चम्मच लाल, पीला रंग, गुलाब शरबत 1 चम्मच, गुलाब ऐसेंस 1/2 चम्मच, केसर ऐसेंस 1/2 चम्मच, केसर के धागे 2-4, काजू बादाम बूरा नारियल बूरा 1 कटोरी

विधिः- सबसे पहले दही को किसी पतले कपड़े में डालकर सारा पानी निकल देंगे। एक बाउल में दही ,मिल्क पाउडर, पिसी चीनी, इलायची पाउडर, 1/2 कटोरी नारियल बूरा,काजू बादाम का चूरा डालकर अच्छे से मिक्स करेंगे। इसके दो भाग करेंगे। एक भाग में गुलाब ऐसेंस, गुलाब शरबत या लाल रंग डालकर अच्छे से मिलायेगे। फिर छोटे-छोटे लड्डू बना लेंगें। इन लड्डू को नारियल बूरा पर लपेट लेगें। दूसरे भाग में पीला रंग या केसर और ऐसेंस डाल कर अच्छे से मिक्स करेगें। फिर छोटे-छोटे लड्डू बना लेंगें। इन लड्डू को नारियल बूरा पर लपेट लेगें। इन लड्डू को फ्रिज में रखकर 5-7 दिन तक आराम से खाईये।

पुनम राठी, नागपुर
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

गैर ज़िम्मेदारी रो दुष्परिणाम

खम्मा घणी सा हुक्म, आज आपा बात कर रिया हां.. तब्लीगी जमात री... हुक्म कोरोना वायरस संक्रमण री रोकथाम वास्ते लॉकडाउन रे बीच तब्लीगी जमात रा लोग बड़ी संख्या में निजामुदीन स्थित मरकज़ में एकत्रित था ...इणमें सैकड़ों लोग इण भीड़ में संक्रमित पाया गया और कई सौ सूं ज्यादा लोगा री मौत भी हुगी। तब्लीगी जमात सूं बड़ी संख्या में देश भर में कोरोना संक्रमण फेलियो है।

हुक्म तब्लीगी जमात री स्थापना 1927 में एक सुधारवादी धार्मिक आंदोलन रे तौर पर मोहम्मद इलियास कांधलवी ने की जिको इस्लाम री देवबंदी विचारधारा सूं प्रभावित हुने बणाई। हुक्म उर्दु में इस्तेमाल हुवण वाळो जमात शब्द रो मतलब किन्ही खास मकसद सूं इक्कठा हुवण वाळो समूह ने केहवे। तब्लीगी जमात विश्व रा देशों में कई आपरा केंद खोलियोड़ा है। भारत मे निज़ामुद्दीन मरकज़ है, याणो मकसद भारत समेत पूरी दुनियां में इस्लाम रो प्रचार-प्रसार करणों है।

कोरोना वायरस संक्रमण रे बचाव रे वास्ते प्रधानमंत्री जी री तरफ सूं घोषित लॉकडाउन रे समय में दिल्ली रे निज़ामुद्दीन इलाके में लॉकडाउन रो उल्लंघन कर एक कार्यक्रम में जिनमें करीब डेढ़-दो हज़ार लोग जमात में शामिल हुआ...इण डेढ़ दो हज़ार लोगा में चीन, यमन, बांग्लादेश, श्रीलंका, ईरान, इंडोनेशिया, अफगानिस्तान, सऊदी अरब, इंग्लैंड रा निवासी भी शामिल था। हुक्म ये ही लोग पुलिस री कार्यवाही सूं डर ने भारत भर रे हर राज्य में फैल गया ..जिन्ही वजह सूं इणमें संक्रमित लोगा सूं चपेट में आ ग्या और कई हज़ारो लोग मौत री चपेट में आ ग्या। हुक्म पूरे देश मे कोरोना वायरस फैलावण वाली तब्लीगी जमात री उल्टी गिनती शुरू हुगी है क्योंकि गृहमंत्री अमित शाह दिल्ली पुलिस रे क्राइम ब्रांच में एलान करवा दियो है कि आसमान जमीन सब एक करने सारा सबूत इकट्ठा कर डालों कोई ने भी नहीं बख्शियों जावेला... सबसूं ज्यादा तेज तलवार जमात रो मौलवी मौलाना साद रे गर्दन पर लटकियोड़ी है जो बहुत सारा अनैतिक कार्य किया, देश विदेश सूं आया जमाती ने पूरे देश मे भगा दिया। झारखंड बिहार सहित कई राज्यों में जमाती रा लोग फैल गया और इनो दुष्परिणाम पुरो देशवासी भुगत रिया है ... भारत सरकार फरार मौलाना साद व पूरा जमाती लोगो ने सख्त सूं सख्त सजा देवे.. ताकि भविष्य में देशवासी ने घोर समस्या रो सामनों नहीं करणो पड़े।

एक बात मैं और केवणी चाहूं हुक्म.. कि सरकार इण मामले में देर सु चेती। जमात रे कने ही पुलिस थानों हो, बठे पुलिस री भूमिका भी संदिग्ध ही नजर आयी। जनता-कर्फ्यू रे पछे भी डेढ़-दो लोग उठे इकट्ठा हुग्या और पुलिस ने खबर तक नहीं पड़ी आ बात समझण रे बाहर री है। या बात प्रशासन री ईमानदारी पर अंगुली उठावे हुक्म। आग लग्या पछे कुवो खोदण रे बजाय पैली व्यवस्था ठीक हूँ जावती तो देश ने यूँ भुगतनो नहीं पडतो। जमात ही नहीं अन्य कई जगह भी ऐड़ी वारदाता री रिपोर्ट आयी हुक्म। तिरुपति सूं चार सौ पंडा बारे आया, मुरैना में एक कथा पांडाल सु कई लोग बारे आया, वे महाराज रे इशारे पर पुलिस ने पत्थर बाज़ी भी की। एक गुरुद्वारा सूं दो सौ आदमी निकल्या। मध्यप्रदेश नई सरकार रे जश्न, शपथ में हज़ारों लोग इकट्ठा हुया। दिल्ली बस स्टैंड, बांद्रा रेलवे स्टेशन पर भी एडो ही हुयो। हुक्म गलती किनी हुई हो..गैर ज़िम्मेदारी किनी बर्दाश्त नहीं हुवै। हाल भी स्थिति नियंत्रण में है, अबे तो आपा सब भुगत भी लियो, और भुगत भी रिया हां ..अबे तो सबने ज़िम्मेदार बण ने कोरोना मुक्त भारत बणावण में आपरी भूमिका ईमानदारी सूं निभावणी चहिजै। जागो जणे ही सवेरो हुक्म।

स्वाति 'सरु' जैसलमेरिया

मुलाहिज़ा फ़रमाइये

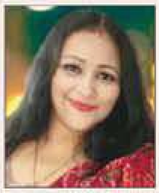

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- जीने का सबक सिखा रही है जिंदगी
  हमें हमारी हदें बता रही है जिंदगी।

- सारी उम्र वक्त का रोना रोते रहे
  आज आईना दिखा रही है जिंदगी।

- अदब से सज़दा करें इस वीराने का
  मौत से लड़ना सिखा रही है जिंदगी,

- एक बोतल शराब के लिए,
  कतार मे जिंदगी लेकर खडा हो गया,
  मौत का डर तो वहम था 'साहिब',
  आज नशा जिंदगी से बडा हो गया

- कितने चेहरों से उतर गए आज मुफलिसी के नक़ाब..
  कल जो चीख रहे थे रोटी को आज खरीद रहे हैं शराब..

- किसी को बांध के रखना फितरत नहीं हैं मेरी...
  मैं प्रेम का धागा हूँ मजबूरी की जंजीर नहीं...

- सब आ जाते हैं यूँ ही मेरी ख़ैरियत पूछने,
  अगर तुम आ जाओ तो यह नौबत ही न आए!

- उसकी याद आयी है सासो ज़ारा थम के चलो
  बड़ी आरज़ू है एक बात की एक मुलाक़ात की..

कार्टून कौतुक —— • (signature)

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिये बदलाव करने वाला होगा। विद्यार्थियों को अनुकूल परिणाम मिलेगा। कार्य व्यवसाय सामान्य रहेगा, विरोधियों से सावधान रहना होगा। वैवाहिक संबंध में आंशिक प्रतिकूलता की संभावना रहेगी। यात्रा में बाधा उत्पन्न होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। उसी अनुपात में व्यय भी होगा। सम्पत्ति से संबंधित कार्यों में रुकावट आयेगी। बुजुर्ग सदस्य के स्वास्थ्य के प्रति चिंता बनी रहेगी। भाई व परिवार से अनुकूलता रहेगी। धार्मिक यात्रा व धर्म के प्रति रुझान बढ़ेगा। संतान के पुराने रुके कार्य पूरे होंगे। परिश्रम करने से प्रत्येक कार्य की सफलता की संभावना बनी रहेगी।

वृषभ

यह माह आपको मानसिक तनाव दे सकता है, परंतु बाधा के पश्चात कार्य में सफलता मिल जायेगी। भागदौड़ अधिक करना पड़ेगी। आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। यात्रा के योग रहेंगे। पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। साझेदारी में कार्य सोच समझकर करें। धन लाभ के योग बने रहेंगे। विरोधी सक्रिय होंगे, परंतु सफल नहीं हो पाएंगे। किसी विषय को लेकर गहरी चिंता में रहेंगे। जिससे नींद नहीं आ पायेगी। रुके हुए धार्मिक एवं मांगलिक कार्य पूरे होंगे।

मिथुन

यह माह आपके लिये मिलाजुला प्रभावकारी रहेगा। किसी विशेष क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। पाचन तंत्र एवं मानसिक तनाव का सामना करना पड़ेगा। धैर्य एवं विवेक के साथ कार्य करें, सफलता सुनिश्चित रूप से मिल पायेगी। आर्थिक सम्पन्नता में वृद्धि होगी। कार्य रुकावट के साथ पूर्ण होंगे। वाहन सुख में वृद्धि, व्यय की अधिकता होगी। वाहन का सावधानी से उपयोग करे। विरोधी परास्त होंगे। नौकरी में महत्वपूर्ण बदलाव के योग रहेंगे। स्थान परिवर्तन की संभावना अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को कठिन मेहनत करना पड़ेगी। शुभ मांगलिक कार्य होंगे।

कर्क

यह माह आपके लिये आर्थिक दृष्टि से उत्तम रहेगा। स्वास्थ्य के संबंध में सावधानी बरतना आवश्यक रहेगा। विवाह संबंध तय होने के योग बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय एवं उत्तम रहेगा। अपने गुस्से पर नियंत्रण रखना आवश्यक रहेगा।नवीन कार्य व्यवसाय की प्रगति के योग रहेंगे। बच्चों की ओर से शुभ समाचार मिलेंगे। नौकरी, पद प्रतिष्ठा, पदोन्नति एवं मन चाहा स्थान परिर्वतन होने के योग प्रबल रहेंगे। भगवान के प्रति आस्था बढ़ेगी। बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा एवं आस्था भाव रहने से उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा।

सिंह

यह माह आपको विशेष खुशियां प्रदान करने वाला होगा। भूमि भवन एवं स्थायी संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में व्यवधान के साथ सफलता मिलेगी। नवीन व्यवसाय, कार्य प्रारंभ करेंगें। मन प्रसन्न रहेगा। शुभ कार्य, मांगलिक कार्य, मनोरंजन, भौतिक सुख-सुविधा तथा सुस्वाद व्यंजनों पर खर्च करेंगे एवं उसका आनंद उठाऐंगे। कार्यों में सफलता मिलने से उत्साह बना रहेगा। लंबी यात्रा एवं लाभकारी यात्रा के योग बनेगे। विरोधी परास्त होंगे। साझेदारी में परेशानी उठाना पड़ेगी।

कन्या

यह माह आपके लिये साहस बढ़ाने वाला होगा। कार्य व्यवसाय में चिंता रहेगी परंतु अपनी सुझबुझ से सफलता प्राप्त करने में सफल रहेंगे। धन की कमी का अहसास होगा किंतु आवश्यकता अनुसार पूर्ति हो जायेगी। नवीन कार्य प्रारंभ करेंगे। भूमि भवन एवं वाहनों से संबंधित कार्यों में सावधानी बरतें। शत्रु पर विजय प्राप्त होगी। दाम्पत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। बच्चों के कार्य पूर्ण होंगे। यात्रा होगी। बहुत दिनों से रुका कार्य पूर्ण होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

तुला

यह माह आपको अच्छी सफलता एवं आर्थिक सम्पन्नता प्रदान करने वाला होगा। कामकाज, कार्य-व्यवसाय, नौकरी में परिवर्तन के योग परिलक्षित होते हैं तथा परिश्रम से श्रेष्ठ सफलता मिलने के योग रहेंगे। दूर देश की यात्रा करेंगे। शुभ समाचार मिलेंगे। सम्पत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। संतान के कार्यों पर व्यय होगा किंतु सफलता मिलने के योग रहेंगे। नवीन कार्य व्यवसाय प्रारंभ करने के योग रहेंगे। धर्म के प्रति रुझान बढ़ेगा। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे।शुभ समाचार मिलेंगे। रुका कार्य पूर्ण होगा। घर में खुशी का वातावरण निर्मित होगा।

वृश्चिक

यह माह आपके लिये आर्थिक रूप से विशेष लाभदायक रहेगा। नवीन नौकरी, नवीन कार्य व्यवसाय प्रारंभ होंगे। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में मन वांछित सफलता मिलेगी। रूके कार्यों में सफलता मिलेगी। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति, मित्रों से सहयोग मिलेगा। रिश्तेदारों से संबंध प्रगाढ़ होंगे। धैर्य, विवेक का उपयोग करने से प्रत्येक कार्यों में सफलता मिल जायेगी। रुके हुए मांगलिक, धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। भौतिक सुख-सुविधा, मनोरंजन आदि पर खर्च करेंगे। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

धनु

यह माह आपके लिये सुखद परिणाम देने वाला होगा। परिचय का क्षेत्र बढ़ेगा एवं उससे आर्थिक लाभ तथा अपने पुराने कार्यों में सफलता मिलेगी। नवीन कार्य व्यवसाय व नवीन नौकरी के योग रहेंगे। यात्रा लाभकारी होगी। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूल परिणाम आयेंगे। उदासीनता को छोड़े, नहीं तो परिणाम विपरीत आ सकते हैं। साझेदारी में कार्य करना हानिकारक रहेगा। आर्थिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। आर्थिक सम्पन्नता एवं पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। स्वास्थ्य के मामले में सावधानी रखना आवश्यक रहेगा। शुभ समाचार मिलेगा।

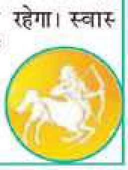

मकर

यह माह आपके लिये शुभ समाचार प्रदान करने वाला होगा। कार्यों में रुकावट के बाद सफलता मिलेगी। साझेदारी के कार्य, जमानत देना या अंधविश्वास करना हानिकारक हो सकता है। विवाह संबंध तय होगा। पढ़ने वालों को लक्ष्य की प्राप्ति होगी। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। आय के साधनों की प्राप्ति होगी। ईश्वर की आराधना से कई रुके कार्यों में सफलता मिलेगी। स्थायी संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। कर्म के माध्यम से प्रगति होगी।

कुम्भ

यह माह आपके लिये नवीन सफलता प्रदान करने वाला होगा। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति, नौकरी में पद - प्रतिष्ठा मिलेगी। शुभ समाचार प्राप्त होंगें, लंबी यात्रा के योग रहेंगे। विवाद से बचें एवं ईमानदारी से कार्य करेंगे तो अधिक सफलता मिलेगी। मित्रों एवं अपनो से सहयोग मिलेगा। परिश्रम से कठिन से कठिन कार्यों में सफलता मिल जायेगी। नवीन संपर्क में सावधानी बरतें। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। मनोरंजन, भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। अचानक धनलाभ के योग रहेंगे। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

मीन

यह माह आपके लिये यश एवं सम्मान प्रदान करने वाला होगा। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति, नौकरी मिलने के योग, पदोन्नति के योग एवं मूलभूत परिवर्तन की संभावना रहेगी। आर्थिक उन्नति होगी। घर में हर्षोल्लास का वातावरण निर्मित होगा। भौतिक सुख सुविधा, मनोरंजन, यात्रा, दिखावा आदि पर सामान्य से अधिक खर्च करेंगे। शुभसमाचार मिलेंगे, दान-पुण्य, धार्मिक कार्य, उत्सव आदि में भाग लेंगे। आर्थिक समृद्धि प्राप्त होगी। स्थायी सम्पत्ति का निर्माण होगा। यात्रा के योग रहेंगे।

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा
सुवर्ण से समृद्ध
स्वामला®
हर मौसम में संपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक
सेहत का खजाना, दो* चम्मच रोजाना!
रोगप्रतिकार क्षमता बढ़ाने में मदद करें
शरीर में चुस्ती, स्फूर्ति एवं उर्जा लाए
शरीर एवं मन का स्वास्थ्य बनाए रखें
रोग पुनरुत्पत्ति रोकने में मदद करें
बढ़ती उम्र के बच्चों में पोषण मूल्यों की कमी को दूर करें
स्वामला, समय के कसौटी पर खरा उतरा एक ऐसा कल्प है, जो चुनिंदा आवलें, गाय का शुद्ध घी, शुद्ध शहद, सुवर्ण भस्म, रौप्य भस्म व पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज से समृद्ध एक परिपूर्ण आयुर्वेद रसायन होने से शरीर को आवश्यक पोषण और बल देता है।
६० वर्षों से आयुर्वेद विशेषज्ञों का विश्वसनीय सुवर्ण समृद्ध च्यवनप्राश
*मात्रा
बड़ों के लिए - एक बड़ा चम्मच (१५ ग्राम) दिन में दो बार
बच्चों के लिए - एक छोटा चम्मच (५ ग्राम) दिन में दो बार
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
शास्त्रोक्त • मानकीकृत • सुरक्षित • उत्तम गुणवत्ता • १४५+ वर्षोंकी आयुर्वेद परंपरा
www.sdlindia.com | For Health & Trade Enquiries Tollfree: 1800 22 9874
F20SWDad11x8.5H303

ASHOK SOMANY

SOMANY IMPEX
Stone that stuns

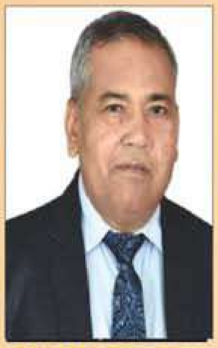

ASHOK SOMANY

M/s. ASHOK SOMANY & Co.

Mining of Natural Stone & TIles

Khol House, Circular Road, Rewari - 123401 (Hry) Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel. : 01274-225385, Mob. : 981245677, Res. : 01274-260088, 260048
Email : accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

AAKASH SOMANY

SOMANY NATURAL STONES (I) Pvt. Ltd.

All Kind of Natural Stone & Tiles

Plot No.5, Delhi Rewari Road, Rewari-12340 1 (Hry)
Mobile : 9812345677, 9812028488
Email : mines@sonanyimpex.ind.in I somanyimpex@gmail.com

SOMANY IMPEX

Exporter of All Kind of Natural Stoen &Tiles

Khol House, Circular Road, Rewari-123401 (Hry), Unit-Khol Road, Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)
Tel.: 01274-225385, Mob. : 9812028488, 9215689102
Email: accounts@sonanyimpex.ind.in
factory@somanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

DEVVRAT OVERSEASE

All Kind of Natural Stone & Tiles

Vil. Mehtawas, Mehtawas Road (Raj), Mobile : 9812345677, 9812025385
Email: mines@sonanyimpex.ind.in I somanyimpex@gmail.com

SOMANY (P.G) INSTITUTE OF TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Running B.Tech & M.Techinfidderent Discilines of Engineering

Near Delhi-Jaipur Highway No. 8, Beside 3 km, From Rewari City, Rewari (Hry) Tel. 01274-261239, 261781
Fax: 01274-261239, Mob. 9541069998
Email : Info@sitmrewari.com I admin@sitmrewari.com I accounts@sitmrewari.com

Reaching 7500 villages, 9 million people.
Over 100 million Polio vaccinations.
5,000 medical camps / 20 hospitals:

1 million patients treated. 100,000 persons tested on 32 health parameters through Health Cubed. Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant. More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India.

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students. Mid-day meals provided to 74,000 children. Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland. Fostering the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas.

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets. 45,000 women empowered through 4500 SHGs. 200,000 farmers on board our agro-based training projects.

MODEL VILLAGES

We have adopted 300 villages for transformation into model villages. Of these over 90 villages have already reached the model village stature. And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spear-headed by Mrs. Rajashree Birla.

Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date -02 May, 2020

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/Srimaheshwaritimesmagazine
http://srimaheshwaritimes.blogspot.in